प्रिय पैग़म्बर ﷺ की संगत में

40 सभाएं

आप की जीवनी – शिष्टाचार – स्वभाव

लेख

डा० आदिल बिन अली अश-शद्दी

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा,

रियाज़, सऊदी अरब

Published

by

Global Center for Introducing the Messenger
Muslim World League
Riyadh

www.mercyprophet.com

All rights reserved

We are always striving to improve our products and your opinions are important to us. If you have a comment or suggestion about this book, please email us at:

info@mercyprophet.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

प्राक्कथन

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिस ने मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को शिक्षक, मुरब्बी, निर्देशक और उपदेशक बनाकर भेज कर हमें सम्मानित किया, जैसाकि उस का फर्मान है:

"अल्लाह तआला नें मोमिनों पर बड़ा उपकार किया है कि उन्हीं में से उनके मध्य एक पैग़म्बर भेजा जो उन पर अल्लाह तआला की आयतें तिलावत करता, उन्हें पाक करता और उन्हें किताब और हिक्मत की शिक्षा देता है, अगरचे वो इस से पहले स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में थे।" (सूरत आल-इम्रान ३:१६४)

तथा अल्लाह की कृपा और शान्ति अवतरित हो सब से कुलीन और पवित्र सृष्टि, कार्यकर्ताओं के आदर्श, ईश्भय रखने वालों के नायक -मुत्तिक़ियों के इमाम- संदेश्वाहकों

एंव ईश्दूतों के समाप्त कर्ता और सर्व संसार के लिए अल्लाह की दया हमारे पैग़म्बर मुहम्मद पर, जिन्हें अल्लाह ने -अपने संदेश के प्रसार के लिए- चयन कर लिया और चुन लिया है। (जैसाकि अल्लाह का फर्मान है:)

''और तुम्हारा पालनहार जो कुछ चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है चयन कर लेता है।'' (सूरतुल क़ससः६८)

(तथा फरमायाः)

''अल्लाह तआला फरिश्तों में से अपने कुछ संदेशवाहक चयन कर लेता है, और मनुष्यों में से भी।'' (सूरतुल-हज्जः७५)

चुनांचे आप को **''गवाही देने वाला, शुभ सूचना देने वाला, डराने वाला, अल्लाह के आदेश से उसकी ओर लोगों को बुलाने वाला और प्रकाशमान चिराग बनाकर''** भेजा है। तथा आप के मार्ग पर चलने वाले के लिए सम्मान, सौभाग्य और गर्व, तथा आपके आदेश का विरोध करने वाले के लिए अपमान, दुर्भाग्य, और रूसवाई लिख दिया है। आप पर मेरे पालनहार की कृपा और शान्ति

अवतरित हो जब तक सदाचारी उस को जपते रहें और रात दिन का आना जाना जारी रहे।

ज्ञात होना चाहिए कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभा से अधिक प्रतिष्ठा वाली कोई सभा नहीं, यद्यपि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को इस संसार में आप के साथ उठने-बैठने और आप से शिक्षा प्राप्त करने का प्रतिष्ठा प्राप्त हुआ, किन्तु अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से हमारे लिए आप की जीवनी, आपकी सुन्नत, आप की पद्धति, आदर्श और व्यक्तित्व के अध्ययन और पठन-पाठन का अवसर प्रदान किया है, जो कि परिपूर्ण दया, उदारता, कुलीनता, और शिष्ट-आचरण से विशिष्ठ थी।

एक दीर्घ समय से मेरे मन में संछिप्त और आसान सभाएं लिखने का विचार था जो मुसलमान के लिए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी, तरीक़ा और आप के जीवन के आदर्शनीय पहलुओं को निकट कर दें ताकि अल्लाह के इस कथन पर अमल करने में उस के सहायक बनें :

‘‘निःसन्देह तुम्हारे लिए पैग़म्बर के जीवन में सर्व श्रेष्ठ आदर्श है, हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और

क़ियामत के दिन की आशा रखता है और अल्लाह को अधिक याद करता है।'' (सूरतुल-अहज़ाबः२१)

तथा अल्लाह तआला का यह कथनः

''पैग़म्बर जो कुछ तुम्हें दें उसे ले लो, और जिस से रोकें उस से रूक जाओ।'' (सूरतुल हश्रः७)

मैं ने इन सभाओं को हाशियों -पन्ने के नीचे की टीकाओं- के द्वारा बोझल करने से बचाव किया है, क्योंकि इस से पाठक अपने कुछ उद्देश्य से वंचित रह जाते हैं।

मैं हर उस व्यक्ति से जो इन सभाओं से अवगत हो, यह आशा करता हूं कि वह अपने इस भाई को अपनी प्रार्थना में न भूले, और किसी टिप्पणी और टीका के लिए इस ईमेल पर संपर्क करेः

adelalshddy@hotmail.com

अल्लाह तआला से हमारी प्रार्थना है कि हम सभी को अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक़ूक़ -अधिकारों- को निभाने की तौफ़ीक़ दे, हमें आप की सुन्नत की सेवा करने वालों में से बनाए, और पैग़म्बर के अनुसरण के कारण लोक और प्रलोक में हमारे पद और

प्रतिष्ठा में वृद्धि करे। तथा अल्लाह से मेरी यह भी प्रार्थना है कि स्वर्ग में हम सब को अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत प्रदान करे और हमारे कार्यों को अपने करीम चेहरे के लिए विशिष्ठ करे।

हमारे पैग़म्बर मुहम्मद पर, तथा आप के परिवार एंव सन्तान और समस्त साथियों पर अल्लाह की कृपा और शान्ति अवतरित हो।

डा० आदिल बिन अली अश्शद्दी

संयुक्त अध्यापक

व्याख्या एंव कुर्आन विज्ञान

शाह सऊद विश्वविद्यालय

रियाज़

पहली सभा

मुस्तफा ﷺ के हुकूक़ –1

अल्लाह तआला ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईश्दूत बनाकर भेज कर हमें सम्मानित किया है और आप की पैग़म्बरी का सूर्य उदय कर के हमारे ऊपर बड़ा उपकार किया है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

“अल्लाह तआला नें मोमिनों पर बड़ा उपकार किया है कि उन्हीं में से उनके मध्य एक पैग़म्बर भेजा जो उन पर अल्लाह तआला की आयतें तिलावत करता, उन्हें पाक करता और उन्हें किताब और हिक्मत की शिक्षा देता है, अगरचे वो इस से पहले स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में थे।” (सूरत आल-इम्रानः१६४)

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमारे ऊपर बहुत सारे अधिकार हैं जिन को निभाना, उनकी सुरक्षा करना, तथा उनको नष्ट करने अथवा उन के बारे में लापरवाही करने से बचाव करना हमारे लिए अति योग्य है। उन्हीं अधिकारों में से कुछ निम्नलिखित हैं:

प्रथम : आप ﷺ पर विश्वास रखना

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सर्व प्रथम अधिकार (हक़) आप पर ईमान लाना (विश्वास रखना) और आप के ईश्दूतत्व की पुष्टि करना है। अतः जो व्यक्ति अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान न लाए और यह विश्वास न रखे कि आप समस्त नबियों और रसूलों के मुद्रिका (अर्थात अन्तिम ईश्दूत और संदेश्वाहक) हैं तो वह काफिर (नास्तिक) है, यद्यपि वह आप से पूर्व सभी ईश्दूतों पर विश्वास रखता हो।

क़ुर्आन करीम ऐसी आयतों से भरा पड़ा है जो अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर विश्वास रखने और आप की पैग़म्बरी में किसी प्रकार का सन्देह न करने का आदेश देती हैं। उदाहरण स्वरूप अल्लाह तआला का फर्मान है:

‘‘अतः विश्वास रखो अल्लाह और उसके ईश्दूत पर और उस प्रकाश पर जो हम ने उतारा है।’’ (सूरतुत-तग़ाबुनः८)

तथा फरमायाः

“निःसन्देह मोमिन वो लोग हैं जो अल्लाह और उस के ईश्दूत पर ईमान लाएं, फिर सन्देह और शंका में न पड़ें।” (सूरतुल-हुजुरातः१५)

अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया है कि अल्लाह और उस के पैग़म्बर को नकारना तबाही व बर्बादी और कष्टदायक प्रकोप का कारण है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

“यह इस बात की सज़ा है कि उन्हों ने अल्लाह की और उस के पैग़म्बर की मुखालफत -विरोध- की, और जो अल्लाह की और उस के पैग़म्बर की मुखालफत करता है तो निःसन्देह अल्लाह अताला उसे कड़ी सज़ा देने वाला है।” (सूरतुल अन्फालः१३)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“उस ज़ात (अस्तित्व) की सौगन्ध जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्राण है! इस उम्मत का जो भी व्यक्ति मेरे विषय में सुन ले, चाहे यहूदी हो या ईसाई, फिर जिस धर्म (शास्त्र) के साथ मैं भेजा गया हूँ उस पर ईमान लाये बिना मर जाए तो वह नरकवासी होगा।” (मुस्लिम)

द्वितीय : आप ﷺ की पैरवी (अनुसरण) करना

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करना ही आप पर विश्वास रखने का वास्तविक प्रमाण है। जो आदमी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान रखने का दावा करे, फिर वह आप की कोई बात न माने, आप ने जिस हराम काम से रोका है उस से न रूके और आप की सुन्नतों में से किसी सुन्नत की पैरवी न करे तो वह अपने दावा में झूठा है। क्योंकि ईमान उस चीज़ का नाम है जो दिल में बैठ जाए (दिल में उतर जाए) और कार्यों से उस की पुष्टि हो।

अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया है कि उसकी रह्मत और कृपा केवल पैरवी और ताबेदारी करने वालों को प्राप्त होती है। अल्लाह तआला का फर्मान हैः

''मेरी रहमत -दया- प्रत्येक चीज़ को सम्मिलित है। तो वह रह्मत उन लोगों के लिए अवश्य लिखूं गा जो अल्लाह से डरते हैं और ज़कात -अनिवार्य धार्मिक दान- देते हैं और जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं जो लोग अनपढ़ पैग़म्बर की पैरवी करते हैं।'' (सूरतुल आराफः १५६-१५७)

इसी प्रकार अल्लाह तआला ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े से विमुखता प्रकट करने वालों और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश का विरोध करने वालों को कष्टदायक यातना की धमकी दी है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

“सुनो! जो लोग पैग़म्बर के आदेश का अनुपालन करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि उन पर कोई भयंकर आफत न आ पड़े या उन्हें कष्ट दायक प्रकोप न घेर ले।” (सूरतुन-नूर : ६३)

अल्लाह तआला ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निर्णय को स्वीकार करने और उस पर प्रफुल्ल होने का आदेश दिया है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

“(हे मुहम्मद) सौगन्ध है आपके रब (पालनहार) की! ये मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि आपस के समस्त विवाद (मतभेद) में आपको न्याय कर्ता न मान लें, फिर जो न्याय आप उन में कर दें उस से अपने हृदय में किसी प्रकार की तंगी और अप्रसन्नता न अनुभव करें बल्कि सम्पूर्ण रूप से उसको स्वीकार कर लें।” (सूरतुन-निसा४:६५)

तीसरा : आप ﷺ से महब्बत (प्रेम) करना :

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आप की उम्मत पर हुक़ूक़ में से यह भी है कि आप से सर्व अधिक और सब से सम्पूर्ण महब्बत की जाए। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"तुम में से काई आदमी उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के निकट उस की औलाद, उसके माँ-बाप और समस्त लोगों से अधिक प्रिय न हो जाऊँ।" (बुखारी एंव मुस्लिम)

अतः जो भी व्यक्ति अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत नहीं करता है वह मोमिन नहीं है, यद्यपि वह मुसलमानों का नाम रखे और उन के बीच जीवन यापन करे।

सब से महान महब्बत यह है कि मोमिन अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी जान से महब्बत करने से भी अधिक महब्बत करे। क्योंकि उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दिन अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी जान के सिवाय आप मुझे हर चीज़ से अधिक प्रिय हैं। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ने फरमायः **“नहीं, उस हस्ती की क़सम! जिस के हाथ में मेरी जान है यहाँ तक कि मैं तुम्हारे निकट तुम्हारी जान से भी अधिक प्रिय हो जाऊँ।”** उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः (यदि ऐसी बात है तो) अब आप –अल्लाह की क़सम– मुझे मेरी जान से भी अधिक प्यारे हैं। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **“ऐ उमर अब (बात बनी) ।”** (बुख़ारी)

चौथा : आप ﷺ का सहयोग करना

आप के जीवन एवं मृत्यु के पश्चात यह सब से महत्व पूर्ण अधिकार में से है। आप के जीवन में पैग़म्बर के सहाबा (साथियों) ने इस कर्तव्य को उत्तम ढंग से निभाया।

जहाँ तक आप की मृत्यु के पश्चात की बात है तो आप की सुन्नत की प्रतिरक्षा और उसका दिफा किया जाए गा यदि कोई ताना करने वाले उसकी भर्त्सना करते, जाहिल लोग उस में परिवर्तन करते और मिथ्यावादी उस में झूठी बातें गढ़ कर जोड़ते हैं।

इसी प्रकार यदि कोई आप के व्यक्तित्व का अपमान करता या उस का प्रहास करता, हंसी उड़ाता या आप को

ऐसे गुण से विशिष्ट करता है जो आप के सम्मानीय पद के योग्य नहीं है तो उस का प्रतिरोध किया जाए गा।

इस युग में इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भर्त्सना करने वाले अभियानों की अधिकता हो गई है। अतः पूरी उम्मत पर यह अनिवार्य हो गया है कि उस के पास जो भी शक्ति के साधन, उपाय और दबाव डालने के यन्त्र हैं, उनके द्वारा अपने पैग़म्बर का दिफा और प्रतिरक्षा करे, यहाँ तक कि यह लोग अपने झूठ, मिथ्यारोप से बाज़ आ जाएं।

दूसरी सभा

मुस्तफा ﷺ के हुकूक़ –2

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मत पर हुकूक़ के विषय में बात अभी चल रही है:

पाँचवा : आप ﷺ की दावत को फैलाना

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफादारी में से यह भी है कि हम संसार के चारों कोने में इस्लाम को फैलाएं और आप की दावत का प्रसार करें। क्योंकि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है :

''मेरी ओर से प्रसार करो चाहे एक आयत ही सही।'' (बुख़ारी)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

''यदि अल्लाह तआला आप के कारण एक आदमी को मार्गदर्शन प्रदान कर दे तो यह आप के लिए लाल रंग के ऊँटों से श्रेष्ठ है।'' (बुख़ारी एंव मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूचना दी है कि आप :

"प्रलोक के दिन तुम्हारी अधिकता के कारण अन्य उम्मतों पर गर्व करें गे।" (अहमद, असहाबुस्सुनन)

और उम्मत की अधिकता के कारणों में से यह भी है कि वह अल्लाह की ओर लोगों को आमन्त्रण दे और लोग इस्लाम में प्रवेश करें। तथा अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया है कि लोगों को उसकी ओर बुलाना पैग़म्बरों और उनकी पैरवी करने वालों का काम और मिशन है। अल्लाह तआला ने फरमायाः

"आप कह दीजिए मेरा मार्ग यही है, मैं और मेरे मानने वाले पूरे विश्वास और भरोसे के साथ अल्लाह की ओर बुला रहे हैं।" (सूरत युसूफ :१०८)

अतः उम्मत पर अनिवार्य है कि वह अपने उस मिशन को दृढ़ता पूर्वक निभाए जिस के लिए अल्लाह तआला ने उसे निकाला है, और वह है अल्लाह के धर्म की ओर लोगों को बुलाना और उसका प्रचार-प्रसार करना, भलाई का ओदश करना और बुराई से रोकना। जैसा कि अल्लाह तआला का फर्मान हैः

"तुम सर्व श्रेष्ठ उम्मत हो जिसे अल्लाह तआला ने लोगों के लिए निकाला है, तुम भलाई (नेकी) का आदेश करते

हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह तआला पर विश्वास रखते हो।'' (सूरत आल-इम्रान३ :११०)

छठा : आप ﷺ का आप के जीवन तथा मृत्यु पश्चात सम्मान करना :

यह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अधिकारों में से है, जिस के विषय में बहुत से लोग कोताही के शिकार हैं। अल्लाह तआला का फर्मान है:

''निःसन्देह हम ने आप को गवाही देने वाला और शुभ सूचना देने वाला तथा डराने वाला बनाकर भेजा है।'' (सुरतुल फत्ह :८-६)

इब्ने सअ्दी फरमाते हैं: ''अर्थात तुम पैग़म्बर की सहायता एंव सहयोग करो, आप की इ़ज़्ज़त एंव आदर करो, आप का सम्मान करो, आप की ताज़ीम करो और आप के हुक़ूक़ को निभाओ, जिस प्रकार कि तुम्हारी गर्दनों में आप का महान उपकार और एहसान है।''

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा (साथी) रज़ियल्लाहु अन्हुम आप का बहुत ही आदर एवं सम्मान और ताज़ीम करते थे। अगर आप बात करते थे तो वो लोग अपने सिर नीचे कर लेते थे ऐसा लगता मानों उन

के सिरों पर चिड़ियाँ बैठी हों। जब अल्लाह तआला का यह फर्मान उतराः

"ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ से ऊंची न करो और न उनसे ऊंची स्वर में बात करो जैसे आपस में एक दूसरे से करते हो, कहीं (ऐसा न हो कि) तुम्हारे आमाल नष्ट हो जाएं और तुम्हें पता भी न हो।"
(सुरतुल हुजुरात :२)

तो अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु नें कहा : **अल्लाह की क़सम! इस के बाद मैं आप से सरगोशी करने वालों के समान ही बात करूँ गा।**

जहाँ तक आप की मृत्यु के पश्चात आप के आदर एवं सम्मान का संबन्ध है तो वह आप की सुन्नतों की पैरवी कर के, आप के आदेश का सम्मान कर के, आप के निर्णय को स्वीकार करके, आप की बात के साथ सभ्यता और शिष्टाचार के साथ पेश आ कर और किसी के विचार या मत के कारण आप की हदीस का विरोध न कर के किया जाए गा। इमाम शाफेई रहिमहुल्लाह फरमाते हैं : **मुसलमानों की इस बात पर सर्व सहमति है कि जिस व्यक्ति के लिए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम**

की सुन्नत स्पष्ट हो गई तो उस के लिए किसी के कथन के कारण उस को छोड़ देना हलाल नहीं है।

सातवाँ : आप ﷺ का नाम आने पर आप पर दरूद भेजना :

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजने का आदेश दिया है। चुनांचे फरमायाः

"निःसन्देह अल्लाह तआला और उस के फरिश्ते पैग़म्बर पर दरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो तुम भी आप पर दरूद और सलाम भेजते रहा करो।" (सूरतुल अहज़ाबः५६)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"उस आदमी की नाक मिट्टी में सने जिस के पास मेरा चर्चा हो फिर वह मेरे ऊपर दरूद न भेज।" (मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"क़ियामत के दिन मुझ से सब से निकट वह आदमी होगा, जो मुझ पर सब से अधिक दरूद भेजने वाला हो गा।" (त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है और अलबानी ने हसन कहा है)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **"बखील -कन्जूस- वह आदमी है जिस के पास मेरा चर्चा हो और वह मेरे ऊपर दरूद न भेजे।"** (अहमद और त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

यह जफा और गुस्ताखी है कि मुसलमान पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चर्चा सुने, फिर आप पर दरूद भेजने में बखीली और कन्जूसी से काम ले। इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने अपनी किताब **'जलाउल अफ्हाम फिस्सलाति वस्सलामि अला ख़ैरिल अनाम'** में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम पर दरूद भेजने के बहुत सारे फायदे उल्लेख किए हैं। जिसे वहां देखा जा सकता है।

आठवाँ : आप ﷺ के दोस्तों से दोस्ती रखना और आप के दुश्मनों से दुश्मनी रखना :

अल्लाह तआला का फर्मान है :

"आप अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखने वालों को ऐसा नहीं पाएं गे कि वह अल्लाह और उसके पैग़म्बर से दुश्मनी रखने वालों से दोस्ती रखते हों, चाहे वह उनके बाप, या उनके बेटे, या उनके भाई, या कुंबे-

क़बीले वाले ही क्यों न हों, यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह तआला ने ईमान को लिख दिया है और जिनका पक्ष अपनी रूह से किया है।" (सूरतुल मुजादिला:२२)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दोस्ती -वफादारी- में से यह भी है कि : आप के सहाबा से दोस्ती, वफादारी, महब्बत और सद्व्यवहार किया जाए, उनके अधिकार को पहचाना जाए, उन की प्रशंसा की जाए, उनका अनुसरण किया जाए, उनके लिए इस्तिग़फार किया जाए, उन के बीच होने वाले मतभेदों के बारे में ज़ुबान बन्द रखी जाए। जो लोग उन से दुश्मनी रखते हैं, या उन्हें गाली देते हैं, या उन में से किसी की निन्दा करने वाले से दुश्मनी रखी जाए। इसी प्रकार आप के आले-बैत (घराने वालों) से महब्बत और दोस्ती रखना और उनकी ओर से दिफाअ् करना और उनके बारें में ग़ुलू न करना।

इसी में से अहले सुन्नत के उलमा (विद्वानों) से महब्बत, दोस्ती और वफादारी करना और उनकी बुराई करने और उनकी इ़ज़्ज़त व आबरू के बारे में ज़ुबान खोलने से बचाव करना भी है।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वफादारी में से यह भी है कि आप के दुश्मनों कुफ्फार एंव मुनाफिक़ीन तथा इनके अतिरिक्त अन्य बिद्अती और पथ-भ्रष्ट लोगों से दुश्मनी रखी जाए।

एक खाहिश परस्त पथ भ्रष्ट आदमी ने अय्यूब सख्तियानी से कहा : मैं आप से एक शब्द के बारे में पूछता हूँ? तो उन्हों ने उस से मुँह फेर लिया और अपनी अंगुली से संकेत कर रहे थेः आधा शब्द भी नहीं; पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का सम्मान करते हुए और आप के दुश्मनों से दुश्मनी रखते हुए।

तीसरी सभा

रमज़ान में नबी ﷺ का व्यवहार –1

इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने फरमाया :

रमज़ान में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यवहार सब से संपूर्ण, सब से अधिक उद्देश्य की पूर्ति करने वाला और नफ्स पर सब से अधिक सरल था।

इसकी अनिवार्यता २ हिज्री में हुई। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफात से पूर्व ९ बार रमज़ान के रोज़े रखे।

जब शुरू में इस की अनिवार्यता हुई तो इस बात की छूट थी कि यदि कोई चाहे तो रोज़ा रखे या हर दिन के बदले एक मिसकीन को खाना खिलाए। फिर इस छूट को अनिवार्य रूप से रोज़ा रखने से बदल दिया गया।

किन्तु बूढ़ा आदमी या औरत जो रोज़ा रखने की शक्ति न रखते हों उनके लिए यह छूट दिया गया कि वह रोज़ा छोड़ दें और हर दिन के बदले एक मिसकीन को खाना खिलाएं।

बीमार और यात्री के लिए यह छूट दिया गया कि वह रोज़ा छोड़ दें और तत्वपश्चात उनकी क़ज़ा (पूर्ति) करें। यही हुक्म गर्भवती और दूध पिलाने वाली महिला का भी है यदि उन्हें अपने ऊपर भय हो। यदि उन्हें अपने बच्चों पर भय हो, तो छूटे हुए रोज़ों की कज़ा करने के साथ-साथ हर दिन के बदले एक मिसकीन को खाना भी खिलाएं गी। क्यों कि उनका रोज़ा छोड़ना किसी बीमारी के भय से नहीं था, बल्कि उन्हों ने स्वास्थ्य की हालत में रोज़ा छोड़ा है। इसलिए मिसकीन को खाना खिला कर उसकी पूर्ति की जाए गी, जैसे कि शुरू इस्लाम में स्वस्थ आदमी के रोज़े छोड़न का आदेश था।

अधिक से अधिक उपासना करना:

रमज़ान के महीने में आप ﷺ का तरीक़ा अधिक से अधिक अनेक प्रकार की उपासनाएं करना था। चुनांचे जिब्रील अलैहिस्सलाम रमज़ान में आप ﷺ को क़ुर्आन का दौर करवाते थे। और जब आप जिब्रील से मिलते थे तो तेज़ हवा से भी अधिक भलाई के कामों में सखावत करने वाले हो जाते थे। जबकि आप लोगों में सब से अधिक दानशील थे। और सब से अधिक दान शील आप रमज़ान में होते थे; उसमें अधिक से अधिक ख़ैरात करते,

लोगों के साथ एहसान करते, क़ुर्आन की तिलावत करते, नमाज़ पढ़ते, ज़िक्र व अज़्कार करते और एतिकाफ करते थे।

आप विशेष रूप से रमज़ान में इस प्रकार इबादत करते थे जो अन्य महीनो में नहीं करते थे। यहाँ तक कि आप इस में कभी-कभार लगातार रोज़े रखते थे ताकि इस से आप रात और दिन की कुछ घड़ियों को इबादत के लिए बचा सकें।

जबकि आप अपने साथियों को लगातार रोज़ा रखने से रोकते थे। इस पर लोग आप से कहतेः आप तो लगातार रोज़ा रखते हैं। तो आप उत्तर देते : **“मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ, मैं इस हाल में रात गुज़ारता हूँ।”** और एक रिवायत के शब्द यह हैं कि **“मै अपने रब के पास होता हूँ वह मुझे खिलाता और पिलाता है।”** (बुखारी एंव मुस्लिम)

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत पर दया करते हुए लगातार रोज़ा रखने से रोका है, और सेहरी के समय तक इसकी अनुमति दी है।

सहीह बुखारी में अबू सईद खुद्री रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

को फरमाते हुए सुना : **“तुम लगातार रोज़े न रखो, तुम में से यदि कोई लगातार रोज़ा रखना चाहे तो वह सेहरी के समय तक ऐसा कर सकता है।”**

यह मोतदिल तरीन विसाल –लगातार रोज़ा रखना– है और रोज़े दार के लिए सब से आसान भी है। वास्तव में यह रात के भोजन के समान है, किन्तु इसे विलम्ब कर दिया गया है। रोज़े दार के लिए दिन और रात में एक आहार है, यदि उस ने सेहरी के समय उसे खाया है तो समझो उस ने रात के पहले हिस्से से उसे उसके अन्तिम हिस्से में मुन्तक़िल कर दिया।”

रमज़ान के महीनें के सबूत में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहिं व सल्लम का तरीक़ा :

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा था कि स्पष्ट रूप से चांद देख कर, या एक आदमी के चांद देखने की गवाही मिल जाने पर ही रोज़े का आरम्भ करते थे। जैसाकि आप ने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शहादत पर रोज़ा रखा, तथा एक बार एक दीहाती की शहादत पर रोज़ा रखा। आप ने इन दोनों की सूचना पर विश्वास और भरोसा किया, उन्हें शहादत का शब्द कहने के लिए नहीं कहा। अगर यह सूचना देना है तो

आप ने रमज़ान में एक आदमी की सूचना पर इकतिफा -बस- किया है, और अगर यह शहादत है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गवाही देने वालों को शहादत के शब्द को कहने का मुकल्लफ नहीं किया। अगर आप चांद नहीं देखते और न ही उसके देखे जाने की कोई शहादत मिलती तो आप शाबान के तीस दिन पूरे करते।

अगर तीसवीं शाबान की रात को चाँद देखने में बादल रूकावट बन जाता तो आप शाबान के तीस दिन पूरा कर के रोज़ा रखते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बदली वाले दिन रोज़ा नहीं रखते थे और न ही आप ने इस का हुक्म दिया। बल्कि आप ने यह आदेश दिया कि जब बादल हो तो शाबान के तीस दिन पूरे किए जाएं। और आप स्वयं ऐसा ही करते थे। यही आप एका अमल और आप का हुक्म है। और यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फर्मान : **“अगर बदली हो जाए तो अनुमान लगा लिया करो।”** के खिलाफ नहीं है। क्योंकि अनुमान लगाने का अर्थ है हिसाब करना, इस से अभिप्राय बदली होने की अवस्था में महीने को पूरा करना है, जैसाकि बुखारी की

सहीह हदीस में है किः **“शाबान के महीने की गिन्ती पूरी करो।”**

रमज़ान के महीने से निकलने में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा था कि लोगों को एक मुसलमान आदमी की शहादत पर रोज़ा रखने और दो आदमियों की शहादत पर उस से निकलने का आदेश देते थे।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह तरीक़ा था कि अगर ईद की नमाज़ पढ़ने का समय निकल जाने के बाद दो गवाह चाँद देखने की गवाही देते थे तो आप रोज़ा तोड़ देते और लोगों को भी रोज़ा तोड़ने का हुक्म देते। फिर अगले दिन समय पर ईद की नमाज़ पढ़ते थे।

चौथी सभा

रमज़ान में नबी ﷺ का व्यवहार –2

इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने फरमाते हैं :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इफ्तार में जल्दी करते थे और इस पर उभारते और ज़ोर देते थे। तथा आप सेहरी करते थे और सेहरी करने पर ज़ोर देते थे। इसी प्रकार आप सेहरी में विलम्ब करते थे और उसे विलम्ब करने की रूचि दिलाते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खजूर से इफ्तार करने पर ज़ोर देते थे और अगर खजूर न मिले तो पानी पर। और यह आप की उम्मत पर अत्यंत शफ्क़त व मेहरबानी और उनकी खैरख्वाही है। क्योंकि तबीअत को मेदा खाली होने की अवस्था में मीठी चीज़ देना उसे स्वीकार करने और शारीरिक शक्तियों के उस से लाभ प्राप्त करने के अधिक योग्य है, विशेष रूप से दृष्टि-शक्ति इस से मज़बूत होती है।

मदीना का हलूवा -मिठाई- खजूर है, और उन का मुरब्बा इसी पर है। खजूर ही उन का आहार और सालन है। और उसका रुतब (ताज़ा खजूर) फल के समान है।

जहाँ तक पानी का संबंध है तो रोज़े के कारण कलेजे में एक प्रकार की खुश्की पैदा हो जाती है और जब पानी से उसे तर कर दिया जाता है, तो उसके बाद खाना खाने से उसे संपूर्ण लाभ प्राप्त होता है। इसी लिए भूखे प्यासे आदमी के लिए उचित यह है कि वह खाने से पूर्व थोड़ा पानी पी ले, फिर उसके बाद खाना खाए।

इस के अतिरिक्त पानी और खजूर में अन्य विशेषताएं भी हैं जो हृदय के सुधार में प्रभावकारी हैं, जिन्हें हृदय विशेषज्ञ डॉक्टर ही जानते हैं।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इफ्तारी:

- ❖ नमाज़ पढ़ने से पहले आप इफ्तार करते थे।
- ❖ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इफ्तार -यदि आप के पास उपलब्ध होता- तो कुछ रूतब -ताज़ा खजूरों- पर होता था, यदि आप उसे नहीं पाते तो -सूखे- खजूरों पर इफ्तार करते, अगर

वह भी न होता तो चन्द घूँट पानी पी लिया करते थे।

❖ आप से वर्णित है कि इफ्तार के समय यह दुआ पढ़ा करते थे :

"ذَهَبَ الظَّمَأُ، وَابتَلَّتِ العُروقُ، وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰی"

“ज़हा-बज़्ज़मा-ओ वब्बतल्लतिल उरूक़ो व सबा-तल अज्रो इन-शा-अल्लाहो- तआला”

प्यास चली गई, रगें तर हो गईं, अज्र व सवाब पक्का हो गया यदि अल्लाह तआला ने चाहा। (अबू दाऊद)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

“रोज़े दार के लिए इफ्तार के समय एक ऐसी दुआ है जो अस्वीकार नहीं की जाती।” (इब्ने माजा)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने फरमायाः

“जब रात यहाँ (पूरब) से आ जाए और दिन यहाँ (पच्छिम) से चला जाए तो रोज़े दार के इफ्तार का समय हो गया।” (बुखारी एंव मुस्लिम)

इसकी व्याख्या यह की गई है कि उस ने हुक्मन इफ्तार कर लिया अगरचे उस ने इसकी नीयत न की हो। तथा एक व्याख्या यह भी है कि उस के इफ्तार का समय हो गया, जैसे- **‘असबहा’** का अर्थ सुब्ह हो गई, और **‘अम्सा’** का अर्थ शाम हो गई, होता है।

रोज़ेदार के आदाब

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोज़ेदार को कामुक बातें करने, संभोग करने, शोर व गुल करने, गाली बकने, गाली का जवाब देने से रोका है। अगर कोई गाली गलोज करे तो उस से कह दे कि **“मैं रोज़े से हूँ।”** (बुखारी एंव मुस्लिम)

इसकी व्याख्या में कहा गया है: वह अपनी ज़ुबान से कहे गा।

तथा कहा गया है: अपने दिल में कहे गा अपने आप को रोज़े के बारे में याद दिलाते हुए।

एक कथन यह है कि: फर्ज़ रोज़े में अपनी ज़ुबान से कहे गा, और नफ़ली रोज़े में अपने दिल में कहे गा; क्यों कि यह रियाकारी से बहुत दूर है।

रमज़ान के महीने में यात्रा के दौरान आप ﷺ का व्यवहार:

रमज़ान में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यात्रा किया, तो कभी आप ने रोज़ा रखा और कभी रोज़ा तोड़ दिया -रोज़ा नहीं रखा-, तथा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को दोनों बातों का विकल्प दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दुश्मन से क़रीब हो जाते थे तो उन्हें रोज़ा तोड़ देने का आदेश देते थे; ताकि वह उन से लड़ाई करने पर शक्ति जुटा सकें।

लेकिन यदि यात्रा जिहाद से खाली होती थी तो अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोज़ा तोड़ने के बारे में फरमाते : यह एक रूख्सत -छूट- है, अतः जो इसे अपनाए तो यह अच्छा है, और जो रोज़ा रखना चाहे तो उस पर कोई हरज नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सब से महान और सब से बड़े युद्ध : बद्र और मक्का पर विजय के युद्ध में -रमज़ान के महीने में- यात्रा किया।

यात्रा की वह मसाफत -दूरी- जिस में रोज़ेदार अपना रोज़ा तोड़ देगा, उस की सीमा निर्धारित करना पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा नहीं था। और न ही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस के बारे में कोई चीज़ प्रमाणित है।

सहाबा किराम यात्रा का आरम्भ करते समय ही रोज़ा तोड़ देते थे, घरों को पार करने का कोई एतिबार नहीं करते थे। और इसी को पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा और सुन्नत बतलाते थे। जैसे कि उबैद बिन जब्र का कहना हैः मैं अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी अबू बस्रह ग़िफारी के साथ रमज़ान के महीने में फुसतात के एक कश्ती में सवार हुआ, तो हम ने अभी घरों को पीछे नहीं छोड़ा था कि उन्हों ने दस्तरखान मांगा और कहा, क़रीब आ जाओं। मैं ने कहाः क्या आप घरों को नही देख रहे? अबू बसरह ने उत्तर दियाः क्या तुम अल्लाह के रसूल की सुन्नत से मुंह मोड़ते हो? (अहमद, अबू दाऊद)

मुहम्मद बिन कअब ने कहा : मैं रमज़ान में अनस बिन मालिक के पास आया, जबकि वह यात्रा करना चाहते थे और उनकी सवारी तैयार खड़ी थी और उन्हों ने यात्रा का कपड़ा पहन लिया था। चुनांचे उन्हों ने खाना मंगाया

और खाया। मैं ने कहाः यह सुन्नत है? उन्हों ने उत्तर दियाः सुन्नत है। फिर वह रवाना हो गए।

(त्रिमिज़ी ने इसे हसन कहा है।)

सहाबा किराम के यह आसार इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि जिस ने रमज़ान के दिन के बीच में यात्रा आरम्भ किया है वो उस दिन में रोज़ा तोड़ सकता है।

पाँचवीं सभा

रमज़ान में नबी ﷺ का व्यवहार -3

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा था कि फज्र उदय होने के समय आप जुनबी होत थे। फज्र की अज़ान के बाद आप गुस्ल करते और रोज़ा रखते थे।

रमज़ान के महीने में रोज़े की अवस्था में आप अपनी किसी बीवी को चुंबन करते थे। और इसे आप ने पानी से कुल्ली करने के समान बताया है।[1]

भूल कर खाने या पीने वाले के बारे में आप ﷺ का व्यवहार

भूल कर खाने और पीने वाले के बारे में आप का व्यवहार यह था कि आप उस से क़ज़ा को समाप्त कर देते थे। क्योंकि अल्लाह तआला ने उसे खिलाया और पिलाया है, इस लिए इस खाने और पीने का संबंध उस से नहीं है कि जिस के कारण उस का रोज़ा टूट जाए।

---

[1] उलमा ने रोज़ेदार के लिए बोसा देने को नापसंद किया है अगर उसे अपने ऊपर नियंत्रण -कंट्रोल- न हो।

रोज़ा केवल उसी से टूट है जिसे उस ने स्वयं किया हो। और ये तो उस के सोने की अवस्था में खाने पीने के समान है। जबकि सोने वाले, तथा भूलने वाले के कार्य का कोई मान्य नहीं है।

रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ें

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जिन चीज़ों के कारण रोज़ा टूटना शुद्ध रूप से प्रमाणित है वह : खाना, पीना, पछना लगवाना और उलटी -क़ै- करना हैं।

तथा कुर्आन करीम से पता चलता है कि खाने और पीने के समान ही संभोग करने से भी रोज़ा टूट जाता है। इस में किसी का कोई मतभेद -इख्तिलाफ- नहीं है।

सुर्मा लगाने से रोज़ा टूटने के विषय में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ भी प्रमाणित नहीं है।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप रोज़े की अवस्था में मिस्वाक करते थे।

तथा इमाम अहमद ने उल्लेख किया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रोज़े की अवस्था में अपने सिर पर पानी डालते थे।

तथा रोज़े की हालत में आप कुल्ली करते और नाक में पानी डालते थे। किन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोज़ेदार को नाक में अधिक पानी डालने से रोका है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह प्रमाणित नहीं है कि आप ने रोज़े की हालत में पछना लगवाया है। यह इमाम अहमद ने कहा है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह भी प्रमाणित नहीं कि आप ने दिन के शुरू या अन्तिम हिस्सा में (रोज़ेदार को) मिस्वाक करने से रोका है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एतिकाफ का तरीक़ाः

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान के अन्तिम दस दिनों में एतिकाफ किया करते थे यहाँ तक कि आप की मृत्यु हो गई। एक बार आप ने रमज़ान में एतिकाफ छोड़ दिया तो शव्वाल के महीने में उस की क़ज़ा की।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार रमज़ान के पहले दस दिनों मे एतिकाफ किया, फिर बीच वाले दस दिनों में, फिर अन्तिम दस दिनों में एतिकाफ किया। आप उस में लैलतुल-क़द्र तलाश करते थे। फिर आप को पता चला कि वह अन्तिम दस रातों में है तो आप ने बराबर

उसी में एतिकाफ किया यहाँ तक कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से जा मिले।

- आप के लिए मस्जिद में एक खेमा लगा दिया जाता था जिस में आप एकान्त में अपने पालनहार की उपासना करते थे।

- जब आप एतिकाफ का इरादा करते तो फज्र की नमाज़ पढ़ कर खेमा में प्रवेश करते थे।

- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर साल दस दिन एतिकाफ करते थे। किन्तु जिस साल आप की मृत्यु हुई उस साल आप ने बीस दिन का एतिकाफ किया।

- हर साल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिब्रील के साथ एक बार कुर्आन को दोहराते थे। किन्तु जिस साल आप की मृत्यु हुई दो बार कुर्आन को दोहराया।

- इसी तरह हर साल वह आप पर दो बार कुर्आन को पेश करते थे किन्तु जिस साल आप की मृत्यु हुई उन्हों ने दो बार आप पर कुर्आन को पेश किया।

- जब आप एतिकाफ करते तो अपने खेमे में अकेले दाखिल होते थे।
- जब आप एतिकाफ की हालत में होते थे तो अपने घर में केवल इन्सानी आवश्यकता ही के लिए प्रवेश करते थे।
- आप अपने सिर को मस्जिद से आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में निकाल लेते थे और वह माहवारी के दिनों में होने के उपरान्त भी आप के सिर को धोतीं और उसमें कंघी करती थीं।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ बीवियाँ आप के एतिकाफ गृह में भी आती थीं, जब वह उठ कर जाने लगतीं तो आप भी उन के साथ उठते और उनहें वापस छोड़ते, और यह रात में हुआ करता था।
- आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एतिकाफ की हालत में अपनी औरतों से संभोग नहीं किया और न ही बोस व किनार (चुंबन) किया।

- जब आप एतिकाफ करते तो आप का बिस्तर और चारपाई आप के एतिकाफ गृह में रख दी जाती थी।

- जब आप किसी आवश्यकता के लिए निकलते तो रास्ते में किसी मरीज़ के पास से गुज़रते तो उस के पास न तो ठहरते थे और न ही उस के बारे पूछते थे।

- एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुर्की कुब्बा में एतिकाफ किया और उस के द्वार पर एक चटाई डाल दी; ये सारी चीज़ें इस लिए थीं ताकि एतिकाफ का उद्देश्य और उसका सार प्राप्त हो। ऐसा नहीं जैसाकि आज के जाहिल लोग करते हैं कि उन्हों ने एतिकाफ गृह को रहन सहन और दर्शकों को एकत्र करने और आपस में गप शप करने का स्थान बना लिया है। तो यह एतिकाफ कुछ और ही है और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एतिकाफ कुछ और ही तरह का था। और अल्लाह ही तौफीक़ देने वाला है।

छठी सभा

पैग़म्बर ﷺ का नसब शरीफ और आपके असल की पवित्रता

आप का नसब नामाः

आप की कुन्नियत 'अबुल-क़ासिम' तथा नाम 'मुहम्मद' है। आप का नसब नामा इस प्रकार है : मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मनाफ बिन कुसै बिन किलाब बिन मुर्रा बिन कअब् बिन लुवै बिन गालिब बिन फेह्र बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना बिन खुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन निज़ार बिन मअद्द बिन अदनान।

यहाँ तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसब नामा मुत्तफक अलैह है।

तथा इस बात पर भी सब की सहमति है कि अदनान, इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद से हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामः

जुबैर बिन मुत्इम से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

“मेरे कई नाम हैं : मैं मुहम्म्द हूँ, मैं अहमद हूँ, मैं माही हूँ मेरे द्वारा अल्लाह तआला कुफ्र को मिटा देगा, तथा मैं हाशिर हूँ मेरे क़दम पर लोग उठाए जाएं गे ? और मैं आक़िब हूँ जिस के बाद कोई -पैगम्बर- नहीं।”

अबू मुसा अश्अरी कहते हैं : आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम से अपने कई नाम लेते थे, आप ने फरमायाः **“मैं मुहम्मद, अहमद, अल-मुक़फ्फी, अल-हाशिर, नबीयुत्तौबा और नबीयुर्रहमह् (नबीयुर्रह्मत) हूँ।”** (मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असल की पवित्रताः

इस में किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू हाशिम और कुरैश की नस्ल से हैं। इस प्रकार आप अरब में सर्वश्रेष्ठ और उत्तम नसब वाले हैं, तथा आप मक्का के हैं जो अल्लाह के निकट सब से पवित्र नगर -धरती- है। अल्लाह तआला का फर्मान हैं :

"अल्लाह तआला अधिक जानने वाला है कि वह अपना संदेश कहाँ रखता है।"

तथा अबू सुफ्यान ने अपने इस्लाम लाने से पूर्व पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नसब की उच्चता और श्रेष्ठता को स्वीकार किया है, और यह उस समय जब रूम के बादशाह हिरक़्ल ने उनसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नसब के बारे में प्रश्न किया था। चुनांचे अबू सुफ्यान ने उत्तर दियाः वह हमारे बीच ऊंचे नसब वाला है। इस पर हिरक़्ल ने कहाः दर्असल पैग़म्बर अपनी क़ौम के ऊँचे नसब में से भेजे जाते हैं। (बुखारी एंव मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

> **"अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की औलाद में से इस्माईल अलैहिस्सलाम को चुना, और इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से किनानह को चुना, और किनानह में से कुरैश को चुना और कुरैश में से बनू-हाशिम को चुना और बनू-हाशिम में से मुझे चुना है।"** (सहीह मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नसब (वंश) की पवित्रता में से यह बात भी है कि अल्लाह तआला

ने आप के माता-पिता को ज़िना -व्यभिचार- की त्रुटि से सुरक्षित रखा है, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्म शुद्ध निकाह -विवाह- से हुआ है, हरामकारी से नहीं। जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फर्मान है : **''मैं आदम से लेकर यहाँ तक कि मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया, निकाह से पैदा हुआ हूँ, ज़िना से नहीं निकला हूँ। मुझे जाहिलियत के समय काल के ज़िना ने तनिक सा भी नहीं छुआ है।''** (इसे तब्रानी ने मोजमुल औसत में रिवायत किया है, और अलबानी ने हसन कहा है)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फर्मान है :

''मैं आदम अलैहिस्सलाम से ही बिना ज़िना के निकाह से पैदा हुआ हूँ।'' (इसे इब्ने सअद ने रिवायत किया है और अलबानी ने हसन कहा है)

तथा इब्ने सअद और इब्ने असाकिर ने कल्बी रहिमहुल्लाह से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहाः मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाँच सौ माएँ लिखी हैं, उन में मैं ने ज़िना और जाहिलियत की कोई बात नही पाई।

पाँच सौ माओं से अभिप्राय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माता और पिता की ओर से दादियाँ और पर-दादियाँ... हैं।

सातवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की सच्चाई और अमानतदारी

नबी बनाए जाने से पूर्व पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी क़ौम में सच्चाई और अमानतदारी से सुप्रसिद्ध थे। आप उनके बीच 'अमीन' (विश्वस्त) के नाम से जाने जाते थे। और यह एक ऐसा लक़ब है जिस से वही व्यक्ति विशिष्ट हो सकता है जो सच्चाई, अमानतदारी और इनके अतिरिक्त अन्य भलाई के स्वभावों में चरम सीमा पर पहुँचा हुआ हो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ में इस खूबी की गवाही आप के दुश्मनों ने भी दी है। अबू जहल ही को ले लीजिए जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से द्वेष रखने और आप को झुठलाने के बावजूद यह विश्वास रखता था कि आप सच्चे हैं। इसीलिए जब एक आदमी ने उस से पूछाः क्या मुहम्मद सच्चे हैं या झूठे? तो उस ने उत्तर दियाः तेरा बुरा हो! अल्लाह की क़सम मुहम्मद सच्चे हैं, उन्हों ने कभी झूठ बोला ही नहीं, किन्तु

जब बनू कुसै ही अलमबर्दारी, हाजियों को पानी पिलाना, काबा की पासबानी और पैग़म्बरी ले लेंगे, तो शेष क़ुरैश के लिए क्या बचे गा?!

ये अबू सुफ्यान है जो इस्लाम लाने से पूर्व पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कट्टर दुश्मनों में से था, जब इस से हिरक़्ल ने पूछाः क्या इसने जो बात कही है इसे कहने से पहले तुम उसे झूठ से आरोपित करते थे?

अबू सुफ्यान ने कहाः नहीं।

तो हिरक़्ल ने कहाः मैं ने तुम से पूछा कि क्या इसने जो बात कही है इसे कहने से पहले तुम उसे झूठ से आरोपित करते थे? तो तुम ने कहा कि नहीं। तो मैं समझ गया कि ऐसा नहीं हो सकता कि वह लोगों पर तो झूठ न बोले और अल्लाह पर झूठ बोले।

और यह खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं, जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 'हिरा' नामी गुफा में आप पर वह्य उतरने के पश्चात उनके पास काँपते हुए आए और कहाः **"मुझे चादर उढ़ा दो, मुझे कम्बल उढ़ा दो।"** तो उन्हों ने आप से कहाः खुश हो जाएं, अल्लाह की क़सम ऐसा कदापि नहीं हो सकता, अल्लाह तआला आप को कभी रूस्वा नहीं करे गा; क्योंकि आप सिला रहमी करते

-रिश्तेदारी निभाते- हैं, और सच्च बोलते हैं... (बुखारी एंव मुस्लिम)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह कहते हैं: फिर जब अल्लाह तआला का यह फर्मान उतरा:

"आप अपने निकटतम संबंधियों को डराईये।" (सूरतुश्शुअरा:६४)

तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर निकले यहाँ तक कि सफा पहाड़ी पर चढ़ गए और आवाज़ लगाई: **"या सबाहाह!"** (हाय सुब्ह की बर्बादी), यह सुन कर लोगों ने कहा यह कौन आवाज़ लगा रहा है? कहा गया कि: मुहम्मद! चुनांचे वह लोग आप के पास एकत्र हो गए। तो आप ने फरमाया: **"तुम लोग ये बताओ कि अगर मैं सूचना दूँ कि इस पहाड़ी के दामन में घुड़सवार हैं जो तुम पर आक्रमण करने वाले हैं, तो क्या तुम मुझे सच्चा मानो गे?"** उन्हों ने उत्तर दिया: **"हां, हम ने आप को सदा सच्चा ही पाया है। आप ने फरमाया: अच्छा, तो मैं तुम्हें एक कठोर यातना से पहले डराने वाला हूँ।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई और अमानतदारी के कारण मुशरिकीन आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के बारे में हुक्म लगाने में असमंजस में पड़ गए, वह कभी आप को झूठा जादूगर कहते और कभी शाइर कहते, कभी आप को काहिन कहते तो कभी दीवाना कहते। तथा वो आपस में एक दूसरे को मलामत करते; क्योंकि वो सब जानते थे कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन बुरे अलक़ाब से बरी हैं।

यह नज़्र बिन हारिस है जिस ने बढ़-चढ़ कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट पहुँचाया, एक बार क़ुरैश से कहाः ऐ क़ुरैश के लोगो! अल्लाह की क़सम तुम एक ऐसे मामले से पीड़ित हुए हो जिस से तुम्हारा सामना कभी नहीं हुआ; मुहम्मद तुम्हारे बीच एक नवजवान था, तुम में सब से अधिक बुद्धिमान, सब से बड़ा सत्यवादी और सब से बड़ा अमानत दार, यहाँ तक कि तुम ने उसकी दोनों कनपटियों पर सफेदी देख ली और तुम्हारे सामने वह बातें लेकर आए जो वो तुम्हारे पास ले कर आए तो तुम ने उसे जादूगर कह दिया। नहीं, अल्लाह की क़सम वह जादूगर नहीं। तथा तुम ने उसे काहिन कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम वह काहिन भी नहीं। तथा तुम ने उसे शाइर और दीवाना कहा। फिर उस ने कहाः ऐ क़ुरैश के लोगो! अपने मामले में गौर कर लो, क्योंकि

अल्लाह की क़सम तुम्हारे ऊपर एक गम्भीर मामला आ पड़ा है।

जहाँ तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अमानतदारी का संबंध है तो यही गुण इस बात का कारण बना कि खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी बनने की रूचि प्रकट की; क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शाम में उनकी तिजारत के निरीक्षक थे, और उनको अपने गुलाम मैसरह के द्वारा आप की अमानतदारी और सद्व्यवहार के बारे में ऐसी बातें ज्ञात हुईं जिन से वह आश्चर्य चकित रह गईं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अमानतदारी का एक उदाहरण यह भी है कि कुरैश के मुशरिकीन -आप का इन्कार करने और आप को झुठलाने के बावजूद- अपने मालों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ही रखा करते थे और आप को उन पर अमीन बनाते थे। और जब अल्लाह तआला ने आप को मदीना की ओर हिज्रत की अनुमति दे दी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मक्का ही में छोड़ दिया ताकि वह मक्का वालों की अमानते उनके मालिकों को वापस कर दें।

सब से बड़ी अमानत जिस का भार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कन्धे पर उठाया और उस को संपूर्ण रूप और सर्वश्रेष्ठ ढंग से अदा किया, वह अल्लाह तआला की वह्य और संदेश की अमानत है जिस के प्रसार-प्रचार की अल्लाह तआला ने आप को ज़िम्मेदारी सौंपी। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह के संदेश का संपूर्ण रूप से प्रचार किया, अमानत की सर्वश्रेष्ठ ढंग से अदायगी की, और अल्लाह के दुश्मनों से प्रमाण और वार्तालाप तथा तीर और तलवार के द्वारा संघर्ष और जिहाद किया। अल्लाह तआला ने आप को विजय प्रदान किए और आप की दावत के लिए मोमिनों के दिल खोल दिए। चुनांचे लोग आप पर ईमान लाए, आप को सच्चा माना, आप की सहायता की और आप का सहयोग किया, यहाँ तक कि तौहीद का कलिमा बुलंद हो गया और इस्लाम पूरब और पच्छिम में फैल गया। और कोई मिट्टी या ऊन का घर (कोई दीहात और नगर) बाकी नहीं रहा जहाँ अल्लाह तआला ने इस्लाम को दाखिल न कर दिया हो। अल्लाह की रहमतें और शान्ति अवतरित हो उस सच्चे अमानतदार पर जिस ने अल्लाह के मार्ग में भर पूर संघर्ष किया यहाँ तक कि आप की मृत्यु हो गई।

आठवीं सभा

प्रतिज्ञा एंव पैग़म्बरों की मुहम्मद ﷺ के आगमन की शुभ सूचना

अल्लाह तआला का फर्मान हैं :

“जब अल्लाह तआला ने पैग़म्बरों से अहद व पैमान (वचन) लिया कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब एंव हिकमत दूँ, फिर तुम्हारे पास वह पैग़म्बर आए जो तुम्हारे पास की चीज़ को सच्च बताए तो तुम्हारे लिए उस पर ईमान लाना और उस की सहायता करना अनिवार्य है। फरमाया कि तुम इस के इक़रारी हो और इस पर मेरा ज़िम्मा (वचन) ले रहे हो? सब ने कहा कि हमें स्वीकार है, फरमायाः तो अब गवाह रहो और स्वयं मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में हूँ। अब इस के बाद जो भी पलट जाएं तो निःसन्देह वही लोग ना-फर्मान (अवज्ञाकारी) हैं।”
(सुरत आल-इम्रान३ः ८१-८२)

अली बिन अबू तालिब और उन के चचा के बेटे इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं : अल्लाह तआला ने

जो भी पैग़म्बर भेजे उस से यह अहद व पैमान लिया गया कि अगर उस के जीते जी अल्लाह तआला मुहम्मद को पैग़म्बर बनाकर भेजे गा तो वह अवश्य उन पर ईमान लाए गा औ उनकी सहायता करे गा। और उसे इस बात का आदेश दिया कि वह अपनी क़ौम से भी यह अहद व पैमान (प्रतिज्ञा) ले ले कि यदि उनके जीते जी मुहम्मद भेजे जाएँ गे तो वह उन पर ईमान लाएँ गे और उनकी सहायता करें गे। (तफ्सीर इब्ने कसीर १-४६३)

सुद्दी से भी इसी के समान वर्णित है।

अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में वर्णन करते हुए फरमायाः

''ऐ हमारे पालनहार! उन के बीच उन्ही में से एक पैग़म्बर भेज जो उन पर तेरे आयात की तिलावत करे, उन्हें किताब और हिक्मत की शिक्षा दे और उन्हें पवित्र करे, निःसन्देह तू शक्तिशाली और बड़ी हिक्मत वाला है।'' (सूरतुल बक़रह२ः १२६)

इब्ने कसीर फरमाते हैं :

''इस आयत में अल्लाह तआला हरम वालों के लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस दुआ के पूरी होने के बारे में सूचना दे रहा है कि उन के बीच उन्ही में से अर्थात

इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वंश से एक पैग़म्बर भेजे। उनकी यह स्वीकृत दुआ, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को, अनपढ़ों में उनकी और उनके अतिरिक्त अन्य शेष गैर अरब मनुष्यों तथा जिन्नात के लिए, पैग़म्बर बनाकर भेजे जाने के बारे में अल्लाह के पूर्व तक़्दीर के मुवाफिक़ हो गयी। जैसाकि इमाम अहमद ने इर्बाज़ बिन सारिया से रिवायत किया है, वह कहते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः **''मैं अल्लाह के पास समस्त पैग़म्बरों का समाप्ति कर्ता -मुद्रिका- हूँ जबकि आदम कीचड़ में थे, और मैं तुम्हें इस के आरम्भ के बारे में बताऊँ गाः मेरे बाप इब्राहीम की दुआ, ईसा अलैहिस्सलाम की मेरे बारे में शुभ सूचना, और मेरी माँ का सपना जो उन्हों ने देखा, इसी प्रकार पैग़म्बरों की माएँ सपना देखती हैं।''**

निरंतर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन लोगों के बीच चर्चित, प्रसिद्ध और फैला हुआ है, यहाँ तक कि वंश के रूप से बनू इस्राईल के अन्तिम ईश्दूत ईसा बिन मर्यम अलैहिस्सलाम ने आप के नाम को स्पष्ट रूप से बयान किया, जब कि वह बनू इस्राईल के बीच भाषण देने के लिए खड़े हुए और कहाः

"मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का पैग़म्बर हूँ, अपने से पूर्व ग्रन्थ तौरात की पुष्टि करने वाला हूँ और एक पैग़म्बर की शुभ सूचना देने वाला हूँ जो मेरे पश्चात आए गा जिसका नाम अहमद है।" (सूरतुस्सफः६)

इसी कारण इस हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा है : **"अपने बाप इब्राहीम की दुआ और ईसा बिन मर्यम की शुभ सूचना हूँ।"**

(तफ्सीर इब्ने कसीर १-२४३)

जहाँ तक पुराने ग्रन्थों में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताओं और गुणों के वर्णन का संबंध है तो इस का प्रमाण अल्लाह तआला का यह फर्मान है:

"जो लोग उस अनपढ़ पैग़म्बर की पैरवी करते हैं जिसे वह तौरात और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, जो उन्हें भलाई का आदेश देता है और उन्हें बुराई से रोकता है और उन के लिए पवित्र चीजों को हलाल ठहराता है और गन्दी चीज़ों को हराम ठहराता है और उन से उस बोझ और बेड़ियों को समाप्त करता है जो उन के ऊपर थीं।" (सूरतुल आराफः १५७)

अता बिन यसार से वर्णित है, वह कहते हैं: मेरी मुलाक़ात अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु

अन्हुमा से हुई तो मैं ने उनसे कहाः मुझे तौरात में अल्लाह के पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गुण विशेषता (विलक्षण) के संबंध में बतलाईये? उन्होंने कहाः हाँ, अवश्य! अल्लाह की सौगन्ध तौरात में आपकी उन्हीं कुछ विशेषताओं एंव गुणों का वर्णन हुआ है जो कुर्आन में वर्णित है। **"ऐ नबी! हम ने आप को गवाही देने वाला (साक्षी), शुभ सूचना देने वाला, डराने वाला** (सूरतुल अहज़ाबः४५) और उम्मियों (अनपढ़ों) के लिए सुरक्षक और सहायक बनाकर भेजा है। आप मेरा बन्दा और संदेश्वाहक (पैग़म्बर) हैं, मैं ने आप का नाम मुतवक्किल रखा है, आप उजड और दुश्चरित्र नहीं हैं और न ही बाज़ारों में हल्ला-गुहार मचाने वाले हैं, और आप बुराई का बदला बुराई से नहीं देते हैं, बल्कि माफ कर देते और क्षमा से काम लेते हैं। अल्लाह आप को उस समय तक मृत्यु नहीं देगा यहाँ तक कि आपके द्वारा टेढ़ी मिल्लत (पथ-भ्रष्ट राष्ट्र) को सीधा न कर देगा; इस प्रकार कि वह लोग यह न कहने लगें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। चुनाँचे वह आप के दारा अन्धी आँखों, बहरे कानों और बन्द दिलों को खोल देगा।" (सहीह बुखारी)

इमाम बैहक़ी इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने कहाः जारूद बिन अब्दुल्लाह आए और इस्लाम स्वीकार किया और कहने लगेः उस अस्तित्व की सौगन्ध जिस ने आप को सत्य के साथ भेजा है मैं ने आप का गुण विशेषण इन्जील में पाया है तथा इब्ने बतूल अर्थात ईसा बिन मर्यम अलैहिस्सलाम ने आप की शुभ सूचना दी है।

अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नजाशी ने कहाः मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के पैग़म्बर हैं और ईसा ने आप ही की शुभ सूचना दी है। यदि मैं बादशाही और लोगों के मामले की ज़िम्मेदारी अपने कन्धे पर न उठाए हुए होता तो मैं उन के पास जाता यहाँ तक कि आप की जूतियाँ उठाता। (अबू दाऊद)

नववीं सभा

दया के पैग़म्बर -१

पैग़म्बर ﷺ की दया अपने दुश्मनों के साथः

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरी मानवता के लिए दया और करूणा थे। अल्लाह तआला ने आप को इस गुण से सम्मानित करते हुए फरमायाः

"हम ने आप को सर्व संसार वालों के लिए दया बनाकर भेजा है।" (सूरतुल-अंबिया:१०७)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"मै रह्मत -दया- बनाकर भेजा गया हूँ।" (मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया एक सामान्य दया थी जो मोमिन और काफिर हर एक को सम्मिलित थी। चुनाँचे ये तुफैल बिन अम्र अद्दौसी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, जो अपने क़बीले दौस की हिदायत से निराश हो कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाते हैं और कहते हैं: ऐ अल्लाक के पैग़म्बर! क़बीला दौस वालों

ने अवहेलना और इन्कार किया है, आप उन पर बद्-दुआ (शाप) कर दीजिए।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़िब्ला का रूख किया और अपने दोनों हाथों को उठाया। इस पर लोगों को विश्वास हो गया कि यदि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद्दुआ कर दी तो दौस क़बीले का सर्वनाश हो जाए गा। किन्तु दया के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः **"ऐ अल्लाह! तू दौस वालों को हिदायत (मार्ग दर्शन) प्रदान कर और उन्हें लेकर आ।"** (सहीह बुखारी एंव सहीह मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए हिदायत और मार्गदर्शन की दुआ फरमाई, उन पर प्रकोप और सर्वनाश होने की दुआ नहीं की, क्योंकि आप केवल लोगों की भलाई और कल्याण चाहते थे, आप उन के लिए सफलता और मोक्ष प्राप्ति की कामना करते थे।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ताईफ जाते हैं ताकि उनके क़बीलों को इस्लाम की दावत दें, परन्तु ताईफ-वासियों से आप को इन्कार, ठठोल और परिहास का सामना होता है, वो अपने बेवक़ूफों और ओबाशों को आप के पीछे लगा देते हैं जो आप पर पत्थर बरसाते हैं

यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऐड़ियों से खून बहने लगता है।

इस के बाद जो कुछ पेश आया उसे आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करते हुए फर्माती हैं : मैं ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि क्या आप पर कोई ऐसा दिन भी आया है जो उहुद के दिन से भी अधिक कठिन रहा हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"मुझे तुम्हारी क़ौम की ओर से जिन जिन मुसीबतों का सामना हुआ वह हुआ ही, और उन में से सब से कठिन मुसीबत वह थी जिस से मैं घाटी के दिन दो चार हुआ, जब मैं ने अपने आप को अब्द-यालील पुत्र अब्द-कुलाल के बेटे पर पेश किया, किन्तु उसने मेरी बात न मानी तो मैं दुख से चूर, ग़म से निढाल अपनी दिशा में चल पड़ा और मुझे क़र्नुस-सआलिब नामी स्थान पर पहुँच कर ही इफाक़ा हुआ। मैं ने अपना सिर उठाया तो क्या देखता हूँ कि बादल का एक टुकड़ा मुझ पर छाया किए हुए है। मैं ने ध्यान से देखा तो उसमें जिब्रील थे। उन्हों ने मुझे पुकार कर कहाः आप की क़ौम ने आप से जो बात कही और आप को जो जवाब दिया अल्लाह ने उसे सुन लिया है। उसने आप के पास पहाड़ का फरिश्ता भेजा है ताकि आप उनके बारे में उसे जो**

आदेश चाहें, दें। उसके बाद पहाड़ के फरिश्ते ने मुझे आवाज़ दी और मुझे सलाम करने के बाद कहाः ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! बात यही है, अब आप जो चाहें, अगर आप चाहें कि मैं इन को दो पहाड़ों के बीच कुचल दूँ (तो ऐसा ही होगा) । पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **''नहीं, बल्कि मुझे आशा है कि अल्लाह तआला इनकी पीठ से ऐसी नस्ल पैदा करे गा जो केवल एक अल्लाह की इबादत (उपासना) करे गी और उसके साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराए गी।''** (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

यह पैग़म्बराना दया और करूणा है जिस ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन के खून बहते हुए घाव, टूटे हुए दिल और घायल हृदय को भुला दिया, और आप इन लोगों तक भलाई पहुँचाने, इन्हें अँधेरों से प्रकाश की ओर निकालने और इन्हे सीधे मार्ग दर्शाने के अतिरिक्त कोई और चीज़ याद नहीं रखते हैं।

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का को विजय करते हैं और उस में दस हज़ार योद्धाओं के साथ प्रवेश करते हैं। अल्लाह तआला आप को उन लोगों की गर्दनों के बारे में निर्णय करने का अधिकार प्रदान करता

है जिन्हों ने आप को कष्ट पहुँचाया, आप को खदेड़ा, आप को जान से मार डालने का षड़यन्त्र रचा और आप को आप के देश से निकाल दिया, तथा आप के साथियों की हत्या की और उन्हें उनके धर्म के बारे में फित्ने से दो चार किया था।

चुनाँचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक साथी इस महान विजय की प्राप्ति के बाद कहते हैं : "**आज तो मार-धाड़ और रक्त-पात का दिन है।**" इस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फर्माते हैं : "**बल्कि आज दया का दिन है।**"

फिर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन पराजित लोगों की ओर जाते हैं इस हाल में कि इनकी निगाहें उठी हुई थीं, दिल थरथरा रहे थे और गले सूख गए थे, वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि यह विजयी सिपह सालार उनके साथ क्या बर्ताव करता है, जब कि गद्दारी करना, इन्तिक़ाम लेना और मुसलमानों के वधित लोगों का मुसला करना (शव को बिगाड़ना) इनका स्वभाव था जैसाकि उहुद आदि की लड़ाई में इन्हों ने किया था।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन से फरमाते हैं: **“ऐ कुरैश के लोगो! तुम्हारा क्या खयाल है मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ?”**

उन्होंने कहाः अच्छा ! आप करीम (दयालु) भाई हैं और करीम (दयालु) भाई के बेटे हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **“जाओ तुम सब आज़ाद हो।”**

चुनाँचे वह लोग ऐसे ही चल पड़े जैसे क़ब्र से उठाए गए हों।

यह विस्तृत और विशाल क्षमा उस दया और करूणा का परिणाम है जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हृदय में उपस्थित था जो इतना महान था कि आप को और आप के साथियों को सब से अधिक कष्ट पहुँचाने वाले दुश्मनों को भी सम्मिलित हो गई। अगर यह दया और करूणा न होता तो इस प्रकार के क्षमा का प्रदर्शन न होता। औ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह कथन कितना ही सत्य है : **“निःसन्देह मैं समूचित दया बनाकर भेजा गया हूँ जो अल्लाह की ओर से सर्व संसार के लिए एक उपहार है।”** (हाकिम)

दसवीं सभा

दया के पैग़म्बर –2

पैग़म्बर ﷺ की दया पशु और खनिज पदार्थ के साथः

हम ये बात उल्लेख कर चुके हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया इतनी विशाल हैं कि वह ऐकेश्वरवादी मुसलमान से निकल कर काफिर को भी शामिल हो गई। यहाँ हम इस पर वृद्धि करते हुए कहते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया मानव-जाति से भी आगे बढ़ गई यहाँ तक कि पशु और खनिज पदार्थ को भी शामिल हो गई। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

‘‘एक आदमी रस्ते में चल रहा था कि वह सख्त प्यासा हो गया, उसे एक कुंवाँ मिला, चुनाँचे वह उस में उतर गया और पानी पी कर बाहर निकल आया। सहसा उसे एक कुत्ता दिखाई दिया जो हाँप रहा था और प्यास से कीचड़ खा रहा था। उस आदमी ने कहाः इस कुत्ते को वैसे ही प्यास लगी है जैसे मेरा प्यास से बुरा हाल था।

चुनाँचे वह कुंवे में उतरा, अपने चमड़े के मोज़े में पानी भरा फिर उसे अपने मुँह से पकड़ लिया यहाँ तक कि ऊपर चढ़ गया और कुत्ते को सेराब किया। अल्लाह तआला ने उस के इस प्रयास को स्वीकार कर लिया और उसे क्षमा कर दिया।'' सहाबा ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! इन चौपायों में भी हमारे लिए अज्र व सवाब है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **''हर जानदार कलेजे में अज्र (पुण्य) है।''** (बुखारी एंव मुस्लिम)

इस सिद्धान्त कि **''हर जानदार कलेजे में अज्र (पुण्य) है।''** के द्वारा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन संगठनों और संस्थाओं पर प्राथमिकता ले गए जो जानवरों के अधिकारों की रक्षा करने और उन पर दया करने का बेड़ा उठाए हुए हैं। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन पर उस समय सैंकड़ो साल की प्राथमिकता ले गए जब आप ने फरमायाः

> **''एक औरत को एक बिल्ली के कारण यातना -सज़ा- मिली, उस ने उसे क़ैद कर दिया यहाँ तक कि वह मर गई, जिस के कारण वह नरक में दाखिल हुई। जब उसने उसे बंद कर दिया तो उसे न खिलाया, न पिलाया और न ही उसे**

छोड़ा कि ज़मीन के कीड़े-मकोड़े खा सके।'' (बुखारी व मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस के द्वारा अपने सहाबा -साथियों- को जानवारों पर दया करने और उनके साथ अच्छा बर्ताव करने की शिक्षा देना चाहते हैं, तथा उन के लिए इस बात को स्पष्ट कर देते हैं कि ऐसे जावनर को मारना जिसके क़त्ल करने की अनुमति नहीं है, अथवा उसके मारने का कारण बनना नरक में जाने का कारण बन सकता है -नरक से अल्लाह की पनाह-। यह एक ऐसा तत्व है जिस से यथाकथित नियम और संविधान जिस के अनुसार आज लोग निर्णय और शासन करते हैं, अनभिग हैं।

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिना उद्देश्य और आवश्यकता के जानवर को मारने से रोका है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''जो भी मनुष्य बिना उसके अधिकार के एक चिड़िया (गौरैया) या इस से कोई बड़ा जानवर मारता है, तो अल्लाह तआला क़ियामत (महा प्रलय) के दिन उस से इस के विषय में पूछ ताछ करे गा।''

प्रश्न किया गयाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! उस का अधिकार क्या है? आप ने उत्तर दिया :

“उस का अधिकार -हक़्- यह है कि उसे ज़ब्ह कर के खा ले, उस का सर काट कर उसे फेंक न दे।” (नसाई)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जानवरों को ज़ब्ह करते समय उन के साथ एहसान का आदेश दिया है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“अल्लाह ने हर चीज़ पर एहसान को अनिवार्य कर दिया है, अतः जब तुम क़त्ल करो, तो अच्छी तरह क़त्ल करो, और जब जानवर ज़ब्ह करो तो अच्छी तरह ज़ब्ह करो, तुम्हें चाहिए कि अपनी छुरी तेज़ कर लिया करो और अपने जानवर को आराम पहुँचाओ।” (मुस्लिम)

एक विद्वान ने उल्लेख किया है कि जब कुछ योरपी लोगों को ज़ब्ह के बारे में इस्लाम के आदाब का ज्ञान प्राप्त हुआ तो उन्हों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। यह इस बात का प्रमाण है कि यह दीन प्रत्येक पहलू से संपूर्ण है, और सभी प्रशंसा और उपकार अल्लाह का है।

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“किसी जान वाली चीज़ को निशाना न बनाओ।” (बुखारी एंव मुस्लिम)

अर्थात जीवित जानवर को निशाना न बनाओ कि उसे अपनी तीरों से मारो, क्योंकि यह उस दया के विपरीत है जिस से एक मुसलमान आदमी को सुसज्जित होना चाहिए।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जानवरों तक से अत्याचार और हिंसा को मिटाते थे और इस का भर पूर ध्यान रखते थे, एक बार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक अन्सारी आदमी के बाग में दाखिल हुए, बाग में एक ऊँट था, जब उस ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा तो उस की आँखे से आँसू छलकने लगे।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस के पास आए और उसके सिर पर अपना हाथ फेरा तो वह ऊँट चुप हो गया।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछाः “**इस ऊँट का मालिक कौन है?**”

एक अन्सारी नवजवान आया और उसने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल ! यह ऊँट मेरा है।

इस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

> **"क्या इस जानवर के बारे में जिस का अल्लाह ने तुझे मालिक बनाया है, तू अल्लाह से नहीं डरता? क्योंकि इस ने मुझ से शिकायत की है कि तू इस को भूखा रखता है और निरंतर काम ले कर इसे थका देता है।"** (इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

तथा खनिज पदार्थ को भी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दया का एक अंश प्राप्त हुआ। जैसाकि इमाम बुखारी ने रिवायत किया है कि जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए मिंबर बनाया गया तो खजूर का वह तना जिस पर खड़े हो कर आप खुत्बा (भाषण) दिया करते थे बच्चे के समान रोने लगा, चुनाँचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नीचे उतरे और उसे अपने आप से चिमटा लिया, तो वह उस बच्चे के समान सिसकने लगा जिसे चुपवाया जाता है, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“वह जो कुछ उपदेश और नसीहत सुना करता था उस पर रो पड़ा।”

हसन बसरी रहिमहुल्लाह जब इस हदीस को बयान करते थे तो रो पड़ते थे और कहते थेः ऐ मुसलमानों की जमाअत! एक लकड़ी अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुलाक़ात के शौक़ में रोने लगती है, तुम इस बात के अधिक योग्य हो कि आप के मुश्ताक़ बनो।” (फत्हुलबारी ६/६०२)

ग्यारहवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की विशेषताएं

ज्ञात होना चाहिए कि हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशेषताएं, गुणवत्ताएं बहुत अधिक हैं, उन्हीं में से कुछ निम्न लिखित हैं :

१. **अल्लाह तआला ने आप के शिष्टाचार और श्रेष्ठ गुणों और विशेषताओं की प्रशंसा की है,** अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फरमायाः

''निःसन्देह आप महान शिष्टाचार से सम्मानित हैं।''

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''मुझे इस लिए पैग़म्बर बना कर भेजा गया ताकि मैं सर्व श्रेष्ठ शिष्टाचार को सम्पूर्ण कर दूँ।'' (तब्रानी)

२. **अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपनी उम्मत पर तथा समस्त लोगों पर दया और करूणा की प्रशंसा की है,** जैसा कि अल्लाह तआला के इस फर्मान में हैः

“हम ने आप को सर्व संसार वालों के लिए दया बनाकर भेजा है।” (सूरतुल-अंबिया:१०७)

तथा अल्लाह तआला का यह फर्मान है :

“आप मोमिनों पर दया करने वाले और मेहरबान हैं।” (सूरतुल अहज़ाब:४३)

तथा अल्लाह तआला का यह फर्मान है:

“अल्लाह की कृपा के कारण आप उन पर नरम दिल हैं और आप अगर कहीं बद-ज़ुबान और कठोर हृदय होते, तो ये सब आप के पास से छट जाते। अतः आप उन्हें क्षमा करें, उनके लिए क्षमा याचना करें और काम में उन से मश्वरा किया करें।” (सूरत आल इम्रान ३:१५६)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

“मैं समूचित रहमत -दया- बन कर आया हूँ, जो संसार वालों के लिए अल्लाह की ओर से उपहार है।” (इसे हाकिम ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

३. **आप के जन्म ही से अल्लाह तआला ने आप की देख रेख और सुरक्षा की है:** क्योंकि अल्लाह तआला का फर्मान है:

''क्या उस ने तुझे यतीम पा कर जगह नहीं दी? और तुझे राह भूला पा कर हिदायत नही दी? और तुझे दरिद्र पा कर धनी नहीं बनाया?'' (सूरतुज़्ज़ुहा९३: ६-८)

४. **अल्लाह तआला ने आप के सीने को खोल दिया और आप का चर्चा बुलन्द कर दिया:** जैसाकि अल्लाह तआला का फर्मान है:

''क्या हम ने आप का सीना नहीं खोल दिया? और आप के ऊपर से आप का बोझ उतार दिया? जिस ने आप की कमर तोड़ दी थी। और हम ने आप का चर्चा बुलंद कर दिया।'' (सूरतुशर्ह९४:१-४)

५. **आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खातमुल-अंबिया -अन्तिम ईश्दूत एंव संदेष्टा- हैं,** क्योंकि अल्लाह तआला का फर्मान है:

''मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, किन्तु आप अल्लाह के

सन्देष्टा और खातमुल-अंबिया -अन्तिम ईश्दूत- हैं।" (सूरतुल अहज़ाब:४०)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है: **"मेरी मिसाल और मुझ से पहले पैग़म्बरों की मिसाल उस आदमी के समान है जिस ने एक घर बनाया और उसे संवारा संपूर्ण किया, किन्तु उस के एक कोने में एक ईंट की जगह छोड़ दी। चुनांचे लोग उस का तवाफ -परिक्रमा- करने लगे और उस भवन पर आश्चर्य चकित होते और कहते: तुम ने एक ईट यहाँ क्यों न रख दी कि तेरा भवन संपूर्ण हो जाता? तो वह ईंट मैं ही हूँ।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

६. **आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को समस्त पैग़म्बरों पर विशेषता प्राप्त है:** इस का प्रमाण आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है: **"मुझे अन्य सन्देष्टाओं पर छः चीज़ों के द्वारा विशेषता प्राप्त हुई है : "मुझे जवामिउल-कलिम -कम शब्दों में अर्थ पूर्ण विस्तार बात कहने की योग्यता अर्थात गागर में सागर- प्रदान की गई है, -दुश्मनों के दिलों में- भय के द्वारा मेरी सहायता की गई है -अर्थात जब एक महीने की दूरी पर ही दुश्मन होता है तो उस के दिल में अल्लाह तआला मेरा भय डाल देता है- मेरे**

लिए गनीमत का -युद्ध में प्राप्त होने वाला- माल हलाल कर दिया गया है, धरती को मेरे लिए पवित्रता प्राप्त करने का सामान और नमाज़ पढ़ने का स्थान बना दिया गया है, मैं समस्त लोगों की ओर पैग़म्बर बना कर भेजा गया हूँ और मुझ पर सन्देष्टाओं का अन्त कर दिया गया है।" (मुस्लिम)

७. **आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से संयमी -सब से बढ़ कर अल्लाह तआला से डरने वाले- और लोगों में सब से कुलीन हैं:** जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है: **"मैं अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब का बेटा मुहम्मद हूँ, अल्लाह तआला ने लोगों को पैदा कियाा तो मुझे उन में से सब से श्रेष्ठ लोगों में कर दिया, फिर उन के दो गिरोह किए और मुझे उन में से सब से अच्छे गिरोह में कर दिया, फिर उन्हें कई क़बीलों में बांट दिया और मुझे सब से श्रेष्ठ क़बीले में कर दिया, फिर उनके कई घराने बनाए और मुझे उन में से सर्वश्रेष्ठ घराने में कर दिया, अतः मैं तुम में सर्वश्रेष्ठ घराने वाला और तुम में सर्वश्रेष्ठ प्राणी हूँ।"** (अहमद, अबू दाउद ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

८. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ियामत के दिन हौज़ और शफाअत -सिफारिश- वाले हैं: जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है: "मैं हौज़ पर आगामी पहुँच कर तुम्हारी प्रतीक्षा करूँ गा, ताकि तुम में से कुछ आदमी मेरी ओर बढ़ाए जाएं, यहाँ तक कि जब मैं उन्हें पहचान लूँ गा, तो वह मुझ से रोक दिए जाएं गे, तो मैं कहूं गा: ऐ मेरे रब! ये मेरे आदमी हैं, तो मुझ से कहा जाए गा: आप को मालूम नहीं कि इन्हों ने आप के बाद क्या नयी बातें अविष्कार कर ली थीं।" (बुखारी)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "प्रत्येक नबी के लिए एक दुआ रही है जो उसने की है और वह स्वीकार की गई है, और मैं ने अपनी दुआ को क़ियामत के दिन अपनी उम्मत की शफाअत के लिए बचा कर रखा है।" (बुखारी एंव मुस्लिम)

९. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ियामत के दिन लोगों के नायक और सरदार हैं: जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है: "मैं क़ियामत के दिन आदम की सन्तान का सरदार हूँ और कोई गर्व नहीं है, मेरे ही हाथ में हम्द -प्रशंसा- का झण्डा होगा और कोई गर्व नहीं है, आदम और

उन के अतिरिक्त जो भी नबी हैं सभी मेरे झण्डे तले हों गे, तथा मैं सब से पहला सिफारशी हूँ और सब से पहले मेरी ही सिफारिश स्वीकार की जाए गी और कोई गर्व नहीं है।" (अहमद, त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।**)**

१०. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ियामत के दिन सब से पहले स्वर्ग में प्रवेश करें गेः जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान हैः **"मैं ही सब से पहले जन्नत का द्वार खटखटाउँ गा, उसका दारोगा कहे गाः तुम कौन हो? मैं कहूँ गाः मैं मुहम्मद हूँ। वह कहे गाः मैं उठ कर आप के लिए द्वार खोलता हूँ, आप से पहले मैं किसी के लिए खड़ा नहीं हुआ और न ही आप के बाद किसी के लिए खड़ा हूँ गा।"** (मुस्लिम)

११. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर उस मनुष्य के लिए सर्व श्रेष्ठ आदर्श -नमूना- हैं जो अल्लाह की और उस का स्वर्ग प्राप्त करने और उस के नरक से बचने की आशा रखता है, जैसाकि अल्लाह तआला का फर्मान हैः

“निःसन्देह तुम्हारे लिए अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में सर्व श्रेष्ठ नमूना है हर उस आदमी के लिए जो अल्लाह तआला की और क़ियामत के दिन की आशा रखता है और अल्लाह तआला को बहुत याद रखता है।”
(सूरतुल-अहज़ाबः३-४)

१२. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी इच्छा से कोई बात कहने से पवित्र हैं, बल्कि दीन और शरीअत से संबंधित आप की बात अल्लाह तआला की ओर से वह्य -ईश्वाणी- समझी जाती है, जिस में असत्य का कोई समावेश नहीं हो सकता, जैसाकि अल्लाह तआला का फर्मान हैः

“और न वह अपनी इच्छा से कोई बात कहते हैं। वह तो केवल वह्य होती है जो उतारी जाती है।”
(सूरतुन्नज्मः३-४)

बारहवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ का जन्म, रज़ाअत और अल्लाह की ओर से आप की सुरक्षा

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म रबीउल-अव्वल के महीने में सोमवार के दिन हुआ। एक कथन के अनुसार रबीउल-अव्वल की दो तारीख को आप का जन्म हुआ, एक कथन के अनुसारः आठ तारीख को, एक कथन के अनुसारः दस तारीख को तथा एक कथन के अनुसारः बारह तारीख को आप का जन्म हुआ। हाफिज़ इब्ने कसीर का कहना हैः सही बात यह है कि आप आमुल-फील -जिस साल अबरहा हाथी ले कर खाना काबा को ढाहने के लिए आया था- में पैदा हुए। इमाम बुखारी के गुरू इब्राहीम बिन अल-मुन्ज़िर और खलीफा बिन खैयात आदि ने इस पर सर्व सहमति -इज्माअ्- का उल्लेख किया है।

सीरत के विद्वानों (जीवनीकारों) का कहना हैः जब आप के गर्भ से आमिना के पैर भारी हुए तो उन्हों ने कहाः मैं ने आप के गर्भ को भारी नहीं महसूस किया, और जब

आप पैदा हुए तो आप के साथ एक प्रकाश निकला जिस ने पूरब और पच्छिम के बीच को रोशन कर दिया।

इब्ने असाकिर और अबू नुऐम ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहाः जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए तो अब्दुल मुत्तलिब ने एक मेंढ़े से आप का अक़ीक़ा किया और आप का नाम मुहम्मद रखा। उन से पूछा गया किः ऐ अबुल-हारिस! आप को मुहम्मद नाम रखने पर किस चीज़ ने उभारा, और आप ने इन के बाप के नाम पर इनका नाम नहीं रखा? उन्हों ने उत्तर दियाः मैं ने चाहा कि अल्लाह तआला इनकी आसमान में प्रशंसा करे और लोग ज़मीन पर इनकी प्रशंसा करें।

आप के पिता की मृत्यु :

अभी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी माँ के पेट में गर्भावस्था में ही थे कि आप के पिता का देहान्त हो गया। एक कथन यह भी है कि आप के जन्म के कुछ महीने के बाद उनकी मृत्यु हुई, किन्तु प्रसिद्ध कथन पहला ही है।

आप की रज़ाअत –दूध–पिलाई–ः

अबू लहब की लौण्डी सुवैबा ने कुछ दिन आप को दूध पिलाया। अबू लहब ने इस बच्चे की खुशी में उसे आज़ाद कर दिया। फिर आप को बनू सअद् में दूध पिलवाया गया, चुनाँचे हलीमा अस–सअ्दिया ने आप को दूध पिलाया, आप बनू सअद में लगभग पांच साल रहे। वहीं पर आप का सीना फाड़े जाने की घटना घटी, फरिश्तों ने आप के दिल को निकाल कर उसे धुला और उस में नफ़्स और शैतान का भाग बाहर निकाल दिया, फिर अल्लाह ने उसे प्रकाश, हिकमत, दया और शफक़त से भर दिया, फिर उसे उसके स्थान पर लौटा दिया।

इस घटना के पश्चात हलीमा को आप के ऊपर भय प्रतीक हुआ, इस लिए उन्हों ने आप को आप की माँ के पास लौटा दिया और जो कुछ पेश आया था उस के बारे में उन्हें बताया, लेकिन इस से उन्हें कोई भय नहीं हुआ।

सुहैली कहते हैंः इस प्रकार से आप को दो बार पवित्र और पाक–साफ किया गया!

प्रथमः बचपन में; ताकि शैतान के प्रहार से आप के दिल को पवित्र किया जाए।

द्वितीयः जब अल्लाह तआला ने आप को अपने दरबार में आकाश पर बुलाना चाहा; ताकि आप आकाश के फरिश्तों की इमामत कराएं। उस समय आप के प्रोक्ष और प्रत्यक्ष को पाक-पवित्र किया गया और उसे ईमान और हिक्मत से भर दिया गया।

आप की माँ की मृत्यु :

जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छः वर्ष के हुए तो आप की माँ आप को ले कर आप के दादा के ननिहाल बनू उदय बिन अन-नज्जार की ज़ियारत के लिए मदीना गईं, उनके साथ उम्मे ऐमन भी थीं, वहाँ उन्हों ने एक महीना निवास किया, फिर मक्का लौटते हुए अब्वा नामी स्थान पर उनकी मृत्यु हो गई।

जब -मक्का के- विजय के साल मक्का जाते हुए अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब्वा नामी स्थान से गुज़रे, तो अपने पालनहार से अपने माँ की क़ब्र की ज़ियारत की अनुमति मांगी। अल्लाह तआला ने आप को अनुमति प्रदान कर दी। चुनांचे आप रोए और अपने पास मौजूद लोगों को भी रुला दिया और फरमायाः

"क़ब्रों की ज़ियारत करो, क्योंकि ये तुम्हें आख़िरत -प्रलोक- की याद दिलाए गी।" (मुस्लिम)

जब आप की माँ का देहान्त हो गया तो उम्मे ऐमन ने आप का पालन पोषण किया, वह आप की लौण्डी थीं जो आप को अपने बाप की वरासत से प्राप्त हुई थीं। आप की किफालत आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने की। जब आप आठ साल के हुए तो आप के दादा का साया भी सिर से उठ गया। वह आप के चचा अबू तालिब को आप के बारे में वसीयत कर गए थे। अबू तालिब ने आप की किफालत की भर पूर ज़िम्मेदारी निभाई और जब आप पैग़म्बर बनाए गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भर पूर मदद और हिमायत की। जबकि वह निरंतर अपने शिर्क पर ही जमे रहे यहाँ तक कि उनकी मृत्यु हो गई। उनके पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिमायत और सहयोग करने के कारण अल्लाह तआला ने उनके अज़ाब -यातना- को कम कर दिया है, जैसाकि इस बारे में सहीह हदीस प्रमाणित है।

अल्लाह की ओर से जाहिलयत की गंदगी से आप की सुरक्षा :

अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आप के बाल अवस्था ही से सुरक्षा और बचाव किया और जाहिलियत की गंदगी से पवित्र रखा। आप के दिल में बुतों -मूर्तियों- की घृणा डाल दिया, जिस के फलस्वरूप आप ने किसी मूर्ति को न पूजा और न ही किसी मूर्ति का सम्मान किया, आप ने कभी शराब मुँह से नहीं लगाया, और कुरैश के नवजवानों का उनके फिस्क़ व फुजूर में साथ नहीं दिया, बल्कि आप हर ऐब -बुराई- से पाक थे, तथा आप को हर श्रेष्ठ स्वभाव और कुलीन कर्म प्रदान किया गया था, यहाँ तक कि आप अपनी क़ौम के बीच **'अमीन'** के नाम ही से जाने जाते थे क्योंकि उन्हों ने आप की पवित्रता, सच्चाई को देखा था, वह आप के फैसले को पसन्द करते थे और आप की राय को स्वीकार करते थे। इसका स्पष्ट प्रमाण हज्रे-अस्वद को उसके स्थान पर रखने की घटना है, जबकि उन्हों ने आप के सुझाए हुए प्रस्ताव -राय- को स्वीकार कर लिया। आप ने एक कपड़े के बीच में हज्रे-अस्वद को रखने का सुझाव दिया और हर क़बीले को कपड़े के एक किनारे को पकड़ कर उठाने का आदेश दिया, फिर आप

ने स्वयं हज्रे-अस्वद को उठा कर उसके स्थान पर रखा। इस से सभी लोगों के दिल सन्तुष्ट हो गए और उस फ़ित्ने की आग बुझ गई जिस से क़बीलों के बीच जंग छिड़ जाने का भय पैदा हो गया था।

तेरहवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ का विवाह

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पचीस साल की आयु में खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह किया, उस समय उनकी आयु चालीस साल थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके गुलाम मैसरह् के साथ उनकी तिजारत के लिए शाम गए थे। वहाँ मैसरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामले और जिस सच्चाई और अमानतदारी से आप सुसज्जित थे उसे देख कर वह आश्चर्य चकित रह गया। जब वह वापस आया तो जो कुछ उस ने देख था अपनी मालकन से बताया। जिस के कारण उन्हों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से विवाह कर लिया।

हिज्रत से तीन वर्ष पूर्व खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का देहान्त हों गया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के साथ पचीस साल वैवाहिक जीवन बिताया जिस दौरान किसी अन्य महिला से विवाह नहीं किया यहाँ तक कि पैंसठ -६५- साल की आयु में उनकी मृत्यु हो गई,

उस समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आयु लगभग पचास वर्ष थी। उनके पश्चात पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी हिकमतों और महान उद्देशों के कारण कई महिलाओं से विवाह किया। इस से उन मुस्तश्रिक़ों और अन्य हठ-धर्म और झूठे लोगों का खण्डन होता है जिन्हों ने ये दावा किया है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक कामुक व्यक्ति थे जो मनोरंजन की खोज में रहते थे। यह दावा कैसे स्वीकार किया जासकता है जबकि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ही पत्नी के साथ -जो आप से पन्द्रह १५ वर्ष बड़ी थीं- पचीस वर्ष बिताया जिस दौरान किसी अन्य महिला से विवाह नहीं किया यहाँ तक कि उनकी मृत्यु हो गई तथा आप की जवानी की अवस्था और कामवासना का ज़ोर समाप्त हो गया। तो क्या आप यह कहें गे कि इस लम्बी अवस्था के दौरान कामवासना -शहवत- बुझी हुई थी, फिर जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पचास वर्ष के हो गए तो सहसा जाग उठी? एक बुद्धि वाला आदमी ये बात नहीं कह सकता।

स्वयं पष्चिमी देशों के बहुत से विद्वानों और विचारकों ने इस बात का ठठोल किया है। इटली देश की लेखिका **'लोरा वेस्सिया वागलियेरी'** ***(L. Veccia Vaglieri)*** अपनी

पुस्तक इस्लाम का दिफा (प्रतिरक्षा) में लिखती है: ‘‘मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पूरी जवानी के दिनों में जबकि लैंगिक इच्छा अपनी चरम सीमा पर होती है और जबकि आप ऐसे समाज –अरब समाज– में रह रहे थे जहाँ शादी एक समाजी संस्था के रूप में अनुपस्थित थी और जहाँ अनेक बीवियों से शादी करना ही नियम था और तिलाक़ देना अत्यन्त सरल था, इसके बावजूद आप ने केवल एक औरत से शादी की। वह खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जिनकी आयु पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आयु से बहुत बड़ी थी, और आप पचीस साल तक उनके मुख्लिस और प्रिय पती रहे, और दूसरी शादी उस समय तक नहीं की जब तक खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की मृत्यु न हो गई और आप की आयु पचास साल को पहुँच गई।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इन शादियों में से हर एक शादी का कोई न कोई राजनीतिक या समाजी कारण अवश्य था, जिन औरतों से आप ने शादियाँ कीं उसका उद्देश्य परहेज़गार और सदाचारी औरतों को सम्मान देना और कुछ क़बीलों और खानदानों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करना था ताकि इस्लाम को फैलाने के लिए एक नया रास्ता निकाल सकें।

केवल आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा को छोड़ कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी महिलाओं से शादियाँ कीं जो कुंवारी, जवान और सुन्दर नहीं थीं, तो क्या आप एक शह्वानी (कामुक और शह्वत परस्त) व्यक्ति थे?

आप एक मनुष्य थे पूज्य नहीं थे। नई शादी करने का कारण यह भी हो सकता है कि आप को बेटे की इच्छा रही हो; क्योंकि खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से आप के जो बेटे पैदा हुए थे उन की मृत्यु हो गई थी।

आप के पास आय के कोई अधिक साधन नहीं थे इसके बावजूद आप ने एक भारी परिवार का आर्थिक बोझ अपने कन्धे पर उठा लिया और हमेशा उन सब के साथ पूरी बराबरी के साथ निबाह किया और कभी भी उन में से किसी के साथ अन्तर और भेद भाव का रास्ता नहीं अपनाया।

आप ने पिछले पैग़म्बरों जैसे मूसा अलैहिस्सलाम आदि के आदर्श पर चलते हुए काम किया जिनकी अनेक शादियों पर आपत्ति (एतिराज़ करने) जताने वाला कोई नहीं। तो क्या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुविवाह की आलोचना करने का यही कारण रह जाता है कि हम दूसरे पैग़म्बरों के दैनिक जीवन के विवरण नहीं जानते हैं

जबकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवारिक जीवन की एक एक चीज़ जानते हैं?" [1]

पैग़म्बर की बीवियाँ :

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की मृत्यु के पश्चात सौदह बिन्त ज़म्आ से विवाह किया। फिर आईशा बिन्त अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनके अतिरिक्त किसी अन्य कुंवारी से विवाह नहीं किया। फिर आप ने हफ्सा बिन्त उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हा से विवाह किया। फिर ज़ैनब बिन्त खुज़ैमह बिन अल-हारिस से विवाह किया। तथा उम्मे सलमह से विवाह किया जिनका नाम हिन्द बिन्त उमैया था, तथा ज़ैनब बिन्त जहश से विवाह किया, तथा जुवैरिया बिन्त अल-हारिस और उम्मे हबीबा से विवाह किया। खैबर की जीत के बाद सफिय्या बिन्त हुयय् से विवाह किया। फिर मैमूनह बिन्त अल-हारिस से

---

[1] क़ालू अनिल इस्लाम, लेखः डा० इमादुद्दीन खलील, प० १२०-१२१, उसकी किताब 'दिफाअ् अनिल-इस्लाम' से लिया गया है।

विवाह किया और यह अन्तिम महिला हैं जिन से अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विवाह किया।

चौदहवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ और महिला-1

इस्लाम के शत्रु निरंतर यह राग अलापते रहें हैं कि इस्लाम ने नारी पर अत्याचार किया है, उसे दबा कर रखा है, उसे उसके अधिकारों से वंचित कर दिया है और उसका स्थान मात्र पुरूष के लिए नौकरानी और उसके आनन्द के साधन से बढ़ कर कुछ नहीं है।

किन्तु इस मिथ्या और झूठ आरोप का महल शीघ्र ही धराशाई हो जाता है जब हम इस बात से अवगत होते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किस प्रकार नारी को सम्मान प्रदान किया, उस के वैभव को ऊँचा किया, उस के सलाह व मश्वरे को स्वीकार किया, उस के साथ नर्मी का रवैया अपनाया, और समस्त परिस्थितियों में उस के साथ न्याय किया तथा उसे उसके सम्पूर्ण अधिकार प्रदान किए जो इस से पूर्व उस के सपने में भी नहीं आए थे।

इस्लाम से पूर्व अरबवासी -स्वभाविक रूप से- लड़कियों को नापसंद करते थे और उन्हें लज्जा का कारण समझते

थे, यहाँ तक कि जाहिलियत -अज्ञानता- के समय काल के कुछ अरब लड़कियों को जीवित ही गाड़ देने में प्रसिद्ध थे। क़ुर्आन करीम ने इस का चित्र इस प्रकार खींचा हैः

“उन में से जब किसी को लड़की होने की सूचना दी जाए तो उसका चेहरा काला हो जाता है और दिल ही दिल में घुटने लगता है। इस बुरी खबर के कारण लोगों से छुपा छुपा फिरता है। सोचता है कि क्या इस को अपमानता के साथ लिए हुए ही रहे या इसे मिट्टी में दबा दे। आह! क्या ही बुरे फैसले करते हैं।” (सूरतुन-नह्ल१६:५८-५९)

जाहिलियत के युग में जब किसी महिला का पति मर जाता था, तो उस आदमी के बेटे और रिश्तेदार उस औरत के वारिस बन जाते थे। फिर वह चाहते तो उसे अपने में से किसी को बियाह देते, और अगर चाहते तो उसे विवाह से वंचित कर देते और जीवन भर उसे वैसे ही रोके रखते। इस्लाम ने इस -अत्याचार और कुप्रथा- को समाप्त कर के ऐसे न्याय पूर्ण नियम और दस्तूर बनाए जो बराबरी के साथ स्त्री एंव पूरूष दोनों के अधिकारों की ज़मानत हैं।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूचना दी है कि मानवता के अन्द स्त्री, पूरूष के बराबर है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“महिलाएं, पूरूषों के समान हैं।” (इसे अहमद, अबू दाउद और त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है।)

अतः इस्लाम में पुरूष लिंग और स्त्री लिंग के बीच कोई मतभेद नहीं है जैसाकि इस्लाम के शत्रु कल्पना करते हैं, बल्कि दोनों लिंगों के बीच भाईचारा और पुराव है।

कुर्आन करीम ने ईमान -विश्वास-, कार्य और उसके प्रतिफल -बदले- में पुरूष एंव स्त्री के बीच बराबरी को प्रमाणित किया है। अल्लाह तआला का फर्मान हैः

“निःसन्देह मुसलमान मर्द और मुसलमान महिलाएं, मोमिन मर्द और मामिन औरतें, आज्ञाकारी मर्द और आज्ञाकारी औरतें, सत्यवादी मर्द और सत्यवादी औरतें, धैर्य करने वाले मर्द और धैर्य करने वाली औरतें, विनम्रता मर्द और विनम्र औरतें, दान करने वाले मर्द और दान करने वाली औरतें, रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें, अपनी शरमगाह की सुरक्षा करने वाले मर्द और सुरक्षा करने वाली औरतें, अधिक सें अधिक अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और ज़िक्र

करने वाली औरतें -इन सब- के लिए अल्लाह तआला ने क्षमा -बख़्शिश- और बड़ा पुण्य तैयार कर रखा है।" (सूरतुल अहज़ाब३३:३५)

तथा अल्लाह तआला ने फरमायाः

"जिस ने पाप किया है तो उसे उसके पाप के समान ही बदला मिले गा। और जिस ने नेकी की है, चाहे वो पुरूष हो या स्त्री और वो ईमान वाला हो तो ये लोग स्वर्ग में जाएं गे और वहां असंख्य रोज़ी पाएं गे।" (सूरतुल-मोमिन ४०:४०)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्त्री वर्ग से अपनी महब्बत का उल्लेख करते हुए फरमायाः

"तुम्हारी दुनिया के उपकरणों में से मेरे लिऐ महिलाएं और सुगन्ध प्रिय कर दिए गए हैं। और मेरी आंखों की ठन्ढक नमाज़ में बना दी गई है।" (इसे अहमद और नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महिलाओं से महब्बत करते थे तो फिर आप उन पर अत्या चार कैसे कर सकते हैं? कैसे उनका अपमान कर सकते हैं? तथा उन्हें तुच्छ कैसे समझें गे?

जिस प्रकार अल्लाह तआला ने लड़कियों को नापसंद करने और उन्हें जीवित गाड़ देने की कुप्रथा को मिटा दिया, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उस बुरी आदत को नाश कर दिया, और लड़कियों का पालन पोषण करने और उन के साथ भलाई करने की रूचि दिलाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“जिस ने दो लड़कियों का पालन-पोषण और देख भाल किया यहाँ तक कि वो बालिग हो गईं, तो क़ियामत के दिन वह मेरे साथ इस प्रकार आए गा - फिर आप ने अपनी दो अंगुलियों को मिलाकर दिखाया-” (मुस्लिम)

इस हदीस में इस बात की और संकेत है कि आदमी को लड़कियों की देख भाल और सुरक्षा करने से, यहाँ तक कि वो प्रौढ़ता और बुलूगत की उमर तक पहुँच जाएं, उंचा पद और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निकटता प्राप्त होगी।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“जिस के पास तीन लड़कियाँ, या तीन बहनें, या दो लड़कियाँ या दो बहनें हों और वह उनके साथ उत्तम रहन-सहन करे, और उनके बारे में अल्लाह से डरता

रहे, तो उस के लिए स्वर्ग है।" (इसे त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्त्री को शिक्षा देने के बड़े इच्छुक थे, आप ने उन के लिए एक दिन निश्चित कर दिया था जिस में वो एकत्र होती थीं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास आते और जो कुछ अल्लाह ने आप को सिखाया था उस की उन्हें शिक्षा देते थे।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्त्री को घर में बन्दी बनाकर नहीं रखा है जैसाकि कुछ लोगों की सोच है, बल्कि उस के लिए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति, रिश्ते दारों से मिलने और बीमारों की तीमार दारी करने के लिए घर से बाहर निकलना वैद्ध किया है। तथा अपने शरई -धार्मिक- पर्दा और हया -सतीत्व- की रक्षा करते हुए उस के लिए बाज़ार में खरीद व फरोख्त करना जाइज़ ठहराया है। इसी प्रकार उस के लिए मस्जिदों में जाना वैद्ध घोषित किया है और उसे मस्जिद जाने से रोकने से मना किया है। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“अपनी महिलाओं को मस्जिदों से न रोको।” (इसे अहमद और अबू दाउद ने रिवायत किया है।)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने महिलाओं के साथ भलाई करने पर बल दिया है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“महिलाओं के साथ भलाई करने की मेरी वसीयत का ध्यान रखो।” (बुखारी एंव मुस्लिम)

इस कथन का तक़ाज़ा यह है कि उनके साथ बढ़िया रहन-सहन रखा जाए, उनके अधिकारों का सम्मान किया जाए, उनकी भावनाओं का ध्यान रखा जाए और उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाया जाए।

पन्द्रहवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ और महिला–2

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पतियों को अपनी पत्नियों पर खर्च करने की रूचि दिलाई है, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जो भी खर्च करो गे, उस पर तुम्हें अज्र व सवाब मिले गा, यहाँ तक कि उस पर भी जो तुम अपनी बीवी को खिलाते पिलाते हो।" (बुखारी एंव मुस्लिम)

बल्कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने परिवार पर खर्च करना आदमी का सर्व श्रेष्ठ खर्च घोषित किया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"सर्व श्रेष्ठ दीनार वह है जो आदमी अपने बाल–बच्चों पर खर्च करता है।" (मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“आदमी अगर अपनी बीवी को कुवें से पानी पिला देता है, तो उसे उस पर अज्र व सवाब दिया जाता है।” (इसे अहमद ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस को इरबाज़ बिन सारिया ने सुना तो वो भाग कर पानी लाने के लिए गए, फिर अपनी बीवी के पास आए और उसे पानी पिलाया, और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो बात सुनी उस को बताया।

इस प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को महिलाओं के साथ अच्छे रहन-सहन, उनके साथ हमदर्दी करने, उन के साथ शफक़त व मेहरबानी का बर्ताव करने, उन्हे नाना प्रकार की भलाईयां पहुँचाने और परम्परा के अनुसार उन पर खर्च करने की शिक्षा दी।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह स्पष्ट कर दिया कि महिलाओ के साथ अच्छा रहन-सहन आदमी के आत्मा की शराफत और उसके स्वभाव की उदारता का प्रमाण है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“तुम में से सर्व श्रेष्ठ आदमी वह है जो अपनी औरतों के लिए सब से अच्छा हो।” (अहमद, त्रिमिज़ी)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदमी को अपनी बीवी से द्वेष -बुग्ज़- रखने से रोका है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

((**لا يفرك مؤمن مؤمنة، إن كره منها خلقا رضي منها خلقا آخر**)) [رواه مسلم].

कोई मोमिन पुरूष किसी मोमिन स्त्री से कपट (द्वेष) न रखे, यदि उसका कोई स्वभाव उसे अप्रिय हो, तो उसके किसी दूसरे स्वभाव से वह प्रसन्न हो जायेगा। (मुस्लिम)

इस प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्दों को इस बात का आदेश दिया है कि औरत के अन्दर मौजूद अच्छे गुणों और सराहनीय स्वभाओं को तलाश करें, औ त्रुटियों तथा अस्वीकारनीय पहलुओं से अपेक्षा करें। क्योंकि अस्वीकारनीय स्वभाव को खोजना और देर तक उस के पीछे पड़े रहना पति-पत्नि के बीच घृणा और द्वेष को जन्म देता है।

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों को मारने से रोका है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान हैः

"अल्लाह की बन्दियों को न मारो।" (अबू दाऊद)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों को कष्ट पहुँचाने वालों को धमकी दी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“ऐ अल्लाह मैं दो कमज़ोर वर्ग : यतीम –अनाथ– और स्त्री के अधिकार के अनुपालन को गुनाह और आपत्ति जनक घोषित करता हूं।” (अहमद, इब्ने माजा)

इसका अभिप्राय यह है कि जो इन दोनों वर्गों पर अत्याचार करे गा, अल्लाह तआला उसे वैद्ध क्षमा नहीं करे गा, बल्कि वह दुनिया व आखिरत में गुनाह और यातना का पात्र है।

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्दों को बीवियों के भेदों को प्रकाशित करने से रोका है, इसी प्रकार बीवियों को भी अपने पतियों के भेदों को खोलने से मनाही है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“अल्लाह के निकट क़ियामत के दिन सब से बुरा पद वाला वो व्यक्ति है जो अपनी पत्नि से सहवास करता है और वह उस से सहवास करती है, फिर व उस के भेद को प्रकाशित कर देता है।” (मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्त्री का सम्मान करने का एक रूप यह भी है कि आप ने पतियों को पत्नियों के बारे में बदगुमानी करने और उन की त्रुटियों को टटोलने से रोका है। जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं: **“पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्द को इस बात से रोका है कि वह रात के समय अचानक अपनी बीवी के पास आ धमके; ताकि वह उनकी चौकीदारी करे, या उनकी त्रुटियों को टटोले।”** (बुखारी एंव मुस्लिम)

जहां तक पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपनी बीवियों के साथ बर्ताव का संबंध है, तो वह अतयंत नर्मी और विनर्मता का बर्ताव था। अस्वद से वर्णित है वह कहते हैं : मैं ने आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछाः अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने बाल-बच्चों में क्या किया करते थे? उन्हों ने उत्तर दियाः अपने परिवार की सेवा में व्यस्त रहते थे, जब नमाज़ का समय हो जाता, तो नमाज़ के लिए उठ कर चले जाते थे। बुखारी

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बीवियों की प्रसन्नता ढूंढ़ते थे, और उन से मीठी-मीठी बातों और मनोहर वार्तालाप से सम्बोधित होते थे।

इस का एक उदाहरण आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह कहना हैः **"मैं तुम्हारी अप्रसन्नता और प्रसन्नता को पहचानता हूं।"** उन्हों ने पूछाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप इसे कैसे पहचानते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"जब तुम प्रसन्न होती हो तो कहती होः क्यों नहीं, मुहम्मद के पालनहार की क़सम, और जब तुम नाराज़ होती हो तो कहती होः नहीं, इब्राहीम के पालनहार की क़सम।"** तो उन्हों ने कहाः हां, अल्लाह की क़सम ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मैं केवल आप का नाम छोड़ती हूँ। (बुखारी एंव मुस्लिम)

अर्थात् दिल में आप की महब्बत बाक़ी रहती है।

इसी प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पत्नि खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को उनकी मृत्यु के पश्चात भी नहीं भुलाया। अनस रज़ियल्लाहु कहते हैंः जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कोई तोहफा आता तो आप फरमातेः **"इसे फलाँ औरत के पास ले कर जाओ, क्योंकि वह खदीजा की सहेली थी।"** (इसे तब्रानी ने रिवायत किया है)

यह है पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सम्मान महिला के लिए। तो ऐ महिला की स्वतंत्रता का गुहार लगाने वालो! तुम्हारा इस प्रकार के सम्मान से कितना संबंध है !

सोलहवीं सभा

आप ﷺ का पैग़म्बर बनाया जाना और अपनी क़ौम को दावत देना

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चलीस वर्ष की आयु में पैग़म्बर बनाए गए, जो कि सम्पूर्णता की आयु है। १७ रमज़ान को सोमवार के दिन हिरा नामी गुफा में आप के उपर जिब्रील अलैहिस्सलाम अवतरित हुए। जब आप पर वह्य उतरती थी तो आप पर यह स्थिति बहुत कठिन गुज़रती थी, आप का चेहरा बदल जाता और आप की पेशानी पर पसीना आ जाता।

जब फरिश्ता आप पर उतरा तो उस ने आप से कहाः पढ़ो। आप ने फरमायाः **"मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।"** आप कहते हैं कि इस पर उसने मुझे पकड़ कर इतना ज़ोर से दबाया कि मेरी शक्ति निचोड़ दी। फिर उसने मुझे छोड़ कर कहाः पढ़ो। मैं ने कहाः मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उसने दुबारा पकड़ कर दबोचा यहाँ तक कि मैं थक गया, फिर छोड़ कर कहाः पढ़ो, तौ मैं ने कहाः मैं पढ़ा हुआ नहीं

हूँ। उसने तीसरी बार मुझे पकड़ कर दबोचा, फिर छोड़ कर कहाः

﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ﴾ [العلق:١- ٣]

“पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, मनुष्य को खून के लोथड़े से पैदा किया। पढ़ो और तुम्हारा रब बहुत करम वाला (दानशील) है।” (सूरतुल अलक़:१-३)

इन आयतों के साथ अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पलटे, आप का दिल धक धक कर रहा था। खदीजा पुत्री खुवैलिद के पास आए और फरमायाः **“मुझे चादर उढ़ा दो, मुझे चादर उढ़ा दो।”** उनहों ने आपको चादर उढ़ा दिया यहाँ तक कि आप का भय समाप्त हो गया।

फिर खदीजा को पूरी बात बतलाकर कहाः **“मुझे अपनी जान का डर लगता है।”**

खदीजा ने कहाः हरगिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम ! अल्लाह तआला आप को रुसवा नहीं करेगा। आप सिला-रह्मी करते हैं, सच बालते हैं, कमज़ोरों का बोझ

उठाते हैं, दरिद्रों की व्यवस्था करते हैं, मेहमान की मेज़बानी करते हैं, हक़ की मुसीबतों पर सहायता करते हैं।

इसके बाद ख़दीजा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने चचेरे भाई वर्क़ा बिन नौफिल बिन असद बिन अब्दुल-उज़्ज़ा के पास ले गईं। वह जाहिलियत के काल में ईसाई हो गये थे और इब्रानी में लिखना जानते थे। चुनाँचे जितना अल्लाह तआला चाहता था इब्रानी भाषा में इन्जील लिखते थे। उस समय बहुत बूढ़े और अंधे हो चुके थे। उनसे खदीजा ने कहाः भाई जान! आप अपने भतीजे की बात सुनें।

वर्क़ा ने कहाः भतीजे ! तुम क्या देखते हो?

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो कुछ देखा था बयान कर दिया।

इस पर वर्क़ा ने कहाः यह तो वही नामूस है जिसे अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था। काश मैं उस समय शक्तिवान होता ! काश मैं उस समय ज़िन्दा होता ! जब आप की क़ौम आप को निकाल देगी।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम ने फरमायाः **“क्या यह लोग मुझे निकाल देंगे?”**

वर्क़ा ने कहाः हाँ, जब भी कोई आदमी इस तरह का पैग़ाम लाया जैसा तुम लाए हो तो उस से अवश्य दुश्मनी की गई और अगर मैं ने तुम्हारा समय पा लिया तो तुम्हारी भरपूर सहायता करूंगा।

इसके बाद वर्क़ा की शीघ्र ही मृत्यु हो गई।

फिर वह्य का सिलसिला बन्द हो गया। चुनांचे जितना अल्लाह ने चाहा अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ठहरे रहे आप कोई चीज़ नहीं देखते थे। जिस के कारण आप को शोक ग्रस्त हुए और वह्य के उतरने के बहुत अभिलाषी रहने लगे।

फिर एक दिन फरिश्ता आकाश और धरती के बीच एक कुर्सी पर प्रकट हुआ, आप को आश्वासन दिया और आप को शुभ सूचना दी आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं। जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे देखा तो आप उस से भयभीत हो गए और खदीजा के पास गए और कहाः **"मुझे चादर उढ़ा दो, मुझे कम्बल उढ़ा दो।"** तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारीः

"ऐ कपड़ा ओढ़ने वाले खड़ा हो जा और डरा दे, और अपने पालनहार की महानता का वर्णन कर और अपने कपड़े को पवित्र रखा कर।" (सूरतुल मुदस्सिरः १-४)

अल्लाह तआला ने इस आयत में आप को आदेश दिया है कि अपनी क़ौम को डराएं, उन्हें अल्लाह की ओर बुलाएं, अल्लाह तआला की महानता का वर्णन करें और अपने आप को पाप और अवज्ञा से पवित्र रखें।

चुनांचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस ज़िम्मेदारी को निभाने के लिए तैयार हो गए, और आप को विश्वास हो गया कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं, और आप ने अल्लाह की भर पूर आज्ञा पालन किया, अल्लाह की ओर छोटे और बड़े, आज़ाद और गुलाम, मर्दों और औरतों, काले और गोरे को इस्लाम की ओर दावत देने लगे। चुनांचे हर क़बीले के कुछ लोगों ने आप की दावत को स्वीकार किया। जिनकी दुनिया और आख़िरत में अल्लाह तआला कामयाबी और नजात चाहता था, चुनांचे वह प्रकाश और समझ बूझ के साथ इस्लाम में प्रवेश हुए। मक्का के बेवक़ूफ़ों ने उन्हें कष्ट और यातना का निशाना बनाया। अल्लाह तआला ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उनके चचा अबू तालिब के द्वारा सुरक्षा की। आप उनके बीच एक शरीफ और कुलीन आदमी थे जिनकी बात मानी जाती थी, वह लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामले में उनको कुछ कहने की हिम्मत नहीं करते थे। क्योंकि वह लोग जानते

थे कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत करते हैं, तथा अबू तालिब उन्हीं लोगों के धर्म पर थे। इसी कारण वह लोग उनके साथ धीरज से काम लेते थे और खुल्लम खुल्ला दुश्मनी का प्रदर्शन नहीं करते थे।

इब्नुल जौज़ी कहते हैं : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन साल तक गुप्त रूप से दावत देते रहे, फिर आप पर अल्लाह तआला का यह फर्मान उतराः

"जिस चीज़ का आप को आदेश दिया जा रहा है उस को खोल कर सुना दीजिए।" (सूरतुल हिज्रः९४**)**

चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दावत का एलान किया।

फिर जब अल्लाह तआला का यह फर्मान उतराः

"आप अपने निकटतम संबंधियों को डराईये।" (सूरतुश्शुअराः९४**)**

तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर निकले यहाँ तक कि सफा पहाड़ी पर चढ़ गए और आवाज़ लगाईः या सबाहाह! -हाय सुब्ह-, यह सुन कर लोगों ने कहा यह कौन आवाज़ लगा रहा है? कहा गया किः मुहम्मद! चुनांचे वह लोग आप के पास एकत्र हो गए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ‘‘ऐ फलां क़बीले के लोगो! ऐ फलां क़बीले के लोगो! ऐ अब्द मनाफ के बेटो! ऐ अब्दुल मुत्तलिब के बेटो!’’ वह लोग आप के पास इकट्ठा हो गए तो आप ने फरमायाः ‘‘तुम लोग ये बताओ कि अगर मैं सूचना दूं कि इस पहाड़ के दामन में घुड़सवार हैं जो तुम पर आक्रमण करने वाले हैं, तो क्या तुम मुझे सच्चा मानो गे।?’’ उन्हों ने उत्तर दियाः **‘‘हां, हम ने आप पर कभी झूठ का अनुभव नहीं किया है। आप ने फरमायाः अच्छा, तो मैं तुम्हें एक कठोर यातना से पहले डराने वाला हूँ।’’**

इस पर आप के चचा अबू लहब ने कहाः तेरा सर्वनाश हो! क्या तू ने हमें इसी लिए एकत्र किया था?! फिर वह उठ कर चला गया। इस पर अल्लाह तआला का यह फर्मान उतरा :

‘‘अबू लहब के दोनों हाथ नष्ट हों और वह स्व्यं नष्ट हो।’’ सूरत के अन्त तक।’’ (बुखारी एंव मुस्लिम)

सत्तरहवीं सभा

आप ﷺ का कष्ट पर धैर्य करना

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दावत के मैदान में उतर पड़े, उपदेश -नसीहत- के कठिन मार्ग पर चलना शुरू कर दिया और निर्देश के मैदान में कूद पड़े। लोगों को इस बात की ओर बुलाया कि अकेले अल्लाह की उपासना करें जिसका का कोई साझी नहीं, और उन के बाप दादा जिस शिर्क और कुफ्र, मूर्ति पूजा और पत्थरों को पुकारने में लिप्त थे उसे छोड़ दें। तथा उन्हें दुष्ट बातों और हराम -अवैध एंव वर्जित- कामो को छोड़ देने का आदेश दिया। कुछ लोगों ने आप पर विश्वास किया और अधिकांश लोगों ने आप को झुठला दिया।

यद्यपि अल्लाह तआला ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आप के चचा अबू तालिब के द्वारा सुरक्षा की, किन्तु फिर भी आप को कष्ट पहुँचाया गया, आप का घेराव किया गया और आप को बहुत अधिक तंग किया गया। चुनांचे पैग़म्बर बनाए जाने के सातवें वर्ष पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चचा अबू तालिब और बनू हाशिम और बनू अब्दुल मुत्तलिब के सभी मुसलमानों

एंव काफिरों -अबू लहब के अतिरिक्त- के साथा घाटी में दाखिल हुए। जब ये लोग घाटी में दाखिल हुए तो क़ुरैश इनका मुहासरा करने पर एक मत होगए, और यह कि कभी उन के लिए संधि को स्वीकार नही करें गे। उन से बाज़ार को काट दिया और जीविका भी रोक दी, या तो वो लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके हवाले कर दें और वो उन को क़त्ल कर दें। तथा उन्हों इस बारे में एक चिट्ठा भी लिखा जो इस अत्याचार और अन्याय पर आधारित था और उसे काबा के अन्दर लटका दिया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घाटी में दाखिल होने के बाद अपने साथियों को हब्शा की ओर हिज्रत कर जाने का आदेश दिया, क्योंकि उन पर कष्ट और यातना बहुत बढ़ गया था- और यह हब्शा की ओर दूसरी हिज्रत है-, चुनांचे लग भग ८३ मर्दों और १८ औरतों ने हिज्रत किया, तथा यमन के मुसलमानों ने भी उन्हीं लोगों का रूख किया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लग-भग तीन साल घाटी में कठोर संघर्ष और भूख में बिताए, उनके पास कोई चीज़ नहीं पहुँचती थी, हां छुप छुपाकर कभी कोई चीज़ पहुँच जाती थी। यहाँ तक उन्हें पेड़ों के पत्ते खाने पड़े। नबुव्वत के दसवें वर्ष तक यही स्थिति बाक़ी रही।

जब कि कुरैश के कुछ लोग खड़े हुए और सहीफा को भंग कर दिया। फिर अललाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और जो लोग आप के साथ थे बाहर निकले।

उसी समय आप की पत्नी खदीजा का देहान्त हो गया, और उनकी मृत्यु के लग भग बीस दिन बाद आप के चचा अबू तालिब भी चल बसे। उनकी मृत्यु के बाद कुरैश ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसा कष्ट पहुँचाया जिसकी वो लोग अबू तालिब के जीवन में शक्ति नहीं रखते थे, आप पर उन लोगों की यातना और आप के विरूद्ध उन का हठ बढ़ गया। [१]

बुखारी एंव मुस्लिम में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खाना काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे और अबू जह्ल और उसके कुछ साथी बैठे हुए थे। अभी कल ही कुछ उंट काटे गए थे, इतने में अबू जह्ल कहता है: तुम में से कौन है जो बनी फलाँ के ऊँट की ओझड़ी ले कर आए और जब मुहम्मद सज्दा करें तो उनकी पीठ पर डाल दे? इस पर क़ौम का सब से अभागा आदमी उठा

---

[1] लुबाबुल-खियार फी सीरतिल मुख्तार प० ३७-४०

और ओझड़ी ले कर आया। जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सज्दा किया तो उसे आपकी पीठ पर दोनों कन्धे के बीच डाल दिया। फिर वह लोग आपस में हंसने लगे और हंसी के मारे एक दूसरे पर गिरने लगे। फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु आईं और आप की पीठ से ओझड़ी उठा कर फेंकीं और उन लोगों को बुरा भला कहने लगीं। जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी नमाज़ पूरी कर चुके तो अपनी आवाज़ बुलन्द की, फिर उन पर बद्दुआ करते हुए तीन बार फरमायाः **"ऐ अल्लाह! तू कुरैश को पकड़ ले।"** जब उन्हों ने आप की आवाज़ सुनी तो उनकी हंसी चली गई और वह आप की बद्दुआ से भयभीत हो गए। फिर आप ने फरमायाः **"ऐ अल्लाह! अबू जह्ल बिन हिशाम, उत्बी बिन रबीअह, शैबह बिन रबीअह, वलीद बिन उत्बह, उमैया बिन खलफ और उक़्बह बिन अबी मुऐत को पकड़ ले।"**

अब्दुल्लाह बिन मस्उद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः उस अस्तित्व की सौगन्ध जिस ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सत्य के साथ भेजा है, मैं ने देखा कि जिन लोगों के नाम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

गिनाए थे, वो सब बद्र के युद्ध के दिन मक़्तूल पड़े थे, फिर उन्हें घसीट कर बद्र के कुंवे में डाल दिया गया।

बुखारी में है कि एक दिन उक़्बा बिन अबी मुऐत ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोंढे को पकड़ लिया और अपने कपड़े को आप की गर्दन में डाल कर अत्यंत कठोरता से आप के गले को घूंटा। इतने में अबू बक्र आ गए और उसे आप से हटाया और कहने लगेः क्या तुम एक आदमी को इस लिए क़त्ल करना चाहते हो कि वह कहता है कि मेरा पालनहार अल्लाह है?!

जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कष्ट बहुत बढ़ गया तो आप ताईफ की और निकल पड़े और सक़ीफ के क़बीलों को इस्लाम की ओर बुलाया, किन्तु उनकी ओर से केवल हठ, ठठोल और कष्ट का सामना हुआ। उन्हों ने आप पर पत्थर बरसाए यहाँ तक कि आप की एड़ियों को खून आलूद कर दिया। चुनांचे आप ने मक्का वापस लौटने का निर्णय कर लिया और रास्ते में -क़र्नुस्सआलिब नामी स्थान के पास- पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सिर उठाया तो क्या देखा कि बादल का एक टुकड़ा आप पर छाया किए हुए है। आप ने ध्यान से देखा तो उसमें जिब्रील थे। उन्हों ने आप को पुकार कर कहाः आप की क़ौम ने

आप से जो बात कही और आप को जो जवाब दिया अल्लाह ने उसे सुन लिया है। उसने आप के पास पहाड़ का फरिश्ता भेजा है ताकि आप उनके बारे में उसे जो आदेश चाहें, दें। उसके बाद पहाड़ के फरिश्ते ने आप को आवाज़ दी और आप को सलाम करने के बाद कहाः ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप की क़ौम ने आप से जो बात कही है अल्लाह ने उसे सुन लिया है और मैं पहाड़ का फरिश्ता हूं, आप के पालनहार ने मुझे आप के पास भेजा है ताकि आप मुझे उन के बारे में जो चाहें आदेश दें। अगर आप चाहें कि मैं इन को -मक्का के- दो पहाड़ों के बीच कुचल दूँ (तो ऐसा ही होगा)। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **''नहीं, बल्कि मुझे आशा है कि अल्लाह तआला इनकी पीठ से ऐसी नस्ल पैदा करे गा जो केवल एक अल्लाह की इबादत (उपासना) करे गी और उसके साथ किसी चीज़ को साझी नहीं ठहराए गी।''** (सहीह बुखारी एंव सहीह मुस्लिम)

अठारहवीं सभा

अल्लाह की अपने पैग़म्बर ﷺ की सुरक्षा

अल्लाह तआला ने फरमायाः

“ऐ पैग़म्बर जो कुछ भी आप की ओर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है उस का प्रचार-प्रसार कीजिए। यदि आप ने ऐसा न किया तो आप ने अपने पालनहार के संदेश को नहीं पहुँचाया और आप को अल्लाह तआला लोगों से बचा ले गा।” (सूरतुल माईदा५ः६७ **)**

इब्ने कसीर फरमाते हैंः “अर्थात आप मेरे संदेश का प्रचार-प्रसार कीजिए और मैं आप के दुश्मनों के विरूद्ध आप का रक्षक, आप का हिमायती और आप का सहायक हूँ तथा आप को उन पर विजय प्रदान करने वाला हूं। अतः आप भयभीत और शोक ग्रस्त न हों, उन में से कोई भी आप को कदापि कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। इस आयत के उतरने से पहले पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रखवाली की जाती थी।”

अल्लाह की अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुरक्षा का एक रूप यह घटना है जिसे अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि -एक दिन- अबू जह्ल ने कहाः क्या मुहम्मद आप लोगों के सामने अपना चेहरा खाक आलूद करता है -मिटटी में रगड़ता है-?

उत्तर दिया गयाः हां। उस ने कहाः लात व उज़्ज़ा की क़सम! यदि मैं ने उसे ऐसा करते हुए देख लिया तो उस की गर्दन रौंद दूं गा और उसका चेहरा मिट्टी पर रगड़ दूं गा। इस के बाद उसने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देख लिया और इस विचार से चला कि आप की गर्दन रौंद देगा। किन्तु लोगों ने अचानक क्या देखा कि वह अपनी ऐड़ी के बल पीछे पलट रहा है और अपने हाथ से बचाव कर रहा है। लोगों ने कहाः तुम्हें क्या हुआ?

उस ने कहाः मेरे और उसके बीच आग की एक खाई है, हवलनाकियां हैं और पंख हैं।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **“यदि वह मेरे निकट आता तो फरिश्ते उस का एक एक अंग उचक लेते।”** (मुस्लिम)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अबू जह्ल ने कहाः यदि मैं ने मुहम्मद को काबा के पास नमाज़ पढ़ते हुए देख लिया तो उस की गर्दन रौंद दूंगा। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बात की सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"यदि वह ऐसा करता तो फरिश्ते उस को धर पकड़ते।"** (बुखारी)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह से वर्णित है कि उन्हों ने कहाः पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने युद्ध किया तो खसफा से लड़ाई की, उन्हों ने मुसलमानों को गफलत की हालत में देखा तो एक आदमी जिस का नाम ग़ौरस बिन हारिस था आया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास खड़ा हो गया और कहाः **"आप को मुझ से कौन बचाए गा?"** तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः **"अल्लाह तआला।"** इस पर उस के हाथ से तलवार गिर गई और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे उठा लिया और फरमायाः **"अब मुझसे तुझे कौन बचाए गा?** उस ने कहाः आप बेहतरी लेने वाले बनिए। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः **"क्या तू गवाही देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं और मैं अल्लाह का पैग़म्बर हूँ?"** उस

ने कहाः नहीं, किन्तु मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आप से लड़ाई नहीं करूंगा और न ही उन लोगों के साथ रहूँ गा जो आप से लड़ाई करते हैं। आप ने उसे छोड़ दिया, उस ने वापस लौट कर कहाः मैं तुम्हारे पास सर्व श्रेष्ठ मनुष्य के पास से आ रहा हूँ। (हाकिम)

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैंः एक ईसाई आदमी था जो मुसलमान हो गया, वह सूरा बक़रह और आल-इम्रान पढ़ता था और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए लिखता था। फिर वह ईसाई हो गया और कहता रहता थाः जो कुछ मैं ने लिखा उसके अतिरिक्त मुहम्मद कुछ नहीं जानते। चुनांचे अल्लाह तआला ने उसे मृत्यु दे दी, -उस के लोगों ने- उसे दफन कर दिया, किन्तु सुब्ह होते ही देखा गया कि धरती ने उसे बाहर फेंक दिया है। उन्हों ने कहाः ये मुहम्मद और उनके साथियों का काम है; जब वह उन के पास से भाग आया तो उन्हों ने हमारे आदमी की क़ब्र खोद कर उसे फेंक दिया। उन्हों ने उस के लिए गढ़ा खोदा और उसे गहरा कर दिया, किन्तु सुब्ह होते ही देखा गया की उसकी लाश को ज़मीन ने बाहर फेंक दिया है। उन्हों ने कहाः ये मुहम्मद और उनके साथियों का काम है कि हमारे साथी को क़ब्र खोद कर निकाल दिया है। चुनांचे उन्हों ने अपने साथी को दफन

करने के लिए गढ़ा खोदा और उसे जितना गहरा कर सकते थे, किया। किन्तु सुबूह क्या देखते हैं कि ज़मीन ने उसे बाहर फेंक दिया है। अब उन्हें विश्वास हो गया कि ये किसी मनुष्य का काम नहीं है और उसे फेंक दिया। (बुख़ारी)

अल्लाह की अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुरक्षा का एक रूप यह भी है कि उस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस हत्या के प्रयास से बचा लिया जिस का कुरैश ने आप के विरूद्ध षड़यंत्र रचा था। वो लोग इस बात पर सहमत हुए थे कि हर क़बीले से एक बांका जवान चुना जाए, फिर इन में से हर एक को एक तेज़ तलवार दिया जाए, और ये सब अल्लाह के पैग़म्बर को इस प्रकार तलवार मार कर क़त्ल कर दें जैसे एक ही आदमी ने तलवार मारी हो। इस तरह उनका खून सारे क़बीलों में बिखर जाए गा और बनू अब्द मनाफ सारे अरब से जंग नहीं कर सकें गे। चुनांचे जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह का अदेश ले कर आए और आप को मुशरिकों की साज़िश से अवगत कराया। तथा आप को वह रात अपने बिस्तर पर न बिताने का हुक्म दिया और बतलाया कि अल्लाह तआला ने आप को हिज्रत की अनुमति प्रदान कर दी है।

तथा इसी सुरक्षा का एक नमूना यह भी है कि अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुराक़ा बिन मालिक की चाल से उस समय सुरक्षित रखा जबकि आप हिज्रत के रास्ते में थे।

तथा इसी प्रकार अल्लाह तआला ने उस समय अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रक्षा की जब आप गुफा में थे। चुनांचे अबू बक्र सिददीक़ ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! अगर उन में से कोई अपने पांव की जगह पर निगाह डाले गा तो हमें अवश्य देख लेगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"ऐ अबू बक्र! तुम्हारे उन दो आदमियों के बारे में क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है।"**

इब्ने कसीर कहते हैंः "अल्लाह तआला की अपने पैग़म्बर की रक्षा और सुरक्षा का एक रूप यह भी है किः उसने आप को मक्का वालों तथा उसके दिग्गजों, उसके हासिदों, उसके हठ दिखाने वालों से आप की रक्षा की, जबकि वो आप से सख़्त दुश्मनी और बुग्ज़ रखते थे, रात-दिन आप से लड़ते रहते थे, अल्लाह तआला ने अपनी महान शक्ति और हिकमत से इस के लिए महान कारण उत्पन्न कर दिए। चुनांचे दावत के आरम्भ में आप के चचा अबू तालिब के द्वारा आप की रक्षा की। क्योंकि वह क़ुरैश के

अन्दर एक बड़े सरदार थे जिनकी बात मानी जाती थी, अल्लाह तआला ने उन के दिल में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए तबई महब्बत डाल दी, -शरई महब्बत नहीं-, और यदि वह मुसलमान हो जाते तो कुरैश के कुफ्फार और उन के सरदार उन पर जसारत कर सकते थे, लेकिन चूंकि वह उनके धर्म पर ही थे और दोनों कुफ्र के अन्दर बराबर थे, इस लिए उनके दिल में अबू तालिब की हैबत और सम्मान था।

जब अबू तालिब की मृत्यु हो गई तो मुशरिकों ने आप को कुछ कष्ट पहुँचाया, फिर अल्लाह तआला ने आप की हिमायत के लिए -मदीना के- अन्सार को लगा दिया और उन्हों ने इस्लाम पर आप से बैअत की और यह कि आप उनके घर मदीना स्थानान्तरित हो जाएं। जब आप उनके पास चले गए तो उन्हों ने हर चीज़ से आप की प्रतिरक्षा की। तथा जब भी मुशरिकों और अहले किताब -यहूदियों- में से किसी ने आप को हानि पहुँचाने की इच्छा की तो अल्लाह तआला ने उस का उपाय किया और उसकी चाल को उसी के ऊपर लौटा दिया।[१]

---

[1] तफसीर इब्ने कसीर २-१०८-११० संछिप्त के साथ।

उन्नीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की महब्बत

सर्व सृष्टि के नायक पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत ईमान -अल्लाह पर विश्वास- का लाज़मी -आवश्यक- तत्व है। एक मुसलमान अपने पैग़म्बर से महब्बत कैसे नहीं करे गा जबकि आप ही प्रकाश एंव ईमान के मार्ग की ओर उसकी हिदायत और मार्गदर्शन का कारण, तथा कुफ्र और आग से बचाव का कारण हैं।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान हैः

''तुम में से कोई भी व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता यहाँ तक कि मैं उस के निकट बाल-बच्चों, उसके माता पिता और समस्त लोगों से अधिक प्रिय -महबूब- हो जाऊँ।'' (बुखारी एंव मुस्लिम)

बल्कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत मनुष्य के अपने प्राण से महब्बत करने से भी आगे बढ़ जाती है, जैसाकि उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहाः ''ऐ

अल्लाह के पैग़म्बर! आप मेरे निकट मेरी जान के सिवाय हर चीज़ से अधिक महबूब हैं। इस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः **“नहीं, उस अस्तित्व की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है यहाँ तक कि मैं तुम्हारे निकट तुम्हारी जान से भी अधिक महबूब न हो जाऊँ।”** तो उमर ने कहाः अल्लाह की क़सम अब आप मेरे निकट मेरे जान से भी अधिक महबूब हैं, तब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **“अब ऐ उमर।”** (बुखारी)

अर्थातः अब तुम समझे और वह बात कही जो अनिवार्य थी।

हर आदमी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत का दावा करता है, बिदअती और अपनी इच्छा पर चलने वाले -खाहिश परस्त- पैग़म्बर से महब्बत का दावा करते हैं, क़ब्रों के पुजारी, जादूगर एंव शोबदा बाज़ महब्बत का दावा करते हैं, बल्कि बहुत से पापी और दुष्ट कर्मी भी महब्बत का दावा करते हैं। किन्तु मामला केवल महब्बत के दावा तक सीमित नहीं है, बल्कि मामला दरअसल महब्बत की हक़ीक़त -वास्तविकता और यथार्थता- का है। क्योंकि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत का आवश्यक और लाज़मी तत्व यह

है किः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस बात का आदेश दिया है उस में आप की फर्मांबरदारी की जाए, आप ने जिस से रोका है उस से बचाव किया जाए और अल्लाह की इबादत -उपासना- आप की शरीअत के अनुसार की जाए, न कि बिदआत और खाहिशे-नफ्स से। इसी कारण पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हैः

“मेरी सारी उम्मत जन्नत में जाए गी सिवाय उस के जिस ने इन्कार किया।” लोगों ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! इन्कार करने वाला कौन है? आप ने फरमायाः **“जिस ने मेरा आज्ञा पालन किया वह जन्नत में जाए गा, और जिस ने मेरी अवज्ञा की उस ने इन्कार किया।”** (बुखारी एंव मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत पैग़म्बर का जन्म दिवस मनाने और मातम करने मे नहीं है, और न ही आप के विषय में गुलू और अनुचित प्रशंसा के गीत गाने में है। बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत इस में है कि आप की सुन्नत पर अमल किया जाए, आपकी शरीअत -धर्म-शास्त्र- का सम्मान किया जाए, आप की सुन्नत को ज़िन्दा किया जाए, आप का और आप की सुन्नत का दिफा -प्रतिरक्षा- किया

जाए, आप की सूचना एंव समाचार की पुष्टि की जाए और उसके विषय में बात करते समय आप की हैबत तारी किया जाए, जब भी आप का चर्चा हो तो आप पर दरूद भेजी जाए, आप की शरीअत में कोई नयी चीज़ न निकाली जाए, आप के सहाबा से महब्बत की जाए, उनकी हिमायत की जाए और उनकी विशेषताओं को जाना जाए, आप की सुन्नत से दुश्मनी रखने वाले, या आप की शरीअत का विरोध करने वाले, या शरीअत को उठाने वालों और उस को बयान करने वालों का अपमान करने वाले से बुग्ज़ रखा जाए; चुनांचे हर वह आदमी जो उपरोक्त बातों में से किसी चीज़ का विरोध करता है तो वह अपने विरोध की मात्रा में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत से दूर है।

उदाहरण स्वरूप पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है: **“जिस ने हमारे इस -धर्म के- मामले में कोई ऐसी चीज़ निकाली जो उस में से नहीं है तो वह अस्वीकृति है।”** (बुखारी एंव मुस्लिम)

तथा आप फरमाते हैं : **“तुम धर्म मे नवीन अविष्कार कर ली गई चीज़ो से बचो, क्यों कि धर्म में नयी पैदा कर ली गई चीज़ बिद्अत है।”** (इसे अहलुस्सुनन ने रिवायत किया है।)

बिद्अतों से बचने की इस चेतावनी के बावजूद कुछ लोग आते हैं और अल्लाह तआला के दीन में ऐसी चीज़े अविष्कार करते हैं -निकालते और पैदा करते हैं- जिन का दीन से कोई संबंध नहीं है। तथा इन बिद्अतों को अच्छा -सत्यकर्म- समझते हैं, बल्कि यह गुमान करते हैं कि ये पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत के प्रमाण हैं, बल्कि आप पर झूठ बोलते हैं, हदीस गढ़ कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर मन्सूब कर देते हैं और कहते हैं किः हम ने आप के लिए झूठ बोला है, आप के खिलाफ झूठ नहीं बोला है। यह बहुत बड़ा बुहतान और सब से बदतरीन गुमराही है, क्योंकि अल्लाह की शरीअत संपूर्ण है इन लोगों के झूठ और मिथ्या की उसे कोई आवश्यकता नहीं।

इसी प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को बुरा कहने से रोका है, आप ने फरमायाः

“मेरे सहाबा को गाली न दो -उन्हें बुरा-भला न कहना-, अगर तुम में से कोई आदमी उहुद पहाड़ के बराबर सोना -अल्लाह के रास्ते में- खर्च कर दे, तब भी वह उनके एक मुदद -५१० ग्राम-, बल्कि आधे मुदद के बराबर भी नहीं पहुँच सके गा।” (बुखारी एंव मुस्लिम)

इस के बावजूद कुछ लोग आते हैं और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों को बुरा-भला कहते और उन्हें गाली देते हैं, अबू बक्र एंव उमर जैसे सहाबा पर धिक्कार करते हैं, पाकदामन मोमिनों की मां आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर ऐसा आरोप लगाते हैं जिस से अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी किताब -कुर्आन - में बरी और पवित्र घोषित किया है और इस पर वो लोग यह गुमान करते हैं कि वो ऐसा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत और आप के अहले-बैत की हिमायत और प्रतिरक्षा के कारण करते हैं।

इसी प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी प्रशंसा मे सीमा पार कर जाने से रोका है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

‘‘मेरी इस प्रकार बढ़ा चढ़ा कर प्रशंसा न करो जैसाकि ईसाईयों ने मर्यम के बेटे -ईसा अलैहिस्सलाम- के साथ किया कि उन की प्रशंसा में सीमा लांघ गए, मैं उस का बन्दा -उपासक, दास- हूं। अतः तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल -ईश्दूत, पैग़म्बर- कहो।’’ (बुखारी)

इस स्पष्ट निषेध के बावजूद, कुछ लोग आते हैं और यहूदियों एंव ईसाईयों के तरीक़ों की पैरवी करते हैं, और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे गुणों और विशेषताओं से विशिष्ट करते हैं जो केवल अल्लाह सुब्हानहु व तआला के लिए योग्य हैं। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रोज़ी, बीमारियों की शिफायाबी, तबाहियों से नजात और इन के अतिरिक्त ऐसी चीज़ो का प्रश्न करते हैं जो केवल अल्लाह तआला से मांगी जा सकती हैं। फिर भी यह गुमान करते हैं कि ये पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत के प्रमाण हैं। जबकि उचित बात यह है कि ये जहालत, मूर्खता, शिर्क तथा अल्लाह और उसके पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुखालफत के प्रमाण हैं।

बीसवीं सभा

ईश्दूतत्व का महानतम प्रमाण

हमारे सन्देष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईश्दूतत्व -पैग़म्बर होने- का सब से महान प्रमाण, महान कुरआन है, यह वो पुस्तक है जिस के द्वारा अल्लाह तआला ने अरब तथा उन के अतिरिक्त अन्य लोगों को -क़ियामत के दिन तक- यह चैलेंज किया है कि वो इस के समान कोई ग्रन्थ गढ़ कर लाएं। अल्लाह तआला ने फरमायाः

﴿وَإِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَى عَبْدِنَا فَأْتُواْ بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ وَادْعُواْ شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ﴾ [البقرة:٢٣]

‘‘हम ने जो कुछ अपने बन्दे पर उतारा है उस में अगर तुम्हें सन्देह हो और तुम सच्चे हो तो उस जैसी एक सूरत तो बना लाओ, तुम्हें अधिकार है कि अल्लाह के अतिरिक्त अपने सहयोगियों को भी बुला लो।’’ (सूरतुल-बक़राः २३)

तथा फरमायाः

“क्या ये लोग यह कहते हैं कि आप ने इसे गढ़ लिया है? आप कह दीजिए कि तो फिर तुम इस के समान एक ही सूरत लाओ, और अल्लाह के सिवाय जिन जिन को तुम बुला सको बुलला लो यदि तुम सच्चे हो।” (सूरत यूनुस : ३८)

अल्लामा इब्नुल जौज़ी फरमाते हैंः कई प्रकार से क़ुर्आन एक चमत्कार है और उस के समान कुछ भी प्रस्तुत करने से मनुष्य बेबस है :

प्रथम : संछिप्त एंव दीर्घ रूप में यह फसाहत एंव बलाग़त पर आधारित है, एक स्थान पर किसी कहानी को दीर्घ रूप से उल्लेख किया गया है, फिर उसी कहानी को सार रूप से दोहरा दया गया है, परन्तु इस से पहली कहानी के अर्थ में बिगाड़ नहीं आता है।

द्वितीय : बात-चीत की शैली और शेर के वज़न से बिल्कुल अलग थलग है, और इन्हीं दोनों अर्थों के द्वारा अरब को चैलेंज किया गया था। चुनांचे वो लोग बेबस और लाचार हो गए बौर आश्चर्य चकित रह गए और इस के प्रतिष्ठा को स्वीकार कर लिए। यहाँ तक कि

वलीद बिन मुग़ीरह कह पड़ा : अल्लाह की क़सम इसमें मिठास है और उस पर रौनक़ है।

तीसराः यह पिछली उम्मतों के समाचार और ईश्दूतों की जीवनी पर आधारित है जिन्हें अहले किताब -यहूदी एंव ईसाई- जानते थे। जबकि इन समाचारों को लाने वाला अपनढ़ था लिखन पढ़ना नहीं जानता था, और न ही उसे यहूदी विद्वानों और काहिनों के साथ उठने बैठने का कोई ज्ञान ही था।

अरबों में से जो लिखना पढ़ना जानता था और समाचार का ज्ञान रखने वाले विद्वानों के साथा उठता बैठता था, वह भी वहां तक नहीं पहुँच सका जिस की सूचना क़ुर्आन ने दी है।

चौथा : क़ुर्आन ने भविष्य में घटने वाली प्रोक्ष बातों की सूचना दी है जो इस बात का तर्क और प्रमाण हैं कि वह सच्चा है, क्योंकि वह हूबहू उसी प्रकार घटित हुई हैं जैसे उस ने सूचना दी थी, उदाहरण स्वरूप क़ुर्आन का यहूद से यह कहनाः

“यदि तुम सच्चे हो तो मौत की कामना करो।” (सूरतुल बक़रह२ :६४)

फिर उसके बाद ही उस ने कहाः

“वह कदापि मौत की कामना नहीं करें गे।” (सूरतुल बक़रा२ :९५)

चुनांचे उन्हों ने मौत की तमन्ना नहीं की।

तथा कुर्आन ने कहा :

“इस के समान एक सूरत ही ले आओं।” (सूरतुल बक़रह२: २३)

फिर कहा कि :

“तुम कदापि नहीं ला सको गे।” (सूरतुल बक़रह२: :२४)

चुनांचे वह नहीं ला सके।

तथा कुर्आन ने फरमायाः

“आप काफिरों से कह दीजिए की निकट ही तुम पराजित हो गे।” (सूरत आल-इम्रान३ :१२)

चुनांचे वह पराजित किए गए।

तथा कुर्आन ने फरमायाः

“ अल्लाह ने चाहा तो तुम सुरक्षित अवस्था में अवश्य रूप स मस्जिदे हराम में प्रवेश करो गे।” (सूरतुल फत्ह:२७)

और वो लोग प्रवेश किए।

अबू लहब के बारे में क़ुर्आन ने फरमाया:

﴿ سَيَصْلَى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ﴾ [المسد:١- ٥]

"वह शीघ्र ही भड़कने वाली आग में जाये गा। और उसकी बीवी भी (जाये गी) जो लकड़ियाँ ढोने वाली है, उस की गर्दन में मूंज की बटी हुई रस्सी होगी।" (सूरतुल-मसद: १-५)

यह इस बात का प्रमाण है कि वो दोनों कुफ्र की अवस्था में मरें गे। और ऐसे ही हुआ।

पांचवाँ : क़ुर्आन करीम अन्तर्विरोध और प्रतिवाद से सुरक्षित है। -अल्लाह तआला का फर्मान है-

"यदि वह -क़ुर्आन - अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की और से होता तो वह उस में बहुत अधिक मतभेद और विरूद्धता पाते।" (सूरतुन-निसा : ८२)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया:

"हम ने ही ज़िक्र -क़ुर्आन - को उतारा है और हम ही उस की सुरक्षा करने वाले हैं।" (सूरतुल हिज्र :६)

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहुअ अन्हु से वर्णित है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

“प्रत्येक ईश्दूत को कुछ न कुछ चमत्कार प्रदान किए गए जिस पर मनुष्य ईमान लाए, और मुझे जो चमत्कार प्रदान किया गया, वह वह्य जो अल्लाह ने मेरी ओर -वह्य- उतारी है, मुझे आशा है कि मैं प्रलय के दिन उन में सब से अधिक अनुयायियों -पैरूकारों- वाला हूँ गा।” (बुख़ारी एंव मुस्लिम)

इब्ने अक़ील कहते हैं : कुर्आन के चमत्कार में से एक यह भी है कि किसी के लिए सम्भव नहीं है कि वह एक आयत भी ऐसी निकाल सके जिस का अर्थ किसी पिछली बात से लिया गया हो। क्योंकि लोग निरंतर एक दूसरे का भेद उघारते रहते हैं, कहा जाता है कि : मुतनब्बी ने बोहतरी से लिया है!

इब्नुल जौज़ी कहते हैं : मैं ने दो अनोखे अर्थ निकाले हैंः

प्रथम : पिछले ईश्दूतों के चमत्कार उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गए। यदि आज कोई अधर्मी कहे कि : मुहम्मद और मूसा अलैहिमस्सलाम की सच्चाई का प्रमाण क्या है?

और उसे उत्तर दिया जाए किः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए चांद के दो टुकड़े हो गए और मूसा अलैहिस्सलाम के लिए समुद्र फट गया, तो वह कहे गाः यह असम्भव है।

अतः अल्लाह तआला ने इस कुर्आन को मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए चमत्कार बना दिया जो सदैव उपस्थित रहने वाला है; ताकि आप की मृत्यु के बाद आप की सच्चाई का प्रमाण रहे। तथा उसे पिछले ईश्दूतों की सच्चाई का प्रमाण बना दिया है, क्योंकि वह उनकी पुष्टि करने वाला और उनके हालात की सूचना देना वालला है।

द्वितीयः कुर्आन ने अहले किताब -यहूद एंव नसारा- को इस बात से सूचित किया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुण-विशेषण उन के पास तौरात एंव इन्जील में लिखे हुए हैं, और हातिब रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए ईमान की गवाही दी, औ आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बराअत -पाक दामनी, सतीत्व- की गवाही दी। यह सब ग़ैबी -प्रोक्ष- बातों पर गवाहियां हैं। यदि कुर्आन और इन्जील में आप के गुणों का उल्लेख न होता, तो यह बात उन्हें कुर्आन पर ईमान लाने से घृणित कर देती, और यदि हातिब

और आईशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपने बारे में उस के विपरीत कोई चीज़ जानते जिस की क़ुर्आन ने शहादत दी है, तो वह दोनों इस्लाम से दूर भागते।''[1]

[1] अल वफा पृ०२६७-२७३ संछिप्त के साथ।

इक्कीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की उपासना

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत अधिक उपासना - नमाज़, रोज़ा, ज़िक्र, प्रार्थना और इन के अतिरिक्त अन्य इबादतें करने वाले थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कोई अमल करते थे तो उस को निरंतर बरक़रार रखते थे और उसकी सुरक्षा करते थे। आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है वह कहती हैं कि: **"अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रात की नमाज़ किसी तकलीफ आदि के कारणवश छूट जाती थी, तो आप उसे दिन में बारह रक्‌अत पढ़ते थे।"** (मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ियामुल्लैल -तहज्जुद- नहीं छोड़ते थे, आप रात को नमाज़ पढ़ते थे यहाँ तक कि आप के पैर फट जाते। जब आप से इस बारे में कहा गया तो आप ने फरमया: " **क्या मैं शुक्र करने वाला बन्दा न बनूं।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

हुज़ैफा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : मैं ने एक रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, तो आप ने सूरतुल-बक़रह की तिलावत शुरू की। मैं ने सोचा कि आप सौ आयतें पढ़ कर रुकूअ करें गे। फिर आप पढ़ते रहे। मैं ने अपने दिल में कहा कि आप उसे पूरी एक रक्अत में पढ़ें गे, आप ने उसे पूरा कर के फिर सूरतुन-निसा पढ़ना आरम्भ कर दिया और उसे पूरा पढ़ लिया, फिर आप ने सूरत आल-इम्रान शुरू किया और उसे पढ़ डाला। आप ठहर-ठहर कर पढ़ते थे। किसी तस्बीह आयत से गुज़रते तो तस्बी ह पढ़ते थे और यदि किसी सवाल वाली आयत से गुज़रते तो सवाल करते थे, और अगर पनाह मांगने वाली आयत से गुज़रते तो पनाह मांगते थे, फिर आप ने रूकूअ किया और यह दुआ पढ़ने लगेः "सुब्हाना-रब्बियल-अज़ीम"। आप का रूकूअ आपके क़ियाम -खड़े होने- के लग भग था। फिर आप ने "समिअल्लाहु लिमन हमिदह, रब्बना लकल हम्द" कहा, फिर आप ने लम्बा क़ियाम किया जो आप के रूकूअ के लग भग था, फिर आप ने सज्दा किया और यह दुआ पढ़ी : "सुब्हाना रब्बियल आला", आप का सज्दा आप के क़ियाम के लग भग था।" (मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निवास अवस्था में सदा दस रक्अतें पाबन्दी के साथ पढ़ते थे :- दो रक्अत

ज़ुहर से पहले और दो रक्अत उसके बाद, दो रक्अत मग़्रिब के बाद, दो रक्अत इशा के बाद अपने घर में और दो रक्अत फज्र से पहले।"

आप फज्र के सुन्नतों की पाबन्दी समस्त नवाफिल से अधिक करते थे। तथा उसे और वित्र को चाहे निवास अवस्था हो अथवा यात्रा, कही भी नहीं छोड़ते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे कहीं भी यह उल्लेख नहीं किया गया है कि आप ने सुनन रवातिब में इन दोनों के अतिरिक्त कोई और मुअक्किदा सुन्नत यात्रा में पढ़ी हो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी-कभार ज़ुहर से पहले चार रक्अत सुन्नत पढ़ते थे। तथा आप ने एक रात क़ियामुल्लैल में एक ही आयत को बार-बार सुब्ह होने तक पढ़ते रहे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोमवार और जुमेरात का रोज़ा विशेष रूप से रखा करते थे।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"सोमवार और जुमेरात के दिन लोगों के कार्य अल्लाह के पास प्रस्तुत किए जाते हैं। अतः मैं चाहता हूं कि मेरे

कार्य इस हाल में पेश किए जाएं कि मैं रोज़े से रहूँ।'' (त्रिमिज़ी ने रिवायत किया और हसन कहा है)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्रत्येक महीने में तीन दिन रोज़ा रखते थे। मुआज़ह अदविय्यह से वर्णित है कि उन्हों ने आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा : क्या अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखते थे? उन्हों ने उत्तर दियाः हां। पूछा : महीने के किस भाग में रोज़ा रखते थे? उन्हों ने कहा : ''**महीने के किसी भी भाग में रोज़ा रख लेते थे –महीने के किसी विशेष दिन की परवाह नहीं करते थे–।''** (मुस्लिम)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं : ''**अल्लाह के पैग़मबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, चाहे निवास पर हों या यात्रा में, अय्यामे बीज़ के रोज़े नहीं तोड़ते थे।''** (नसाई ने रिवायत किया है और नववी ने हसन कहा है।)

इसी तरह आप आशूरा –दसवीं मुहर्रम– का रोज़ा रखते थे और उसका रोज़ा रखने का आदेश देते थे। (बुखारी एंव मुस्लिम)

आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है वह कहती हैं : ''**पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शाबान के महीने**

से अधिक किसी अन्य महीने का रोज़ा नहीं रखते थे, आप शाबान के पूरे रोज़े रखते थे। और एक रिवायत के शब्द हैं किः कुछ दिनों को छोड़ कर आप पूरे शाबान का रोज़ा रखते थे।'' (बुखारी एंव मुस्लिम)

जहां तक ज़िक्र की उपासना अर्थात अल्लाह हो जपने का संबंध है तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुबान अल्लाह के ज़िक्र से थकती नहीं थी। आप अपने समस्त हालात में अल्लाह का ज़िक्र किया करते थे। आप जब नमाज़ से सलाम फेरते तो तीन बार इस्तिग़फार करते अर्थात अस्तग़फिरुल्लाह कहते। और यह दुआ पढ़तेः

اللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

उच्चारणः– अल्लाहुम्मा अन्तस्सलामो व मिनकस्सलाम, तबारकता या ज़ल जलाले वल इक्राम।

ऐ अल्लाह! तू सलाम (सलामती वाला) है और तेरी ही ओर से सलामती हासिल होती है, ऐ इज़्ज़त व जलाल वाले तू बड़ी बरकत वाला है। (मुस्लिम)

इसी तरह नमाज़ से फारिग़ होने और सलाम फेरने के बाद यह दुआ पढ़ते थे :

((لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))

उच्चारणः– ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल मुल्को व लहुल हम्द, व–हुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर, अल्लाहुम्मा ला मानिआ लिमा आतैता वला मोअ्तिया लिमा मनअ्ता वला यन्फओ ज़ल–जद्दे मिनकल जद्दो।

''अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, वह अकेला है, कोई उसका साझी नहीं, उसी की बादशाहत है और उसी के लिए प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर शक्तिवान है। ऐ अल्लाह! जो तू दे दे उसे कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी मालदार आदमी को उसकी मालदारी तेरे अज़ाब से बचा नहीं सकती। (बुखारी एंव मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रुकूअ एंव सज्दे में **"सुब्बूहुन कुद्दूसुन रब्बुल मलाईकते वर्रूहे"** पढ़ा करते थे। मुस्लिम

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से साबित है कि उन्हों ने कहाः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

((رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ))

उच्चारणः– रब्बना आतिना फिद्–दुन्या हसा–नह, व फिल आखिरते हसा–नह, व क़िना अज़ाबन्नार।

अधिक से अधिक पढ़ा करते थे। बुखारी एंव मुस्लिम

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अधिक से अधिक इस्तिग़फार किया करते थे। इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्हों ने कहाः हम गिनते थे कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बैठक में सौ –१००– बार यह दुआ पढ़ते थे :

"रब्बिग़ फिर्ली व तुब अलैय्या इन्नका अन्तत्–तव्वाबुर्रहीम"

(अबू दाउद, त्रिमिज़ी, और उन्हों ने हसन कहा है)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इबादत में गुलू -अतिशयोक्ति- करने से रोकते और सख्ती करने से डराते थे। और कहा करते थे : **“तुम जिस चीज़ की शक्ति रखते हो उसे करते रहो, अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला नहीं उकताता है यहाँ तक कि तुम स्वयं उकता जाओ।”** आप के निकट सब से प्रिय दीन का काम -दीनदारी- वह था जिसे उस को करने वाला निरंतर (सदैव) करता रहे। (बुखारी एंव मुस्लिम)

बाईसवीं सभा

इस्लाम के फैलाव का आरम्भ

जब ताईफ नगर वाले पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हंसी-मज़ाक और प्रहास से पेश आए, तो आप मक्का वापस लौट आए और मुत्इम बिन अदी के शरण में मक्का में प्रवेश किया।

आप को झुठलाए जाने, अत्याचार तथा घिराव से भरे हुए इस वातावरण के बीच, अल्लाह तआला ने चाहा कि अपने पैग़म्बर के पैर को जमा दे और आप को दृढ़ और स्थिर रखे, चुनांचे आप को इस्रा और मेराज से सम्मानित किया, आप को अपनी बड़ी बड़ी निशानियों का दर्शन कराया तथा अपनी महानता के प्रमाणों और अपनी सर्व शक्ति की निशानियों से आप को अवगत कराया; ताकि इन से आप को कुफ्र और काफिरों का सामना करने के लिए शक्ति और सहयोग प्राप्त हो।

इस्रा : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रात के समय मक्का में मस्जिदे हराम से बैतुल-मक्दिस में

मस्जिदे अक़्सा तक जाना और उसी रात फिर वापस लौट आना **'इस्रा'** कहलाता है।

मेराज : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उपरी दुनिया -आकाश- पर जाना, पैग़म्बरों से मुलाक़ात करना और प्रोक्ष जगत को देखना **'मेराज'** कहलाता है, और इसी में पांच समय की नमाजें अनिवार्य हुईं।

यह घटना सच्चे विश्वासियों -ईमान वालों- के जांचने का कारण सिद्ध हुआ। क्यांकि इस अवसर पर कुछ लोग जिन्हों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था, मुर्तद हो गए। तथा कुछ लोग अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए और उन से कहाः आप का साथा यक गुमान करता है कि आज रात उसे बैतुल-मक्दिस की सैर कराई गई है। सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः क्या उन्हों ने ऐसी बात कही है? लोगों ने कहाः हां। आप ने कहाः यदि उन्हों ने यह बात कही है तो वह सच्च है। उन लोगों ने कहाः क्या आप उनके इस बात को सच्च समझते हैं कि वह रातों-रात बैतुल-मक़्दिस जा कर सुबह होने से पहले लौट आए?

अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः जी हां, मैं तो इस से भी बड़ी बात में आप को सच्चा मानता हूं और

उसकी पुष्टि करता हूँ। मैं सुब्ह या शाम में आसमान के समाचार के बार में आप को सच्चा समझता हूं। इसी कारण आपका नाम अबू बक्र सिद्दीक़ पड़ गया। -सिद्दीक़ शब्द का अर्थ होता है पुष्टि करने वाला, सच्चा मानने वाला-

जब कुरैश ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठला दिया दिया और आप को अल्लाह के संदेश को फैलाने का अवसर नहीं दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्य अरब क़बीलों की और रूख करने लगे। चुनांचे ताइफ से लौटने के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आप को हज्ज के मौसम में आने वाले क़बीलों पर पेश करना आरम्भ कर दिया, आप उनके सामने इस्लाम की व्याख्या करते और उन पर शरण देने और सहायता करने का प्रस्ताव रखते यहाँ तक कि आप अल्लाह की बात को पहुँचा दें।

चुनांचे उन में से कुछ बुरा जवाब देते, और कुछ अच्छा उत्तर देते। सब से बुरा उत्तर देने वालों में मुसैलमा कज़्ज़ाब के क़बीला 'बनू-हनीफा' के लोग थे।

जिन लोगों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आप को पेश किया, उन्हीं में से यसरिब के औस क़बीले के कुछ अरब लोग थे। जब आप ने उन से बात की तो उन्हों ने आप के उस सिफत को पहचान लिए जिस से यहूदी लोग आप के विषय में बतलाते थे। उन्हों ने आपस में कहाः **"अल्लाह की क़सम यह तो वही ईश्दूत हैं जिनका यहूदी लोग हम से वादा करते रहते थे, अतः वह हम से पहल न करने पाएं।"** चुनांचे उन में से छः लोग ईमान ले आए जो मदीना में इस्लाम के फैलाव का कारण सिद्ध हुए। इन लोगों के नाम यह हैं : अस्अद बिन ज़ुरारह, औफ बिन हारिस, राफिअ् बिन मालिक, क़ुत्बा बिन आमिर बिन हदीदह, उक़बह बिन आमिर और सअद बिन रबीअ्।

फिर यह लोग आप से अगले साल मिलने का वादा करके वापस चले गए।

अगले साल, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैग़म्बर बनाए जाने के बारहवें वर्ष अक़्बा नामी घाटी में पहली बैअत हुई, जिस में औस नामी क़बीले के १२ आदमी और ख़ज़रज नामी क़बीले के २ आदमियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत किया,

इन्हीं में पहले के छः लोगों में से पांच लोग भी सम्मिलित थे। यह लोग अक़्बा -घाटी- के निकट ईमान लाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने, आप को सच्चा -पैग़म्बर- मानने, शिर्क -अनेकेश्वरवाद- और गुनाहों को त्यागने और अच्छे कार्य करने तथा केवल सत्य बात कहने पर बैअत किया, फिर मदीना वापस लौट गए। चुनांचे अल्लाह तआला ने मदीना में इस्लाम को जाहिर कर दिया और मदीना के घरों में से कोई घर ऐसा नहीं बचा जिस में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चर्चा न हो।

अक़्बा की पहली बैअत के अगले साल अर्थात पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने के तेरहवें वर्ष अक़्बा की दूसरी बैअत हुई, जिस में ७० मर्द और २ औरतें अल्लाह के पैग़म्बर के पास आईं। उन्हों ने इस्लाम स्वीकार किया और अक़्बा के पास चुस्ती एंव सुस्ती हर हाल बात सुनने और मानने, तन्गी एंव खुशहाली हर हाल में माल खर्च करने, भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने, अल्लाह के रास्ते में उठ खड़ा होने और अल्लाह के मार्ग में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न

करने और आप का सहयोग और सुरक्षा करने पर बैअत किया।

फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से कहा कि अपने बीच से १२ नक़ीब -निरीक्षक- नियुक्त करें ताकि वही लोग अपनी अपनी क़ौम के ज़िम्मेदार -उत्तरदायी- हों। उन्हों ने तुरन्त ८ नक़ीब ख़ज़रज से और ३ नक़ीब औस से नियुक्त कर लिए। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन से फरमायाः आप लोग अपनी क़ौम के समस्त मामलों के कफील -ज़िम्मेदार- हैं, जिस प्रकार की हवारी लोग ईसा अलैहिस्सलाम की और से कफील थे, और मैं अपनी क़ौम अर्थात मुसलमानों का कफील हूं। फिर वह लोग मदीना वापस चले गए, और इस्लाम उनके अन्दर फैल गया। अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ।"[1]

यह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिज्रत का आरम्भिका था।

[1] लुबाबुल खियार फी सीरतिल-मुख्तार प० ४२-४३।

तेईसवीं सभा

मदीना की ओर हिज्रत

जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों पर कष्ट और कठिनाई बढ़ गई, तो अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें मदीना की ओर हिज्रत कर जाने की आज्ञा दे दी। क्योंकि आप को विश्वास हो गया था कि मदीना में इस्लाम की दावत फैल चुकी है और वह हिज्रत करने वालों का स्वागत करने के लिए उपयुक्त हो चुका है।

चुनांचे मुसलमानों ने हिज्रत करने में शीघ्रता से काम लिया और वह एक के पीछे एक झुण्ड के झुण्ड निकले।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का ही में ठहरे रहे और आप के साथ अबू बक्र और अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी थे। इसी तरह वह लोग भी बच गए थे जिन्हें मुश्रिकों ने जबरन रोक रखा था।

कुरैश को पता चल गया कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी एक सुरक्षित स्थान पर जा रहें हैं। इसलिए वह इस दीन के फैलाव से भयभीत हो गए और

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने पर एकजुट हो गए।

जिस रात उन्हों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जान से मार देने की योजना बनाई थी, अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इन के षड़यन्त्र से सूचित कर दिया और आप को हिज्रत करने और उन मोमिनों से जा मिलने का आदेश दिया जो हिज्रत कर चुके थे, और यह कि आप उस रात अपने बिस्तर पर न सोयें।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर सो जाएं और आप की चादर ओढ़ लें, और आप की और से लोगों की अमानतें वापस लौटा दें। अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज्ञा का पालन किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर सो गए जबकि दरवाज़े के पीछे तलवारें सैंती हुई थीं।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों के बीच से होते हुए निकले जो आप की जीवन लीला को समाप्त कर देना चाहते थे, किन्तु अल्लाह तआला ने उन की निगाहों को अन्धा कर दिया। और

उनके पराजय और हार को स्पष्ट करते हुए आप ने उनके सरों पर मिट्टी डाल दी, फिर अपने दोस्त अबू बक्र के घर गए और और वह दोनो रात ही रात जल्दी से बाहर निकल गए।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु चल पड़े यहाँ तक कि 'सौर' नामी गुफा में पहुँचे और गुफा में ठहरे रहे यहाँ तक कि आप की तलाश और खोज बीन में कमी आ गई।

जब कुरैश को अपने योजना के विफल होने और चाल के नष्ट हो जाने का ज्ञान हुआ तो उनके क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्हों ने प्रत्येक दिशा में खोजियों को भेजा और उस आदमी के लिए जो पैग़म्बर को पकड़ कर लाए या उनका पता बता दे- १०० ऊँट का पुरस्कार घोषित किया। वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खोजते ढूँढ़ते गुफा के द्वार तक पहुँच गए और उस के पास खड़े हो गए। किन्तु अल्लाह तआला ने उन्हें गुफा से फेर दिया और उनकी चालों से अपने पैग़म्बर की सुरक्षा की। उस मसय अबू बक्र ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! अगर उन में से कोई अपने दोनो पावों के स्थान पर निगाह करे तो वह हमें देख लेगा। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें उत्तर दियाः ''ऐसे

दो आदमियों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है?" (बुखारी)

तीन रातें बीतने के बाद उनके पास रास्ता बताने वाला -गाइड- आया जिसे उन्हों ने दो सवारियों के साथ पहले ही से तैयार योजना के अनुसार किराये पर ले रखा था, फिर वह मदीना की दिशा में रवाना हो गए।

रास्ते में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मे-मअ्बद अल-खुज़ाईया के ख़ेमे से गुज़रे और उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरकत उनकी एक बकरी में प्राप्त हुई जिस के थन एक बूंद भी दूध नहीं था। आप ने उन से उस बकरी को दूहने की आज्ञा मांगी तो उस का थन दूध से भर गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको और आप के साथ जो लोग थे उन्हें दूध पिलाया, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं पिया। फिर आप ने दुबारा बर्तन में दूध दूहा और उसे भर कर वहां से रवाना हो गए।

सुराक़ह बिन मालिक को पता चला कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम साहिले समुद्र के रास्ते से चल रहें हैं और वह क़ुरैश के घोषित पुरस्कार को पाने की लालच में था। चुनांचे वह अपना भाला लेकर अपने घोड़े पर सवार

हुआ और उनके खोज में चल पड़ा। जब वह उन के निकट हो गया तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की और उसके घोड़े के दोनों हाथ -दोनो अगले पैर- ज़मीन में धंस गए। उसे पता चल गया कि यह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ का प्रभाव है और वह सुरक्षित हैं। उसने अमान मांगा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पैमान किया कि वह आप की खोज में आने वालों को वापस लौटा देगा। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके लिए दुआ की और उसके घोड़े के पाँव निकल गए। वह वापस लौट आया और उस दिशा में लोगों को खोज करने से रोकता रहा जिस दिशा में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे।

उधर अन्सार हर रोज़ मदीना के रास्तों की ओर निकल कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन की प्रतीक्षा करते थे, फिर जब धूप तेज़ हो जाती तो अपने घर वापस लौट आते। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का तेरहवाँ वर्ष, रबीउल अव्वल की १२ तारीख सोमवार का दिन था कि किसी आदमी ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन की गुहार लगाई। चुनांचे हर स्थान पर अल्लाहु अकबर की पुकार

और आवाज़ सुनी गई और सब लोग अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्वागत करने के लिए निकल पड़े।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुबा में उतरे और मस्जिेदे कुबा का शिला नियास किया, यह इस्लाम में बनाई जाने वाली सर्व प्रथम मस्जिद है।

कुबा में कुछ दिन ठहरने के पश्चात अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहाँ से रवाना हुए। रास्ते में जुमा की नमाज़ का समय हो गया, आप ने अपने साथ उपस्थित मुसलमानों के साथ जुमा की नमाज़ पढ़ी, यह पहला जुमा है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पढ़ी। जुमा की नमाज़ के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दछिण की ओर से मदीना में प्रवेश हुए। इसी दिन से उस का नाम मदीनतुन्नबी -पैग़म्बर की नगरी- पड़ गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन से मदीना-वासी हर्ष व उल्लास से झूम उठे। इस प्रकार इस्लाम को एक सुरक्षित घर प्राप्त हो गया जहाँ से इस्लाम के अनुयायी धरती के पूरब और पच्छिम में अल्लाह के संदेश का प्रचार करने के लिए रवाना होने लगे।

चौबीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की मईशत –रहन सहन–

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया की हक़ीक़त और उसके अति शीघ्र समाप्त हो जाने को अच्छी तरह जानते थे। इसलिए आप ने अपने जीवन को धन्वान लोगों के समान न बिता कर, निर्धन लोगों के समान व्यतीत किया। एक दिन भूखे रहते तो धैर्य से काम लेत, और एक दिन खाना खाते तो उस पर अल्लाह का शुक्र करते।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को दुनिया के फित्ने में पड़ने और उसकी लज़्ज़तों और ऐच्छिक चीज़ों में फंसने के खतरे को स्पष्ट करते हुए फरमायाः

“दुनिया बहुत मीठी और हरी भरी चीज़ है, और अल्लाह तआला तुम्हें उस में उत्तराधिकारी बनाने वाला है, फिर देखे गा कि तुम कैसा कार्य करते हो। अतः दुनिया से डरो और औरतों से डरो; क्योंकि बनी-इस्राईल

में पहला फित्ना औरत के विषय में घटित हुआ।" (मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अच्छी तरह जानते थे कि दुनिया उस आदमी का घर है जिस का कोई अन्य घर नहीं है, और उस आदमी के लिए जन्नत है जिस का –आखिरत में– कोई भाग नहीं है। इसी लिए आप कहा करते थे : **"ऐ अल्लाह जीवन तो केवल आखिरत का जीवन है।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

इसी कारण आप ने आखिरत को अपने चिन्ता का केन्द्र बना लिया और अपने दिल को दुनिया के ग़मों और चिन्ता से खाली कर लिया। तो दुनिया आप की ओर दौड़ कर आती थी, किन्तु आप उस से बचाव करते और कहते : **"मुझे दुनिया से क्या लेना देना, मैं तो दुनिया में उस सवार के समान हूँ जिसने एक पेड़ के नीचे विश्राम किया फिर उसे छोड़ कर चला गया।"** (सुनन-त्रिमिज़ी, और इसे हसन कहा है)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी जुवैरियह के भाई अम्र बिन हारिस कहते हैं : **"पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी मृत्यु के समय दीनार, दिरहम, लौंडी और गुलाम –दास– कुछ भी नहीं छोड़ा,**

सिवाए अपने सफेद खच्चर को जिस पर आप सवार होते थे और अपना हथियार और एक ज़मीन का टुकड़ा जिसे आप ने मुसाफिरों के लिए ख़ैरात घोषित कर दिया।'' (बुखारी)

यह है सर्व संसार के नायक का तर्का -मीरास-, आप पर मेरे पालनहार की शान्ति और कृपा अवतरित हो। आप ने इस बात को नकार दिया कि आप राजा एंव पैग़म्बर हों और इस बात को पसन्द किया कि आप एक उपासक पैग़म्बर हों। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : जिब्रील अलैहिस्सलाम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे कि उन्हों ने आसमान की और निगाह उठाई तो देखा कि एक फरिश्ता उतर रहा है, तो जिब्रील ने कहा : यह फरिश्ता जब से पैदा हुआ है इस से पहले कभी नहीं उतरा। जब वह उतरा तो कहाः ऐ मुहम्मद ! मेरे पालनहार ने मुझे आप के पास -यह जानने के लिए- भेजा है कि आप को राजा बनाऊँ, या आप को उपासक पैग़म्बर बनाऊँ? तो जिब्रील ने आप से कहा : ऐ मुहम्मद! अपने रब के लिए नम्रता का प्रदर्शन कीजिए। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

“नहीं, बल्कि उपासक पैग़म्बर।” (इसे इब्ने हिब्बान ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे सहीह कहा है)

इस प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रहन-सहन खाकसारी, नम्रता, दुनिया में अरूचि और बेनियाज़ी पर आधारित था। आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं : **“अल्लाह के पैग़मबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु हो गई और मेरे घर में कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे कोई जानदार खाता है सिवाय कुछ जौ के जो मेरी एक अलमारी पर पड़ा हुआ था, मैं ने उस में से खाया यहाँ तक कि एक दीर्घ समय बीत गया, तो मैं ने उसे वज़न किया तो वह समाप्त हो गया।”** (बुखारी एंव मुस्लिम)

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु यह वर्णन करते हुए कि किस प्रकार लोगों ने दुनिया के उपकरण प्राप्त कर लिए हैं, फरमायाः **“मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है कि आप दिन भर भूख से सिकुड़े रहते थे, आप अपना पेट भरने के लिए रद्दी खजूर भी नहीं पाते थे।”** (मुस्लिम)

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **“निःसन्देह मुझे**

अल्लाह के मार्ग में भयभीत किया गया जबकि किसी को कोई भय नहीं था। मुझे अल्लाह के मार्ग में कष्ट दिया गया जबकि किसी को कष्ट नहीं दिया गया। मैं ने तीस दिन और रात इस हाल में बिताए हैं कि मेरे पास और बिलाल के पास कोई खाना नहीं था जिस कोई जानदार खाता सिवाय इतना कि जितना बिलाल अपने बग़ल में छुपा सकें।'' (त्रिमिज़ी ने रिवायत करके इसे हसन-सहीह कहा है)

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्हों ने कहाः ''**पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लगातार इस हालत में रातें बिताते थे कि आप के घर वाले भूखे रहते थे उनके पास रात का खाना नहीं होता था, और उनकी अधिकांश रोटी जौ की होती थी।''** (त्रिमिज़ी ने रिवायत करक इसे हसन-सहीह कहा है)

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि : '' **अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मरते दम तक दसतरख्वान पर खाना नहीं खाया, तथा आप ने जीवन भर पतली रोटी नहीं खाई।''** (बुखारी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चटाई पर बैठते और उसी पर सोते थे। उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु

कहते हैंः मैं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया तो मैं ने आप को एक चटाई पर पाया जिसके और आपके बीच कोई चीज़ नहीं थी (चटाई पर कोई चीज़ नहीं बिछी थी) और आपके सिर के नीचे चमड़े का एक तकिया था जो खजूर के पेड़ की छाल से भरा हुआ था और आप के पैर के पास चमड़े का एक पानी का बर्तन था और आपके सिर के पास कुछ कपड़े टंगे हुए थे। मैं ने चटाई का निशान आप के पहलू में देखा तो रो पड़ा। आप ने कहाः तुम क्यों रो रहे हो? मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर, क़ैसर और किस्रा इस दुनिया का आनन्द ले रहे हैं और आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं (और आपकी यह हालत है!) आप ने कहाः **''क्या तुम्हें यह पसन्द नहीं कि उनके लिए दुनिया हो और हमारे लिए आख़िरत की नेमतें हों।''** (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

पचीसवीं सभा

राज्य निर्माण के आधार

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में प्रवेश किए तो उसके बासियों ने आप का हर्ष व उल्लास के साथ अभिनन्दन किया। आप अन्सार के जिस घर से भी गुज़रते, घर वाला आप की उंटनी की नकील थाम लेता और आप को अपने घर उतरने का निमन्त्रण देता। किन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम माज़रत कर देते और कहते : इस का रास्ता छोड़ दो, यह अल्लाह की ओर से मामूर (आदिष्ट) है। चुनांचे ऊँटनी लगातार चलती रही यहाँ तक कि उस स्थान पर पहुँच कर बैठ गई जहाँ -आज- आप की मस्जिद है, फिर उठ खड़ी हुई और थोड़ी दूर चल कर फिर पहले स्थान पर आकर बैठ गई। इस के बाद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू नज्जार में अपने नन्हायल में ऊँटनी से नीचे उतरे और आप ने कहाः **“हमारे किस आदमी का घर सब से निकट है?”** अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : मेरा, ऐ अल्लाह के रसूल! चुनांचे पैग़म्बर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू अय्यूब अन्सारी के घर उतरे।

मदीना आने के पश्चात अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो सर्व प्रथम काम किया वह उस स्थान पर 'मस्जिदे नबवी' का निर्माण है जहां आप की उंटनी बैठी थी। यह स्थान दो यतीम बच्चों का था जिसे आप ने उन से खरीद लिया। मस्जिद के निर्माण में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं भाग लिया। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिद के बगल ही में अपनी पत्नियों के कमरों का निर्माण करवाया। जब यह कमरे बन कर तैयार हो गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू अय्यूब का घर छोड़ दिया और उन कमरों में स्थानांतिरत हो गए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अज़ान शुरू किया ताकि नमाज़ के समय लोग एकत्र हो सकें।

फिर आप ने मुहाजिरीन और अन्सार के बीच भाई-चारा करवाया, वह मात्र नव्वे -९०- आदमी थे, आधे मुहाजिरीन और आधे अन्सार। भाई चारा का आधार यह था कि वो एक दूसरे के ग़मख्वार हों गे, मरने के बाद रिश्तेदारी के बदले यही एक दूसरे के वारिस हों गे। वरासत का यह आदेश बद्र की लड़ाई तक रहा। फिर

जब यह आयत उतरी : **“नसबी रिश्तेदार एक दूसरे के अधिक हक़दार हैं अल्लाह की किताब में।”** (अल अहज़ाबः६)

तो वरासत का आधार भाई-चारा के बदले नसूबी रिश्ते को बना दिया गया।

इसी तरह अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना में जो यहूद थे उनके साथ संधि किया और आप के और उनके बीच अहदनामा लिखा गया। यहूदियों के विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम ने पहल करते हुए इस्लाम को स्वीकार कर लिया, जबकि सामान्य यहूदियों ने कुफ्र को प्राथमिकता दी।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना के बासियों- मुहाजिरीन, अन्सार और यहूद के बीच संबन्ध को संगठित किया और सीरत की कुछ किताबों में उल्लेख किया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस संबन्ध में एक दस्तावेज़ लिखा जिस के दफ़्आत कुछ इस प्रकार थे :

१. मोमिन -मुहाजिरीन एंव अन्सार- अपने अतिरिक्त मनुष्यों से अलग एक उम्मत -समुदाय- हैं।

२. मोमिन लोग अपने बीच किसी बेबस को दियत या फिद्या के संबन्ध प्रचलित ढंग से कुछ दान करने से वंचित न रखें गे।

३. सभी सदाचारी और आत्म संयमी मोमिन उस व्यक्ति के विरूद्ध हों गे जो उन में अत्याचार करेगा या मोमिनों के बीच अत्याचार, पाप, ज़ियादती और बिगाड़ का रास्ता ढूंढ़े गा। और यह कि उन सब के हाथ उस व्यक्ति के विरूद्ध हों गे, चाहे वह उन में से किसी का पुत्र ही क्यों न हो।

४. कोई मोमिन किसी मोमिन को काफिर के बदले क़त्ल नहीं करे गा और न ही किसी मोमिन के विरूद्ध किसी काफिर की सहायता करे गा।

५. अल्लाह तआला का ज़िम्मा -प्रतिज्ञा, अहद- एक है, एक साधारण आदमी का दिया हुआ पैमान -ज़िम्मा- सारे मुसलमानों पर लागू होगा। अन्य लोगों को छोड़ कर मुसलमान आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं।

६. यहूद में से जो हमारे अनुयायी हो जाएं, उनकी मदद की जाए गी और वह अन्य मुसलमानों के

समान हों गे। न उन पर अत्याचार किया जाए गा और न उनके विरूद्ध सहयोग किया जाए गा।

७. मुसलमानों की संधि एक होगी। कोई मुसलमान किसी मुसलमान को छोड़ कर अल्लाह के मार्ग में लड़ाई करने के संबन्ध में कोई संधि -सुल्ह- नहीं करे गा, बल्कि सभी लोग बराबरी और न्याय के आधार पर कोई संधि करें गे।

८. तुम्हारे बीच जो भी मतभेद पैदा होगा, उसे अल्लाह और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की और पलटाया जाए गा।

९. बनू औफ के यहूद मुसलमानों के साथ मिल कर एक ही समुदाय -उम्मत- हों गे। यहूद अपने दीन पर रहें गे और मुसलमान अपने। स्वयं उनकी भी यही हक़ होगा और उनके गुलामों और संबंधित लोगों का भी। हां जो आदमी अपने उपर अत्याचार करे और पापी हो वह केवल अपने आप को और अपने घर वालों को हानि पहुँचाए गा।

१०. यहूद के विशिष्ट लोग उन्हीं के समान हों गे, और उन में से कोई भी मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की आज्ञा के बिना बाहर नहीं निकले गा।

११. पड़ोसी स्वयं ही के समान है, एक दूसरे को हानि पहुँचाए और गुनाह किए बिना।

१२. किसी महिला को उसके पति की आज्ञा के बिना पनाह नहीं दिया जाए गा। किसी को पनाह और शरण उसके आज्ञा अनुसार ही दिया जाए गा।

इन के अतिरक्ति इस मुआहिदा के अन्य खणड भी थे जिस ने मदीना में मौजूद गिरोहों के बीच पारस्परिक रहन सहन के नियम व्यवस्थित किए। तथा जिस ने इस्लामी उम्मत का अर्थ निर्धारित किया जिस में समस्त मुसलमान सम्मिलित हैं, तथा इस्लामी राज्य की धारणा को परिभाषित किया जो पैग़म्बर का नगर मदीना था। और सर्वोच्च अधिकार एंव प्रभुत्व अल्लाह और उस के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बनाया, विशेष रूप से मतभेद और झगड़े के समय।

इस दस्तावेज़ ने स्वतन्त्रताओं की सुरक्षा की जैसे- अक़ीदा -श्रद्धा- और इबादत (उपासना) की स्वतन्त्रता और प्रत्येक मनुष्य के लिए शान्ति का अधिकार।

तथा इस ने समस्त लोगों के बीच बराबरी और न्याय के सिद्धान्त को प्रमाणित किया।

इस दस्तावेज़ के दफ़्आत में विचार करने वाला बहुत से ऐसे सभ्य सिद्धान्तों को पाए गा जिस का मानव अधिकार के पक्षसमर्थक आज ढंढोरा पीटते हैं। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्व प्रथम वह व्यक्ति हैं जिन्हों ने इन अधिकारों का खाका तैयार किया और अल्लाह के धर्म शास्त्र -क़ुर्आन और हदीस- के अनुसार उसके नियमों को व्यवस्थित किया। दरअसल न्यायपूर्ण मानव अधिकार के बीच और उस के बीच जिस का विश्व संगठनें गुहार लगाती हैं जिसे वो अधिकार गुमान करते हैं, हालांकि वास्तव में वह हक़ तलफी, अत्याचार, मानव के मर्यादा व गौरव का अपमान और कुछ गुटों के विरूद्ध कुछ अन्य गुटों का पक्षपात है।

छब्बीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की वीरता

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से अधिक वीर-बहादुर थे। इस का प्रमाण यह है कि आप अकेले ही कुफ्र के विरूद्ध उठ खड़े हुए, ऐकेश्वरवाद और उपासना को अल्लाह के लिए खालिस करने की दावत देने लगे। चुनांचे समस्त कुफ्फार आप के विरूद्ध उठ खड़े हुए और सब ने एक जुट हो कर आप का प्रतिरोध किया, आप को अत्यन्त कठोर कष्ट पहुँचाया और आप को क़त्ल करने का कई बार षड़यन्त्र किया। परन्तु इन से आप भयभीत नहीं हुए और आप के अन्दर झुकाव नहीं पैदा हुआ, बल्कि आप अपनी दावत पर और अधिक दृढ़ता से डट गए और आप के साथ जो सत्य था उस को और अधिक दृढ़ता से थाम लिया। तथा धरती के तागूतों को चैलेन्ज करते हुए सिर ऊँचा कर के दिलेरता से उत्तर दियाः

''अल्लाह की क़सम! अगर ये लोग सूर्य को मेरे दाहिने हाथ में और चाँद को बायें हाथ में रख दें और यह चाहें कि मैं इस मामले को छोड़ दूँ, तो मैं इसे नही छोड़

सकता यहाँ तक कि अल्लाह तआला इस को प्रभुत्ता प्रदान कर दे, या इस के लिए मेरी जान चली जाये।"

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से अच्छे, सब से अधिक दीनशील और सब से बड़े वीर-बहादुर थे। एक रात मदीना वाले घबराहट और दह्शत के शिकार होगए। कुछ लोग आवाज़ (शोर) की ओर निकले, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें रास्ते में वापस आते हुए मिले। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों से पहले ही आवाज़ की ओर पहुँच कर यह निरीक्षण कर चुके थे कि कोई खत्रा नहीं है। उस समय आप अबू-तल्हा के बिना ज़ीन के घोड़े पर सवार थे और गर्दन में तलवार लटकाए हुए थे, और कह रहे थे: **"डरो नहीं, डरो नहीं।"** (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

इमाम नववी कहते हैं : इस हदीस से कई फायदे की बातें ज्ञात होती हैं : उन्हीं में से एक पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहादुरी का पता चलता है कि आप कितनी शीघ्रता से दूसरे लोगों से पहले ही दुश्मन की ओर निकल पड़े और लोगों के पहुँचने से पहले हालात का निरीक्षण कर के वापस लौट पड़े।

जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है वह कहते हैं : हम खन्दक़ के दिन खन्दक़ खोद रहे थे कि एक कठोर चट्टान आड़े आ गया। लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और कहा कि यह चट्टान खन्दक़ में आड़े आ गया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"मैं उतर रहा हूं।"** फिर आप उठे, आप के पेट पर पत्थर बंधा हुआ था, और हम ने तीन दिन से कुछ नहीं चखा था। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुदाल ले कर चट्टान पर मारा, तो वह भुरभुरे तोदे में बदल गया।" (बुखारी)

यह कठोर चटान जिसे सहाबा तोड़ न सके, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर इतनी सख्त चोट लगाई कि वह बिखरे हुए रेत के टील में परिवर्तित हो गया। यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शक्ति का प्रमाण है।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कठोर से कठोर भयंकर स्थितियों के सामने बहादुरी, स्थिरता और इक़्दाम करने में सर्वोच्च स्थान पर थे जिस में आप की कोई बराबरी नहीं कर सकता और उस उच्चता की क्षमता को केवल वह महान हस्ती जानती है जिस ने आप को यह प्रदान किया है।

इसी कारण आप अपने संघर्ष पूर्ण जीवन में जितनी जंगों में भी उपस्थित रहे, उनमें एक बार भी यह प्रमाणित नहीं है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक क़दम या एक अंगुल-भर पीछे रहने का विचार किया हो। यही कारण है जिस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने साथियों के बीच आँखों एंव सीनों भरा एक नेता (क़ाइद) बना दिया -जिसकी बात मानी जाती थी- जिस के संकेत पर छोट और बड़े सब दौड़ पड़ते थे। केवल इस कारण नहीं कि आप अल्लाह के पैग़म्बर थे, बल्कि इस कारण कि वो लोग आप की वीरता का ऐसा दर्शन करते थे कि उसके अनुपात में अपने आप को कुछ भी नहीं समझते थे। जबकि उनमें ऐसे बहादुर भी थे कि जिनकी बहादुरी की मिसाल -कहावत, मसल- बयान की जाती थी। (मुहमम्मद अल-इन्सान अल-कामिल पृ० १८८,१८९)

इस विषय में अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: जब लड़ाई भयानक हो जाती और दोनों गुटों में मुठभेड़ होती, तो हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा बचाव करते थे। हमारे बीच पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिक दुश्मन के निकट कोई नहीं होता था। (अहमद, नसाई)

तथा अली रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं : मैं ने बद्र के दिन देखा है कि हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आड़ लेते थे, और हमारे बीच आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़ कर दुश्मन के क़रीब कोई नहीं था। उस दिन आप सब से अधिक बल्वान और शक्तिशाली थे। (मुसनद अहमद)

उहुद की जंग में अभिशप्त उबै बिन खलफ घोड़े पर सवार हो कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिए आया और कहा: हे मुहम्मद ! या तो तू रहे गा या मैं रहूं गा। लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! क्या हम में से कोई इस पर वार करे? अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा : **"उसे आने दो।"** जब वह क़रीब आया तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हारिस बिन सिम्मह से एक भाला लिया। फिर आप ने उसे झटका दिया तो सहाबा इधर उधर उड़ गए। इस के बाद आप उस के सामने गए और उसकी गर्दन में ऐसा भाला मारा कि वह अपने घोड़े से कई बार लुढ़क-लुढ़क गया। कुरैश के पास वापस गया तो कहने लगा: मुहम्मद ने मुझे क़त्ल कर दिया। उन लोगों ने कहा : तुम्हें कोई विशेष चोट नहीं लगी है। उस ने कहा : यदि वह -चोट जो मुझे पहुँची है- समस्त लोगों

को पहुँचती तो उन्हें क़त्ल कर देती, क्या उस ने कहा नहीं थाः मैं तुम्हें क़त्ल करूं गा। अल्लाह की क़सम ! अगर वह मुझ पर थूक देता तो भी मेरी जान चली जाती। चुनांचे वह मक्का लौटते हुए रास्ते में मर गया। (सीरत इब्ने हिशाम ३:१७४)

हुनैन की जंग में जब हवाज़िन के लोगों ने सहसा मुसलमानों पर तीर बरसाना शुरू कर दिया तो मुसलमान भागने लगे, किन्तु पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुश्मन के सामने डटे रहे, और आप कह रहे थे :

मैं नबी हूँ, कोई झूठा नहीं हूँ। मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

ऐ अल्लाह! तू दरूद व सलाम -कृपा एंव शान्ति- भेज अपने सन्देष्टा और प्रिय मुहम्मद पर और हमें उन के संग अपनी प्रतिष्ठा के घर -स्वर्ग- एकत्र कर, तथा आप के पवित्र हाथ से हमें ऐसा स्वादिष्ठ घूंट पिला कि उस के बाद हम कभी प्यासे न हों।

सत्ताईसवीं सभा

बद्र का महान युद्ध

रमज़ान सन् २ हिज्री में बद्र का महान युद्ध घटित हुआ। इस का कारण यह था कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ३१३ आदमियों के साथ कुरैश के एक बड़े तिजारती क़ाफिले का रास्ता रोकने के लिए निकले, जो शाम -सीरिया- से वापस आ रहा था। इस क़ाफिले का अगुआ अबू सुफ़्यान बहुत सावधानी और चतुराई से काम लेने वाला आदमी था। वह रास्ते में जिस आदमी से भी मिलता उस से मुसलामनों की नक़्ल व हरकत के बारे में पूछता रहता था, यहाँ तक कि उसे मुसलमानों के मदीना से निकलने का पता चल गया। वह उस समय बद्र के निकट था। चुनांचे उस ने क़ाफिले की दिशा पच्छिम की ओर कर दी ताकि वह खतरे से घिरे हुए बद्र के रास्ते को छोड़ कर, साहिल के रास्ते पर चले। फिर उस ने मक्का वालों को यह सूचना देने के लिए एक आदमी को भेजा कि उनका माल खतरे से ग्रस्त है और मुसलमान क़ाफिले पर हमला करने के लिए तत्पर हैं।

जब मक्का वालों को इस की सूचना मिली तो वो अबू सुफयान की सहायता के लिए तुरन्त तैयार हो गए और उन के बड़े लोगों में से अबू लहब के अतिरिक्त कोई भी पीछे न रहा। तथा उन्हों ने अपने आस पास के क़बीलों को भी भरती किया और कुरैश के क़बाईल में से बनू अदी के अतिरिक्त कोई भी पीछे न रहा।

जब यह लश्कर जह्फा नामी स्थान पर पहुँचा तो उन्हें अबू सुफ़्यान के बच निकलने का संदेश मिला और यह कि वो लोग अब मक्का वापस लौट जाएं।

उन्हों ने वापस लौटने का मन बना लिया किन्तु अबू जहल रूकावट बन गया और उस ने उन्हें लड़ाई करने के लिए आगे बढ़ने पर उभारा और भड़काया। चुनांचे बनू ज़हरा वापस आ गए जिन की संख्या ३०० थी। शेष लश्कर ने अपनी यात्रा जारी रखी जिस की संख्या एक हज़ार -१,०००- थी, यहाँ तक कि उन्हों ने बद्र से घिरी हुई पहाड़ी के पीछे एक लम्बी चौड़ी जगह पर पड़ाव डाल दिया।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों से सलाह-मशवरा किया, तो आप को उनकी ओर से अल्लाह के मार्ग में कुर्बानी देने और लड़ाई करने

पर दृढ़ संकल्प और उत्साह का अनुभव हुआ। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्रसन्न हो गए और उन से कहाः **“चलो और खुशी-खुशी चलो। अल्लाह तआला ने मुझ से दो गिरोहों में से एक का वादा किया है। अल्लाह की क़सम! इस समय गोया मैं क़ौम के क़त्ल होने के स्थान देख रहा हूँ।”**

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़े और बद्र के सब से निकट चश्में पर पड़ाव डाला। इस पर हुबाब बिन मुन्ज़िर ने मश्वरा दिया कि आगे बढ़ें और दुश्मन के निकटतम चश्मे पर पड़ाव डालें। ताकि मुसलमान अपने लिए एक हौज़ में पानी एकत्र कर लें गे और शेष चश्मों को पाट दें गे। इस प्रकार दुश्मन के लिए पानी का साधन नहीं रह जाए गा। चुनांचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वैसा ही किया जैसाकि हुबाब ने मश्वरा दिया था।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने १७ रमज़ान, जुमा की रात को -जो कि बद्र के यूद्ध की रात थी- खड़े हो कर नमाज़ पढ़ते हुए, रोते हुए, अल्लाह से प्रार्थना और विनती करते हुए और अपने दुश्मनों पर सहयोग एवं फत्ह मांगते हुए बिताई।

मुसनद अहमद में अली रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : मैं ने देखा है कि हम में से कोई भी ऐसा नहीं था जो सो न रहा हो सिवाय अल्लाह के सन्देष्टा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के, कि आप एक पेड़ के नीचे सुबूह होने तक नमाज़ पढ़ते रहे और रोते रहे।

उसी हदीस में है कि -बद्र की रात- हम पर हल्की सी वर्षा -फुवार- हुई, हम वर्षा से बचाव के लिए पेड़ों और चमड़े के ढालों के नीचे चले गए, और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने पालनहार से दुआएं करते रहे और कहते रहे कि : अगर यह गिरोह हलाक हो गया तो तेरी पूजा न की जाए गी।'' जब फज्र उदय हो गया तो आप ने आवाज़ दी ''ऐ अल्लाह के बन्दो! नमाज़ के लिए आओ।'' चुनांचे लोग पेड़ों और चमड़े के ढालों के नीचे से आए और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें नमाज़ पढ़ाई और लड़ाई करने पर उभारा।

अल्लाह तआला ने अपने सन्देष्टा और मोमिनों की अपनी ओर से, अपने लश्कर भेज कर सहायता की, जैसाकि अल्लाह तआला ने फरमाया :

"उस समय को याद करो जब तुम अपने परमेश्वर से फर्याद कर रहे थे, तो उस ने तुम्हारी फर्याद का उत्तर दिया, मैं एक हज़ार फिरश्तों से तुम्हारी सहायता करूं गा जो आगे पीछे आएं गे। इसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए खुशख़बरी बनाई है और ताकि तुम्हारे दिल इस से सन्तुष्ट हो जाएं। और सहायता -मदद- तो केवल अल्लाह की ओर से है। अल्लाह तआला सर्व शक्तिमान और हिकमत वाला है।" (सूरतुल-अन्फाल : ९-१०**)**

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

"निःसन्देह अल्लाह तआला ने बद्र -के युद्ध- में तुम्हारी सहायता की, जबकि तुम गिरी हुई हालत में थे।" सूरत आल इम्रान : १२३

तथा फरमायाः

"तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया। जब आप ने फेंका तो वास्तव में आप ने नहीं फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका।" (सूरतुल अन्फालः१७**)**

लड़ाई का आरम्भ मुबारज़त से हुआ। जिस में हम्ज़ह रज़ियल्लाहु अन्हु ने शैबह बिन रबीअह को क़त्ल कर दिया और अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने वलीद बिन उतबा को क़त्ल कर दिया। तथा मुश्रिकों में

से उत्बह बिन रबीअह और मुसलमानों में से उबैदह बिन हारिस घायल हो गए।

फिर घमसान की जंग आरम्भ हुई और बहुत गरमा गई। अल्लाह तआला ने फरिश्तों के द्वारा मुसलमानों की सहायता की जो उनके बदले लड़ाई कर रहे थे और उनके दिलों को सुदृढ़ कर रहे थे। अभी घन्टा भर ही बीता था कि मुशरिक लोग पराजित हो गए और पीठ फेर कर भागने लगे। मुसलमानों ने मारते काटते और पकड़ते बांधते उनका पीछा किया। मुशरिकों में से ७० आदमी क़त्ल किए गए, जिन में से : उत्बा, शैबा, वलीद बिन उत्बा, उमैया बिन खलफ और उसका बेट अली, हनज़लह बिन अबू सुफ्यान और अबू जह्ल बिन हिशाम आदि प्रसिद्ध हैं।

तथा मुशरिकों में ७० लोग बन्दी बनाए गए।

बद्र के युद्ध का परिणाम यह निकला कि मुसलमानों की शान व शौकत -वैभव- बढ़ गई और मदीना तथा उस के आस पास उन की धाक बैठ गई, अल्लाह तआला पर उनका भरोसा बढ़ गया और उन को यह विश्वास हो गया कि अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दों को चाहे वह कम संख्या ही में क्यों न हों काफिरों पर चाहे उनकी

संख्या अधिक ही क्यों न हो, विजय प्रदान करता है। उस के परिणामों में से एक यह भी है कि मुसलमानों ने लड़ाई के गुण प्राप्त कर लिए तथा लड़ाई भिड़ाई, प्रहार करने, पीछे पलट कर पुनः वार करने, दुश्मन को घेरे में लेकर उसे शक्ति के कारणों और निरंतर सामना करने से वंचित कर देना।

अठ्ठाईसवीं सभा

उहुद की जंग

शव्वाल सन् ३ हिज्री में उहुद का युद्ध घटित हुआ। जब अल्लाह तआला ने बद्र के युद्ध में कुरैश के बड़े-बड़े लोगों को क़त्ल कर दिया और वो ऐसी मुसीबत में ग्रस्त हुए जैसी मुसीबत उन्हें कभी नहीं पहुँची थी, तो कुरैश ने इन्तिक़ाम लेना और अपनी खोई हुई साख और धाक को बहाल करने की इच्छा की। चुनांचे अबू सुफ़्यान ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के विरूद्ध लोगों को भड़काना और वरगलाना शुरू किया और फौज एकत्र करने लगा। उसने कुरैश और उनके हलीफ क़बाईल और अहाबीश को मिलाकर लग भग तीन हज़ार लोग एकत्र कर लिए, और अपनी औरतों को भी साथ लाए ताकि वह मैदान छोड़ कर भागने का विचार न करें बल्कि उनका बचाव और सहयोग करें। फिर उन को लेकर मदीना आया और उहुद पहाड़ के निकट पड़ाव किया।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों से मशवरा किया कि आया आप उनके मुक़ाबिले

के लिए बाहर निकलें या मदीना ही में ठहरे रहें? आप की राय यह थी कि मदीना से बाहर न निकलें, बल्कि मदीना ही में क़िला बन्द हो जाएं। अगर वह मदीना में प्रवेश करते हैं तो मुसलमान उन से लड़ाई करें गे। किन्तु प्रतिष्ठित सहाबा की एक जमाअत ने मदीना से बाहर निकलने का मशवरा दिया। चुनांचे अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हज़ार सहाबा के साथ बाहर निकले। यह जुमा का दिन था। जब आप मदीना और उहुद के बीच पहुँचे तो मुनाफिक़ अब्दुल्लाह बिन उबै लग भग एक तिहाई लश्कर के साथ यह कह कर वापस लौट आया कि आप ने उसकी बात नहीं मानी और दूसरों की मान ली। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चलते रहे यहाँ तक कि उहुद पहाड़ की घाटी में पड़ाव किया और अपनी पीठ को उहुद की ओर कर लिया। आप ने लोगाों को लड़ाई करने से रोक दिया यहाँ तक कि आप उन्हें आदेश दें। जब सनीचर के दिन सुब्ह किया तो आप लड़ाई के लिए तैयार हो गए, आप के साथ सात सौ लोग थे जिन में पचास शहसवार थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीर अन्दाज़ों की जमाअत पर -जिन की संख्या ५० थी- अब्दुल्लाह बिन जुबैर को अमीर बनाया और उन को तथा उन के

साथियों को आदेश दिया कि वह अपनी जगह पर जमे रहें और उस से टलें नहीं, चाहे वह यह देखें कि चिड़ियों ने लश्कर को उचक लिया है। वह लोग लश्कर के पीछे थे। आप ने उन्हें आदेश दिया कि वो मुशरिकों पर तीर बरसाते रहें ताकि वह पीछे से मुसलमानों पर चढ़ाई न कर सकें।

लड़ाई आरम्भ हो गई और दिन के शुरू में मुसलमानों को काफिरों पर गलबा प्राप्त रहा। चुनांचे मुशरिकीन परास्त हो गए और पीठ फेर कर भागने लगे यहाँ तक कि अपनी औरतों के पास पहुँच गए। जब तीर अन्दाज़ों ने उनकी हार देखी तो उन्हों ने अपना वह मोरचा छोड़ दिया जिस की सुरक्षा करने का अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें आदेश दिया था और उन्हों ने कहाः ऐ क़ौम ! गनीमत... उनके अमीर ने उन्हें अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पैमान याद दिलाया, लेकिन उन्हों ने कान नहीं धरा और यह समझे कि अब मुशरिकीन पलट कर हमला नहीं कर सकते। चुनांचे वह मोरचे को खाली छोड़ कर माले-गनीमत समेटने के लिए चले गए। मुशरिकीन के शहवसवार पलटे और मोरचे को तीर अन्दाज़ों से खाली पाकर वहां पहुंच गए और उस पर क़ाबिज़ हो गए यहाँ

तक कि उनके दूसरे लोग भी आगए और मुसलमानों को घेरे में ले लिया। चुनांचे मुसलमानों में से कुछ लोगों को अल्लाह तआला ने शहादत से नवाज़ा। सहाबा में भगदड़ मच गई और मुशरिकीन अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुँच गए। उन्हों ने आप के चेहरे को घायल कर दिया और आप के दाहिने रुबाई दांतों को तोड़ दिया और आप के सिर के उपर ज़िरह को तोड़ दिया और आप पर पत्थर बरसाय यहाँ तक कि आप पहलू के बल गिर गए और एक गढ़े में गिर पड़े जिसे अबू आमिर फासिक़ ने मुसलमानों को फंसाने के लिए तैयार किया थे। चुनांचे अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप का हाथ पकड़ा और तलहा बिन उबैदुल्लाह ने आप को गोद में ले लिया। मुसअब बिन उमैर आप के समने शहीद कर दिए गए। आप ने झण्डा अली बिन अबी तालिब को दे दिया। खोद् की दो कड़िया आप के चेहरे मु घुस गईं जिन्हें अबू उबैदह बिन जर्राह ने अपने दांतों से खींच कर निकाला, और अबू सईद ख़ुदरी के बाप मालिक बिन सिनान ने आप के रुख्सार से निकलने वाले खून को चूस कर साफ किया।

मुशरिकों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घेर लिया और उनकी इच्छा उस चीज़ की थी जिस के बीच

अल्लाह तआला ने रूकावट डाल दी। चुनांचे आप के सामने लग भग दस मुसलमानों की एक टोली एकत्र हो गई और मुशरिकों से लड़ने लगी यहाँ तक कि उन्हों ने एक एक कर क अपनी जान निछावर कर दी। फिर तलहा बिन उबैदुल्लाह ने डट कर सामना किया यहाँ तक उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पीछे हटा दिया। तथा अबू दुजानह ने अपनी पीठ को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ढाल बना दिया, उन पर तीर की वर्षा होती थी लेकिन वह हिलते न थे। उस दिन क़तादह रज़ियल्लाहु अन्हु की आंख चोट खाकर चेहरे पर ढलक आई। वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए, आप ने उसे अपने हाथ से उसके स्थान पर लौटा दिया। इस के बाद उन की दोनों आंखों में यही आँख सब से अधिक सुन्दर लगती थी और उसकी बीनाई अधिक तेज़ थी।

तथा शैतान बड़े उंचे स्वर में चींखा कि : मुहम्मद क़त्ल कर दिए गए। इस का मुसलमानों के दिलों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और अधिकांश मुसलमान मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए। और अल्लाह का फैसिला जैसा होना था हुआ।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुसलमानों की ओर आए। खोद के नीचे से सब से पहले आप को पहचानने वाले कअब बिन मालिक थे, उन्हें अपने उंचे स्वर में आवाज़ लगाई : ऐ मुसलमानों की जमाअत ! खुश हो जाओ, ये अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। इस पर आप ने उन्हें संकेत किया कि चुप रहो। मुसलमान आप के पास एकत्र हो गए और आप के साथ वह लोग उस घाटी की ओर गए जहां आप ने पड़ाव किया था। उन में अबू बक्र, उमर, अली, हारिस बिन सिम्मह अनसारी आदि सम्मिलित थे। जब वह पहाड़ के दामन में पहुँच गए तो उबै बिन खलफ अपने अपने घोड़े पर सवार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के इरादे से आया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक भाला ले कर उसके गले में -हंसुली की हडडी- में मारा और वह परास्त हो कर अपनी क़ौम की ओर पलट आया, फिर वह मक्का लौटते हुए रास्ते में मर गया।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चेहरे से खून को साफ किया और घाव के कारण बैठ कर नमाज़ पढ़ी। तथा हनज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए, -उनकी अभी नयी नयी शादी हुई थी, जब जंग के लिए

आवाज़ लगाई गई तो- वह अपनी बीवी से हम आगोश थे। आवाज़ सुनते ही निकल पड़े और गुस्ल नहीं किया। चुनांचे फरिश्तों ने आप को गुस्ल दिया। मुसलमानों ने मुशरिकों के झण्डा वाहक को क़त्ल कर दिया। उम्मे अम्मारह नुसैबह बिन्त कअब माज़िनी ने भयानक लड़ाई लड़ी, उन्हें अम्र बिन क़मियह ने तलवार मार कर बुरी तरह घायल कर दिया।

मुसलमानों में से ७० से अधिक लोग शहीद किए गए, तथा मुशरिकों में से २३ लोग मारे गए। कुरैश ने मुसलमान शहीदों का बुरी तरक मुसला किया।

शहीद होने वालों में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हमज़ह रज़ियल्लाहु अन्हु भी हैं।[1]

---

[1] देखिए : ज़ादुल मआद ३-१९२, लुबाबुल खियार फी सीरतिल मुख्तार प० ६४

उन्तीसवीं सभा

उहुद की जंग से निष्कर्षित पाठ

इमाम इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने अपनी किताब 'ज़ादुल मआद' में उहुद के युद्ध से निष्कर्षित बहुत सारे अच्छे उद्देश्य और हिकमतें उल्लेख किया है, और वह यह हैं :

प्रथम : मुसलमानों को अवज्ञा, हिम्मत हार जाने और आपस में मतभेद करने के बुरे परिणाम से अवगत कराना, और यह कि उन्हे जो कष्ट पहुँची है वह इसी की नहूसत है। जैसाकि अल्लाह तआला का फर्मान है :

"अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उस के हुक्म से उन्हें काट रहे थे। यहाँ तक कि जब तुम हिम्मत हार गए और काम में झगड़ने लगे और अवज्ञा की, पश्चात इस के कि उस ने तुम्हारी चाहत की चीज़ तुम्हें दिखा दी। तुम में से कुछ दुनिया चाहते थे और कुछ की इच्छा आखिरत की थी। तो फिर उस ने तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम को परीक्षा में डाले। निःसन्देह उस ने तुम्हें क्षमा कर दिया।" (सूरत आल इम्रान३ : १५२**)**

अतः जब उन्हों ने पैग़म्बर के अवज्ञा -नाफर्मानी-, अपने मतभेद और हिम्मत हार जाने के सज़ा को भोग लिया, तो इस के पश्चात वह अधिक चौकन्ना और सावधान हो गए।

द्वितीय : अल्लाह तआला की अपने पैग़म्बरों और उनके मानने वालों के बारे में यह हिकमत और सुन्नत रही है कि कभी उन्हें ग़ल्बा और विजय प्राप्त होता है और कभी उनके उपर दूसरे लोगों को विजय प्राप्त होता है, किन्तु अन्तिम परिणाम -सफलता- उन्हीं के लिए होता है। क्योंकि यदि सदा वही लोग विजय प्राप्त करते रहें, तो मोमिनों के साथ ऐसे लोग सम्मिलित हो जाएं गे जो ईमान वाले नहीं हैं, इस प्रकार सच्चे और असत्य में अन्तर नहीं हो सके गा।

तीसरी : सच्चे मोमिन और झूठे मुनाफिक़ के बीच अन्तर स्पष्ट हो जाए। क्योंकि जब अल्लाह तआला ने बद्र के दिन मुसलमानों को उनके दुश्मनों पर ग़ालिब कर दिया और उनका चर्चा बढ़ गया तो प्रत्यक्ष रूप से उन के साथ इस्लाम में ऐसे लोग प्रवेश कर लिए जो प्रोक्ष रूप से उनके साथ नहीं थे। चुनांचे अल्लाह की हिकमत की चाहत यह हुई कि उस ने अपने बन्दों को एक परीक्षा में डाल दिया जिस ने मोमिन और मुनाफिक़ को अलग-अलग कर दिया। मुनाफिक़ों ने इस युद्ध में अपना

सिर निकाला और खुल कर वह बात कह दी जा वो छुपाए हुए थे, और मोमिनों को पता चल गया कि स्वयं उन के अपने घरों के अन्दर भी उनके दुश्मन मौजूद हैं। इसलिए मुसलमान उन से निमटने के लिए तैयार और उन से सावधान हो गए।

चौथा : अपने दोस्तों और अपने गिरोह की बन्दगी और उपासना को आसानी और परेशानी, उस चीज़ के अन्दर जिसे वह पसन्द करते हैं तथा उस चीज़ के अन्दर जिसे वह नापसन्द करते हैं, उनकी जीत और उनकी हार दोनों हालतों में परखना। यदि वह पसन्दीदगी और नापसन्दीदगी -प्रिय और अप्रिय- दोनों अवस्था में आज्ञापालन और उपासना पर जमे रहते हैं तो वास्तव में वो लोग अल्लाह के उपासक - बन्दे हैं।

पांचवाँ : यदि अल्लाह तआला सदा उनकी सहायता करता रहे, और हर स्थान पर उन्हें उनके दुश्मनों पर विजय प्रदान करता रहे और सदा उन्हें उनके दुश्मनों पर प्रभुत्ता और गलबा देता रहे, तो उनके दिलों मे गुरूर, घमण्ड और बड़ापन पैदा हो जाए गा। इसलिए बन्दों के सुधार के लिए आसानी और परेशानी, तंगी और खुशहाली दोनों चीज़ें होनी चाहिएं।

छठा : जब पराजय और हार के द्वारा उनकी परीक्षा की गई तो उन्हों ने इनकिसारी, खाकसारी और नम्रता का प्रदर्शन किया। जिस के कारणवश वह अल्लाह की सहायता और मदद के पात्र होगए।

सातवाँ : अल्लाह तआला ने अपने मोमिन बन्दों के लिए अपने सम्मान के घर -जन्नत- में ऐसे स्थान -पद- तैयार कर रखे हैं जहां तक उनके कार्य नहीं पहुँच सकते और वहां तक उन की पहुँच आज़माईश और परीक्षा के द्वारा ही हो सकती है। अतः उन के लिए परीक्षा और आज़माइश के ऐसे कारण पैदा कर दिए जिन के द्वारा वह उन पदों तक पहुँच जाएं।

आठवाँ : निरंतर आफियत -शान्ति- जीत और मालदारी से दिलों के अन्दर सरकशी और दुनिया की ओर झुकाव पैदा हो जाता है। यह ऐसी बीमारी है जो उसे अल्लाह और आखिरत की ओर उसकी यात्रा में संघर्ष करने में बाधा डाल देती है। इसलिए जब उस का स्वामी और पालनहार उस को सम्मान देना चाहता है तो उसे परीक्षा की बठ्ठी में डाल देता है जो उसकी उस बीमारी का उपचार बन जाती है। इस प्रकार वह परीक्षा एक डॉक्टर के समान हो जाती है जो बीमार को कड़वी कसैली दवा पिलाता है और उसकी कष्ट देने वाली नसों को काट

देता ताकि उस से बीमारी को निकाल बाहर करे। यदि अल्लाह तआला उसे वैसे ही छोड़ दे तो उस पर खाहिशात ग़ालिब आ जाए गी यहाँ तक कि उस के अन्दर वह नष्ट हो जाए गा।

नवां : शहादत अल्लाह के औलिया का सर्वोच्च पद है, और शहीद लोग अल्लाह के विशेष और निकटवर्ती बन्दे हैं। सिद्दीक़ियत के पद के बाद शहादत ही का पद है, और पद -शहादत- को प्राप्त करने का एक मात्र मार्ग यही है कि उसके लिए दुश्मनों के प्रभुत्ता और ग़ल्बा के कारण मुक़द्दर कर दिए जाएं।

दसवां : जब अल्लाह तआला अपने दुश्मनों को नष्ट करना और उन्हें मिटाना चाहता है तो उनके लिए ऐसे कारण पैदा कर देता है जिन के घटित होने से वह तबाही और बर्बादी के पात्र हो जाते हैं। कुफ्र के बाद उन में से सब से बड़ा कारण : अत्याचार, सरकशी, अल्लाह के दोस्तों को कष्ट पहुँचाने में अतिशयोक्ति करना, और उनका विरोध करना, उनसे लड़ाई करना और उन पर अधिकार जमाना। चुनांचे इस के द्वारा अल्लाह के औलिया गुनाहों और बुराईयों से पवित्र हो जाते हैं, और उसके दुश्मन अपनी तबाही और नष्ट होने के कारणों को और अधिक करने लगते हैं। (ज़ादुल मआद ३-२१८,२२२)

तीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की अपनी उम्मत के साथ नम्रता–1

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उपनी उम्मत के साथ आसानी और नरमी का बर्ताव करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दो चीज़ों में से किसी एक को चयन करने का अधिकार दिया जाता, तो उम्मत पर आसानी करते हुए और उस से तंगी और कष्ट को दूर करने की चाहत में, उन में से सब से अधिक आसान चीज़ को चयन करते थे। इसी लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

‘‘अल्लाह तआला ने मुझे सख्ती करने वाला और कष्ट में डालने वाला बनाकर नहीं भेजा है, बल्कि मुझे आसानी करने वाला शिक्षक बना कर भेजा है।’’ (मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान हैः **‘‘अल्लाह तआला विनम्र है और नरमी एंव नम्रता को पसन्द करता है, और नरमी पर जो देता है, वो कठोरता**

और हिंसा पर नहीं देता।'' (अबू दाउद ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''जिस चीज़ के अन्दर भी आसानी बरती जाती है तो वह उसे संवार देती है, और जिस चीज़ के अन्दर से आसानी और नम्रता खींच ली जाती है, वह उसे ऐबदार बना देती है।'' (मुस्लिम)

अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुण विशेषण नरमी और मेहरबानी करना बयान किए हैं। फरमाया :

''तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर आए हैं जो तुम्हारी ही जिन्स से हैं, जिन को तुम्हारे हानि की बात बहुत कठिन लगती है, जो तुम्हारे लाभ के बड़े इच्छुक रहते हैं। ईमान वालों के साथ बड़े ही दयालु और मेहरबान हैं।'' (सूरतुत तौबा :१२८)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी उम्मत पर आसानी का एक उदाहरण यह है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरा सर्वनाश हो गया।

आप ने पूछाः **“तुझे किस चीज़ ने सर्वनाश कर दिया?”**

उसने उत्तर दियाः मैं ने रमज़ान के दिन में रोज़े की हालत में अपनी पत्नी से सम्भोग कर लिया।

आप ने कहा :**“क्या तुम एक गुलाम (दास या दासी) मुक्त करने की ताक़त रखते हो?”**

उस ने कहा : नहीं।

आप ने कहा किः **“क्या तुम निरंतर दो महीने का रोज़ा रखने की शक्ति रखते हो?”**

उसने कहा : नहीं।

आप ने कहा : **“क्या तुम साठ मिस्कीनों को भोजन कराने का सामर्थ्य रखते हो?”**

उसने कहाः नहीं।

फिर आदमी बैठ गया। उसी बीच में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास खजूर की एक टोकरी आई, तो आप ﷺ ने उससे कहाः **“इसे लेजाकर दान कर दो।”**

उस व्यक्ति ने कहाः क्या अपने से भी अधिक दरिद्र पर दान कर दूँ ? अल्लाह की सौगन्ध ! मदीना की दोनों पहाड़ियों के बीच मुझसे अधिक निर्धन कोई घराना नहीं

है। इस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हंस पड़े यहाँ तक कि आप के केंचुली के दांत स्पष्ट हो गए, फिर आप ने फरमायाः **"इसे ले जाकर अपने घर वालों को खिला दो।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

इस गलती करने वाले आदमी के साथ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बरताव को देखिए जिस ने रमज़ान के दिन में अपनी पत्नि से संभोग कर लिया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके साथ लगातार आसानी करते रहे और धीरे-धीरे कठोर सज़ा से निम्न सज़ा की ओर आते रहे, यहाँ तक कि मामला इस हद तक पहुँच गया कि आप ने उसे चह चीज़ प्रदान कर दी जिस से वह अपनी गलती का कफफारा अदा कर सके, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी आवश्यकता और निर्धनता को देखते हुए उसे यह अनुमति दे दी वह उस दान को स्वयं ले ले और उसे अपने घर वालों को खिला दे। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह नम्रता कितना महान है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह शफ़्क़त और मेहरबानी कितना सुन्दर है।

यह मुआवियह बिन हकम अस-सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु कहत हैं : मैं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ रहा था कि क़ौम के एक आदमी को

छींक आ गई। इस पर मैं ने 'यर्-हमुकल्लाहु' -अल्लाह तुम पर मेहरबानी करे- कह दिया। तो लोग मुझे घूरने लगे। मैं ने कहाः हाय उसकी माँ उसे गुम पाए ! क्या बात है तुम लोग मुझे इस प्रकार देख रहे हो? तो वह लोग अपने हाथों को अपनी रानों पर मारने लगे, जब मैं ने देखा कि वह मुझे चुप कर रहे हैं तो मैं चुप हो गया। जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ चुके, तो मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों, मैं ने आप से पहले न आप के बाद आप से बेहतर शिक्षा देन वाला कोई शिक्षक नहीं देखा, अल्लाह की क़सम ! आप ने न तो मुझे झिड़का -डांटा-, न मुझे मारा और न मुझे बुरा भला कहा, आप ने फरमाया : **''नमाज़ के अन्दर लोगों की बात चीत में से कोई भी चीज़ उचित नहीं है, इस मे केवल तस्बीह, तकबीर और कुर्आन का पाठ करने योग्य है।''** (मुस्लिम)

इमान नववी कहते हैं : इस हदीस से पता चला कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कितने महान आचार के मालिक थे, जिसकी गवाही अल्लाह तआला ने दी है। तथा आप जाहिल और अनजाने के साथ नरमी, आसानी और मेहरबानी से पेश आते थे। तथा इस से यह पाठ मिलता है कि जाहिल और नासमझ

के साथ आसानी का बरताव करने, उसे अच्छी तरह शिक्षा देने, उस के साथ नरमी और शफक़त करने और ठीक बात को उसकी समझ के निकट करने में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यवहार और आचारण से अपने आप को सुसज्जित करना चाहिए।

उम्मत के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नरमी और आसानी में से यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने निरंतर रोज़ा रखने से रोका है, इस डर से कि कहीं वह लोगों पर अनिवार्य न कर दी जाए।

इसी प्रकार उम्मत के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नरमी का एक प्रदर्शन यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन या अधिक रातें मस्जिद में तरावीह की नमाज़ पढ़ाई, यहाँ तक कि आप के पीछे एक बड़ी जमाअत एकत्र हो गई। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस के बाद लोगों को तरावीह की नमाज़ पढ़ाने के लिए नहीं निकले, इस डर से कि कहीं यह नमाज़ लोगों पर अनिवार्य न कर दी जाए।

तथा उम्मत के साथ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आसानी में से यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम मस्जिद में प्रवेश किए तो देखा कि दो खम्बों के बीच एक रस्सी बंधी हुई है। आप ने पूछा : **''यह रस्सी कैसी है?''** लोगों ने कहा : यह ज़ैनब की रस्सी है, जब उन्हें सुस्ती और कोताही का अनुभव होता है तो उस से लटक जाती हैं। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **''इसे खोल दो, तुम्हें चाहिए कि चुस्ती की हालत में नमाज़ पढ़ो, जब सुस्ती पैदा हो तो बैठ जाओ।''** (बुखारी एंव मुस्लिम)

इकतीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की अपनी उम्मत के साथ नम्रता-2

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं किः हम मस्जिद में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बैठे हुए थे कि एक दीहाती आया और मस्जिद में खड़े होकर पेशाब करने लगा, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा ने कहा : रूक जा, रूक जा।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः “**उसे छोड़ दो, उसके पेशाब को न रोको।**” चुनांचे उन्हों ने उसे छोड़ दिया यहाँ तक कि उस ने पेशाब कर लिया।

फिर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे बुलाया और उस से कहाः “**ये मस्जिदें पेशाब और गंदगी की चीज़ों के लिए उचित नहीं हैं। ये तो अल्लाह को याद करने और क़ुर्आन की तिलावत करने के लिए हैं।**”

रावी कहते हैं : फिर आप ने एक आदमी को आदेश दिया और वह एक डोल पानी लेकर आया और उस पर उंडेल दिया। बुखारी एंव मुस्लिम

अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नम्रता के दर्शनों में से एक दर्शन यह भी है कि एक किशोर लड़का पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा : ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे ज़िना -व्यभिचार- की अनुमति दे दीजिए !!

यह सुन कर लोग उस पर टूट पड़े और उसे डांटने लगे और कहा : रूक जा, रूक जा। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा : **"उसे क़रीब करो।"** वह आप के क़रीब हो गया।

आप ने कहा : **"क्या तू इसे अपनी मां के लिए पसन्द करे गा?"**

उस ने कहा : नहीं, अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे।

आप ने फरमायाः **"लोग भी अपनी माताओं के लिए इसे पसन्द नहीं करते हैं। क्या तू इसे अपनी बेटी के लिए पसन्द करे गा?"**

उस ने कहा : अल्लाह की क़सम! नहीं, अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे।

आप ने फरमायाः **“इसी तरह लोग भी अपनी बेटियों के लिए इसे पसन्द नहीं करते हैं। क्या तू अपनी बहन के लिए इसे पसन्द करे गा?”**

उसने कहा : अल्लाह की क़सम! नहीं, अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे।

आप ने कहा : **“इसी प्रकार लोग भी अपनी बहनों के लिए इसे पसन्द नहीं करते। क्या तू अपनी फूफी के लिए इसे पसन्द करेगा?”**

उसने कहा : अल्लाह की क़सम! नहीं, अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे।

आप ने फरमाया : **“इसी तरह लोग भी अपनी फूफियों के लिए इसे पसन्द नहीं करते। क्या तू अपनी खाला के लिए इसे पसन्द करे गा?”**

उसने कहा : अल्लाह की क़सम! नहीं, अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे।

आप ने फरमायाः **“इसी प्रकार लोग भी अपनी खालाओं के लिए पसन्द नहीं करते हैं।”** फिर आप ने अपने दोनों

हाथों को उस के सीने पर रख फरमाया : **"ऐ अल्लाह! इस के गुनाह को क्षमा कर दे, और इस के दिल को पाक कर दे और इस की शरमगाह को पवित्र कर दे।"** इस के बाद वह नवजवान किसी चीज़ की ओर निगाह नहीं उठाता था। (मुस्नद अहमद)

इस विनम्र ढंग से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस नवजवान के दिल में रास्ता बना लिया और उसे इस प्रकार बना दिया कि वह जो ज़िना की अनुमति मांगने आया था, अब उसे बुरा समझने लगा। और यह उस नवजवान के सुधार, उसकी संयमता और पाकदामनी का कारण बन गया।

तथा उम्मत के साथ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नम्रता में से यह हदीस भी है जिसे इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने बयान किया है, वह कहते हैं : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुत्बा दे रहे थे कि आप ने एक आदमी को खड़े हुए देखा। आप ने उस के बारे में पूछा तो लोगों ने कहाः यह अबू इस्राईल है जिसने मन्नत मानी है कि वह धूप में खड़ा रहे गा, न तो बैठे गा, न छांव लेगा और न बोले गा, इस तरह वह रोज़ा रखे गा। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फरमाया : ''उसे आदेश दो कि वह बोले, छांव ले, बैठे और अपना रोज़ा पूरा करे। बुखारी

इसी प्रकार अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस है, वह कहते हैं : पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचना दी गई कि मैं कहता हूँ : अल्लाह की क़सम! जब तक मैं जीवित हूं अवश्य दिन भर रोज़ा रहूं गा और अवश्य रात भर नमाज़ पढ़ूं गा। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा : **''क्या तुम यह बात कहते हो?''** मैं ने उत्तर दिया : ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! आप पर मेरे माता पिता कुर्बान हों, मैं ने यह बात कही है। आप ने फरमाया : '' **तुम ऐसा करने की शक्ति नहीं रखते हो। अतः तुम रोज़ा रखो और रोज़ा तोड़ो भी, रात को सोओ और नमाज़ भी पढ़ो, तुम महीने में तीन दिन रोज़ा रखा करो, क्योंकि दस गुना बढ़ा दी जाती हैं और यह ज़माने भर रोज़ा रखने के समान है।''**

और एक हदीस के शब्द इस प्रकार हैं :

''क्या मुझे सूचना नहीं मिली है कि तुम दिन भर रोज़ा रखते हो और रात भर नमाज़ पढ़ते हो?'' मैं ने कहा : क्यों नहीं ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! आप ने फरमायाः **''तो**

तुम ऐसा न करो, रोज़ा रखो और रोज़ा तोड़ो भी -न भी रखो- रात को सोओ और उठ कर नमाज़ भी पढ़ो। क्योंकि तेरे शरीर का तेरे उपर हक़ है, तेरी आंखों का तेरे उपर हक़ है, तेरी बीवी का तेरे उपर हक़ है, तेरी ज़ियारत करने वालों -मेहमानों- का तेरे उपर हक़ है। तुम्हारे लिए प्रत्येक महीने में तीन दिन रोज़ा रखना काफी है। क्योंकि तुम्हारे लिए हर नेकी पर उसका दुस गुना अज्र लिखा जाता है। इस प्रकार यह ज़माने भर रोज़ा रखने के समान है।'' अब्दुल्लाह कहते हैं कि : मैं ने सख्ती की तो मुझ पर सख्ती कर दी गई। मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर ! मैं अपने अन्दर शक्ति पाता हूं। आप ने कहाः **''तुम अल्लाह के पैग़म्बर दाऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ा रखो, उस से अधिक न रखो।''** मैं ने कहा : दाऊद का रोज़ा कैसा था? आप ने कहा : **''आधे ज़माने भर''**। बड़े होने के बाद अब्दुल्लाह कहा करते थे : काश कि मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूख्सत को स्वीकार कर लिया होता। (बुखारी एंव मुस्लिम)

बत्तीसवीं सभा

अहज़ाब की जंग

दो कथनों में से अधिक उचित कथन के अनुसार शव्वाल ५ हिज्री में अहज़ाब की युद्ध घटित हुई, जो 'गज़वे-खन्दक़' के नाम से सुप्रसिद्ध है।

इस युद्ध का कारण यह था कि जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ४ हिज्री में बनू नज़ीर के यहूदियों को मदीना से निकाल दिया; क्योंकि उन्हों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने का प्रयास किया था, तो उनके सरदारों का एक समूह मक्का गया और उन्हों ने कुरैश को अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से युद्ध करने पर भड़काया और उकसाया, तथा अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरूद्ध उनकी सहायता करने का वादा किया। चुनांचे कुरैश ने उनकी बात मान ली और उन के साथ मिल कर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरूद्ध लड़ने के लिए तैयार हो गए। इस के बाद यहूदियों के सरदार गतफान और बनू सुलैम नामी क़बीलों के पास गए और उन्हें भी युद्ध के लिए उभारा और वह भी

तैयार हो गए। फिर इन यहूदी सरदारों ने अरब के अन्य क़बीलों में घूम-घूम कर उन्हें अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरूद्ध लड़ाई करने पर उभारा।

कुरैश अबू सुफ़्यान की अगुवाई में चार हज़ार योद्धाओं के साथ निकले, उनके साथ तीन सौ घुड़सवार और पन्द्रह सौ उंट थे। जब यह लश्कर मर्रुज़्ज़हरान पहुँचा तो इस के साथ 'बनू सुलैम' सात सौ लोगों के साथ आकर मिल गए। तथा इन के साथ 'बनू असद' भी निकले। इसी प्रकार 'फज़ारह' के लोग एक हज़ार आदमियों के साथ, 'अशजअ्' चार सौ लोगों के साथ और 'बनू मुर्रह' भी चार सौ लोगों के साथ निकले। इस तरह खन्दक़ की लड़ाई में समस्त क़बीलों से सम्मिलित होने वालों की संख्या दस हज़ार थी, इन्हें अहज़ाब -जत्थे- कहा जाता है।

जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का से उनके पहुँचने की सूचना मिली, आप ने लोगों को एकत्र किया। सलमान फरसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक खन्द़क़ -खाई- खोदने का प्रस्ताव दिया जो दुश्मन और मदीना के बीच आड़-रूकावट का काम दे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस का आदेश दिया और

मुसलमान जल्दी-जल्दी खन्दक़ खोदने में जुट गए। स्वयं पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इस काम में हाथ बटाया। सिलअ् नामी पहाड़ी के सामने यह खन्दक़ खोदा गया, इस प्राकर कि मुसलमनों ने पहाड़ी को अपनी पीठ के पीछे कर लिया और सामने खन्दक़ उनके और दुश्मनों के बीच था।

मुसलमानों ने खन्दक़ खोदने का काम छः दिनों में पूरा कर लिया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने तीन हज़ार सहाबा के साथ पहाड़ को अपने पीछे और खन्दक़ को अपनी सामने करके क़िला बन्द हो गए।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों और बच्चों के बारे में आदेश दिया और उन्हें मदीना की गढ़ियों में सुरक्षित कर दिया गया।

उधर -बनू नज़ीर का सरदार- हुयय् बिन अख़्तब बनू क़ुरैज़ह के पास आया। उनके और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच मुआहदह था। किन्तु यह दुष्ट उन्हें निरंतर उकसाता और भड़काता रहा यहाँ तक कि उन्हों ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किया हुआ मुआहदह तोड़ दिया और मुशरिकों के साथ मिल कर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम के विरूद्ध लड़ाई में सम्मिलित हो गए। मुसलमान बहुत कठिन परीक्षा में घिर गए और निफाक़ -पाखंड- ने सिर निकाला। बनू हारिसह के कुछ लोगों ने मदीना वापस जाने के लिए अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अनुमति मांगी और कहा :

"हमारे घर खाली पड़े हैं। हालांकि वह खाली नहीं पड़े थे। यह लोग केवल भागना चाहते हैं।" (सूरतुल अहज़ाब:१३)

तथा बनू सलिमह ने पस्पाई के लिए मन बना लिया, फिर अल्लाह तआला ने दोनों मिगरोहों को जमा दिया।

बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें खन्दक़ खोदने का आदेश दिया तो खुदाई के दौरान खन्दक़ के एक भाग में एक भारी कठोर चटान आड़े आ गई, जिस से कुदाल उचट जाती थी कुछ टूटता ही नहीं था। हम ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस की शिकायत की। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आए। जब उसे देखा तो कपड़ा उतार दिया और कुदाल ले कर कहा : **"बिस्मिल्लाह"** -अल्लाह के नाम से- फिर एक चोट मारी तो उस का एक तिहाई

भाग टूट गया, और आप ने कहा : **“अल्लाहु-अक्बर -अल्लाह सब से महान है- मुझे ‘शाम’ देश की कुंजियाँ दी गई हैं, अल्लाह की क़सम! मैं इस समय उसके लाल महलों को देख रहा हूं।”** फिर आप ने दूसरी चोट मारी तो उस का दूसरा तिहाई भाग काट गया और फरमायाः **“अल्लाहु अक्बर -अल्लाह सब से महान है- मुझे फारस दिया गया है, अल्लाह की क़सम मैं मदाइन का सफेद महल देख रहा हूँ।”** फिर आप ने तीसरी चोट मारी और कहा : “बिस्मिल्लाह” तो शेष चटान को भी काट दिया और फरमायाः **“अल्लाहु-अक्बर -अल्लाह सब से महान है- मुझे यमन की कुंजियां दी गई हैं। अल्लाह की क़सम! मैं इस समय अपने इस स्थान से सनूआ के फाटक देख रहा हूँ।”**

मुशरिकीन एक महीना तक अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का घेराव किए रहे और उन के बीच कोई लड़ाई पेश नहीं आई; क्योंकि अल्लाह तआला ने खन्दक़ के द्वारा उनके और मुसलमानों के बीच रूकावट पैदा कर दी।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी के विद्वानों -सीरत निगारों- का कहना है : खन्दक़ के दिन भय बहुत ही बढ़ गया, लोग हिम्मत हार बैठे, और बाल

बच्चों और धनों पर भय के बादल मंडलाने लगे। मुशरिकों ने खन्दक़ के एक तंग स्थान को ढूंढ़ कर उस में अपने घोड़े कुदा दिए और उनके एक समूह ने खन्दक़ पार कर लिया, जिन में अम्र बिन वुद्द भी था। वह द्वंद युद्ध के लिए ललकारने लगा जबकि वह सत्तर वर्ष का था। अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके चैलेंज को स्वीकार किया और उसे मौत के घाट पहुँचा दिया।

जब भोर हुआ तो उन्हों ने एक बड़ा जत्था एकत्र किया जिन में खालिद बिन वलीद भी थे। वह रात तक लड़ाई करते रहे। यहाँ तक कि उस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ न पढ़ सके। इस अवसर पर आप ने फरमाया : ''इन्हों ने हमें बीच वाली नमाज़ -समय पर- पढ़ने से व्यस्त रखा, अल्लाह इनके घरों और क़ब्रों को आग से भर दे।'' फिर अल्लाह तआला ने अपनी ओर से एक ऐसा उपाय किया जिस से दुश्मनों के मन टूट गए और उनके जत्थे बिखर गए। हुआ यह कि नुऐम बिन मसउद इस्लाम ले आए थे और मुशरिकीन तथा यहूद को इस का ज्ञान नहीं था। चुनांचे वह -बारी-बारी- क़ुरैश और बनू क़ुरैज़ह के पास गए और उनके उत्साह को भंग कर दिया। फिर एक तीव्र आंधी चली। अबू सुफ़यान ने अपने साथियों से कहा :

तुम किसी ठहरने योग्य स्थान पर नहीं हो, ऊँट और घोड़े नष्ट हो गए, बनू कुरैज़ह ने मतभेद कर लिया, आंधी से जो हमारा हाल हुआ है वह तुम्हारे सामने है, इस लिए वापस चलो, मैं तो वापस जा रहा हूँ।

इस युद्ध में तीन मुशरिक मारे गए और छः मुसलमान शहीद हुए।[१]

---

[1] देखिए : 'अल-वफा बि-अहवालिल-मुस्तफा' पृ० ७१३, ७१४। ज़ादुल मआद ३-२६९-२७५।

तैंतीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ का न्याय

इस्लाम संपूर्ण न्याय ले कर आया है, जैसाकि अल्लाह तआला के इस फर्मान में है :

"अल्लाह तआला न्याय का, भलाई का और रिश्तेदारों के साथ सद्व्यवहार का आदेश देता है।" (सूरतुन-नह्ल :९०)

तथा अल्लाह तआला का यह फर्मान है :

"किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें अन्याय करने पर न उभारे, न्याय किया करो जो परहेज़गारी -आत्म संयम- के अधिक निकट है।" (सूरतुल-माइदा :९०)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामान्य न्याय के उदाहरणों में से एक यह भी है कि बनू मख्ज़ूम की एक शरीफ महिला ने चोरी कर ली, तो क़ुरैश के लिए उसका मामला महत्वपूर्ण बन गया और उन्हों ने चाहा कि उस के उपर अनिवार्य धार्मिक दण्ड -चोरी के हद- को समाप्त करने के लिए पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास किसी को मध्यस्थ बनाएं। उन्हों ने आपस में कहा

कि इस विषय में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कौन बात करे गा? उन्हों ने कहा : अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चहेते उसामा बिन ज़ैद के अतिरिक्त कौन इस की हिम्मत कर सकता है। चुनांचे उन्हें लेकर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास लाए और उसामा बिन ज़ैद ने इस विषय में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात किया। इस पर अल्लाह के प़ग़म्बर का चेहरा बदल गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''क्या तुम अल्लाह के एक हद -धार्मिक दण्ड- के विषय में सिफारिश कर रहे हो? उसामा ने आप से अनुरोध किया : ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मेरे लिए अल्लाह से क्षमा याचना कर दीजिए।

जब शाम का समय हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भाषण देने के लिए खड़े हुए। आप ने अल्लाह तआला की उस की महिमा के योग्य प्रशंसा किया, फिर फरमाया : अल्लाह की प्रशंसा के बाद, तुम से पहले जो लोग थे वह इस कारण नष्ट कर दिए गए कि जब उन में कोई शरीफ चोरी करता तो उसे छोड़ देते, और जब उन में कोई कमज़ोर चोरी कर लेता तो उस पर दण्ड लागू करत थे। उस हस्ती की सौगन्ध! जिस के हाथ में

मेरी जान है, यदि मुहम्मद की बेटी फातिमा भी चोरी कर ले, तो मैं उस का हाथ अवश्य काट दूं गा।" बुखारी एंव मुस्लिम

यह है पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अदालत -न्याय- जो शरीफ और नीच, धन्वान और निर्धन और हाकिम और परजा में अन्तर नहीं करती है। सत्य और न्याय के तराजू में सब के सब बराबर हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के न्याय का एक नमूना यह भी है कि नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं : मेरे पिता ने मुझे एक उपहार दिया, तो मेरी मां अम्रा बिन्त रवाहा ने कहा : मैं इसे नहीं मानती यहाँ तक कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसकी गवाही दें। चुनांचे वह अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और कहा : मैं ने अम्रा बिन्त रवाहा से होने वाले अपने बेटे को एक उपहार दिया है, तो उस ने मुझे आदेश दिया है कि ऐ अल्लाह के रसूल मैं इस पर आप को गवाह बनाऊँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा : "**क्या तू ने अपने सभी बच्चो को ऐसा ही उपहार दिया है?**" उन्हों ने कहा : नहीं। आप ने कहा : "**अल्लह से डरो और अपने बच्चों के बीच न्याय से काम लो।**" चुनांचे बशीर

रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने उपहार को वापस लौटा लिया। बुखारी एंव मुस्लिम

एक रिवायत के शब्द इस प्रकार हैं कि आप ने पूछा : **"क्या उस के अतिरिक्त भी तुम्हारे बेटे हैं?"** उन्हों ने कहा : हां। आप ने कहा : **"तो क्या तुम ने उन सब को ऐसे ही उपहार दिया है?"** उन्हों ने कहा : नहीं। आप ने फरमाया : **"तो मैं अन्याय पर गवाह नहीं बनता।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

तथा यह घटना भी है कि जुल-खुवैसरह तमीमी आया, जबकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गनीमत के माल बांट रहे थे, तो उस ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल न्याय कीजिए! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **"तेरा बुरा हो! जब मैं ही न्याय नहीं करूं गा तो कौन न्याय करे गा? मैं असफल और घाटे में हूं यदि मैं न्याय न करूं।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की वह व्यक्तित्व है जिसे अल्लाह तआला ने प्रतिष्ठा प्रदान किया है, आप को विश्वस्त घोषित किया है और अपने वह्य -संदेश- पर आप को अमीन -विश्वसनीय- बनाया है, फिर आप ही

न्याय से कैसे काम नहीं लें गे? और आप ही न्याय कैसे नहीं करें गे? जबकि आप ही का फर्मान है:

“न्याय करने वाले अल्लाह के निकट नूर के मिंबरों पर हों गे, जो लोग अपने फैसिलों, बाल बच्चों और जिस चीज़ के भी वह ज़िम्मेदार होते हैं उन में न्याय करते हैं।” (मुस्लिम)

जहां तक बीवियों के बीच न्याय का संबन्ध है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस को संपूर्ण रूप से निभाते थे, इस प्रकार कि आप उनके बीच उन चीज़ों को जिन को बांटने के आप सामर्थ्य थे जैसे- घर और खर्च आदि, बराबरी के साथ बांटते थे, चाहे आप यात्रा में हों या घर पर। हर बीवी के पास एक रात गुज़ारते थे, आप के हाथ में जो कुछ होता उसे बराबरी के साथ हर एक पर खर्च करते थे और हर एक के लिए आप ने एक कमरा बनवाया। जब आप यात्रा करते तो उनके बीच कुरआ अन्दाज़ी करते थे और जिस के नाम का कुरआ निकलता उस के याथ यात्रा में निकलते थे। इन में से किसी चीज़ के अन्दर आप ने कोताही और कमी नहीं की, यहाँ तक कि उस बीमारी में भी नहीं जिस में आप की मृत्यु हुई। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आप की बीवियों में से हर एक के पास उनकी बारी

में ले जाया जाता था। जब आप को इस में कठिनाई होने लगी और उन्हें पता चल गया कि अब आप स्थायी रूप से आईशा रज़ियल्लाह अन्हा के घर ही में रहना पसन्द करते हैं तो उन्हों ने आप को अनुमति दे दी कि आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में ही आप बीमारी के दिन बिताएं -तीमार दारी हो-। चुनांचे आप उनके ही घर में रहे यहाँ तक कि आप की मृत्यु हो गई। इस न्याय के बावजूद जिस का आप ने अपनी बीवियों के साथ प्रदार्शन किया, अल्लाह तआला से छमा की प्रार्थना करते हुए कहते थे :

“ऐ अल्लाह! यह मेरी बांट है उस चीज़ के अन्दर जो मेरे नियन्त्रण में है।। अतः तू उस चीज़ के अन्दर मुझे दोषी न ठहरा जिस का तू नियंत्रण करता है और वह मेरे वश में नहीं है।” (अबू दाउद, त्रिमिज़ी) [१]

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक पत्नी के ऊपर दूसरी पत्नी को प्राथमिकता देते हुए उस की ओर झुक जाने से सावधान किया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

---

[1] अख्लाकुन्नबी फिल-कुरआन वस-सुन्नह ३-१२७१

‘‘जिस व्यक्ति के पास दो बीवियाँ हों और वह उन दोनों में से किसी एक की ओर झुक जाए, तो वह क़ियामत के दिन इस हाल में आए गा कि उस का पहलू झुका हुआ होगा।’’ (मुस्लिम)

चौंतीसवीं सभा

यहूद के षड़यंत्र और उनके प्रति पैग़म्बर ﷺ का रवैया

हम यह वर्णन कर चुके हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना में मौजूद यहूदियों के साथ संधि किया और उनके साथ एक दूसरे पर आक्रमण न करने का पारस्परिक मुहाअहदा किया। किन्तु उन्हों ने शीघ्र ही उस प्रतिज्ञा को भंग कर दिया और जिस अहद शिकनी, चालबाज़ी और षड़यंत्र रचने से वह कुख्यात थे, वही कार्य करने लगे।

बनू क़ैनुक़ाअ के यहूदियों के षड़यंत्रों में से एक यह है कि उन्हों ने बद्र के युद्ध में मुसलमानों के साथ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की व्यस्तता से उन्हों ने ग़लत फायदा उठाया और उन में से कुछ लोगों ने एक मुसलमान महिला से छेड़-छाड़ किया और लोगों के सामने बाज़ार में उसके शरीर से कपड़े को उघाड़ दिया। उस महिला ने शोर मचाया तो एक मुसलमान आदमी ने ताव में आकर उस यहूदी को क़त्ल कर दिया। यहूदी भी

उसके विरूद्ध एकत्र हो गए और उस मुसलमान को मार डाला। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र के युद्ध से वापस लौटे तो यहूदियों को बुलाया ताकि उनसे घटित होने वाले हंगामे और बलवा के बारे में पूछ ताछ करें तो उन्हों ने आप से बड़े कठोर शब्दों में बात चीत की। बल्कि उन्हों ने संधि पत्र वापस भेज दिया और लड़ाई के लिए तैयार हो गए। चुनांचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको घेर लिया। जब उन्हों ने देखा कि मुसलमानों से जंग करने की उनके अन्दर शक्ति नहीं है तो उन्हों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अनुरोध किया कि आप इस शर्त पर उनका रास्ता छोड़ दें कि उनके माल आप के होंगे और बच्चे और औरतें उनकी हों गीं। आप ने इसे स्वीकार कर लिया और उन्हें मदीना से बाहर खदेड़ दिया। उनके गढ़ियों से मुसलमानों को हथियार और अन्य बहुत से औज़ार प्राप्त हुए।

जहाँ तक बनू नज़ीर के यहूदियों का संबंध है, तो उन्हों ने प्रतिज्ञा भंग कर दिया और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हत्या करने का प्रयास किया। हिज्रत के चौथे साल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बनू नज़ीर के पास उन से एक दियत -खून बहा- के विषय में सहायता मांगने के लिए गए। -उन्हों ने कहा हम आप

की सहायता किए देते हैं- किन्तु वह दीवार के पीछे बैठ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हत्या करने का षड़यंत्र रचने लगे कि अम्र बिन जह्हाश चक्की को उपर ले जाए और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिर पर गिरा दे।

इधर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आसमान से इस की सूचना आ गई। आप तुरन्त उठे और मदीना की ओर चल पड़े।

फिर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें यह सज़ा दिया कि उन्हें मदीना से खैबर की ओर जिला वतन कर दिया। उन्हों ने छः सौ उंटों पर अपने सामान लादे और अपने हाथों से अपने घरों को ढा कर खैबर चले गए।

रहे बनू कुरैज़ा तो इनके संबंध में पीछे गुज़र चुका है कि इन्हों ने अहद शिकनी और खन्दक़ के युद्ध में मुशरिकों और जत्थों के साथ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरूद्ध लड़ने के लिए गठजोड़ कर लिया। जब अल्लाह तआला ने जत्थों के उत्साह को भंग कर दिया और उनके एकत्व को टुकड़े टुकड़े कर दिया और वह मैदान छोड़ कर भाग गए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम अपने तीन हज़ार साथियों के साथ बनी कुरैज़ा को -उन की खयानत की- सज़ा देने के लिए निकले और उनका घेराव कर लिया और उन्हें तंग कर दिया। उन्हों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुतालबा किया कि वह सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के फैसिले पर उतरना चाहते हैं। सअद ने उनके बारे में यह फैसिला किया कि उनके लड़ाई करने की शक्ति रखने वाले आदमी -मर्द- क़त्ल कर दिए जाएं, औरतों और बच्चों को बन्दी बना लिया जाए और उनके माल बांट दिए जाएं। चुनांचे उनके मर्दों के गरदन मार दिए गए, जबकि कुछ लोग इस आदेश से अलग कर दिए गए।

इस फैसिले को स्वयं यहूद ने चयन किया था। क्योंकि उन्हों ने मुतालबा किया था कि सअद बिन मुआज़ उन के बारे में फैसिला करें यह समझते हुए कि वह उनका पक्ष करें गे; क्योंकि औस के साथ उनके संबंध थे। तथा यहूद अपने बन्दियों को इस से भी अधिक सज़ा देते थे। तौरात में **(**संख्याः३१ः ६-१८**)** में इस प्रकार वर्णन हुआ हैः

“बनू इस्राईल ने मिदियान की औरतों और उनके बच्चों को बन्दी बना लिया, उनके समस्त चौपाए, मवेशी और सम्पत्ति लूट लिए, उनके समस्त नगरों को उनके घर-बार समेत और उनकी गढ़ियों को आग से जला दिया। मूसा

-अलैहिस्सलाम- ने क्रोधित हो कर कहा : क्या तुम ने हर मादा को जीवित छोड़ दिया? अब तुम प्रत्येक नर बच्चे को और इसी प्रकार हर उस स्त्री को जो किसी मर्द से संभोग कर चुकी हो क़त्ल कर दो। किन्तु वह मादा बच्चे जिनका किसी मर्द से संबंध न रहा हो उन्हें अपने लिए ज़िन्दा बाक़ी रखो।"

अल्लाह की पनाह मूसा अलैहिस्सलाम इस प्रकार सामूहिक सर्वनाश का आदेश नहीं दे सकते। किन्तु इन्हों ने इस प्रकार तौरात को परिवर्तित कर दिया और इस प्रकार बन्दियों को सज़ा दिया करते थे।[१]

---

[1] देखिए : 'रहमतुल-लिल आलमीन' पृ० १२५, १२६, लुबाबुल अख्यार पृ० ५६, ६७, ७३

पैंतीसवीं सभा

युद्ध का आदेश क्यो दिया गया?

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कोई तलवार नहीं थी जिस से आप लोगों की गर्दन मार देते थे ताकि लोगों को इस्लाम में प्रवेश करने पर विवश कर सकें। क़ुर्आन इस सिद्धान्त को बहुत की स्पष्ट रूप से नकारता है। अल्लाह तआला ने फरमाया :

"दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं है।" (सूरतुल बक़रा:२५६)

अर्थात किसी पर इस्लाम स्वीकारने के लिए जब्र नहीं किया जाए गा।

तथा फरमाया :

"तो क्या आप लोगों पर ज़बरदस्ती कर सकते हैं कि वह मोमिन ही हो जाएँ।" (सूरत यूनुस :९९)

तथा फरमाया :

"तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म है।" (सूरतुल काफिरून :६)

किन्तु इस का यह अर्थ नहीं है कि राष्ट्र भीतरी और बाहरी आक्रमणों के सामने हाथ बांधे खड़ा रहे। अतः अल्लाह तआला ने ईमान वालों -मुसलमानों- को इस बात की अनुमति प्रदान कर दिया कि वह अपनी रक्षा और बचाव करें और जितना उन पर अत्याचार हुआ है उसके अनुसार बिना आघात और अत्याचार के अपना समुचित अधिकार ले लें।

अल्लाह तआला ने फरमायाः

''जो तुम पर आक्रमण करे, तुम भी उस पर उसी के समान आक्रमण करो।'' (सूरतुल बक़रा २:१९४)

तथा फरमायाः

''अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं और अत्याचार न करो।'' (सूरतुल बक़रा २:१९०)

तथा फरमायाः

''यदि यह तुम से लड़ाई करें तो तुम भी इन्हें मारो।'' (सूरतुल बक़रा २:१९१)

इस से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में लड़ाई के वैध किए जाने का मूल उद्देश्य आत्म रक्षा और उम्मत को आन्तरिक और बाहरी साजिशों और आक्रमणों से

बचाना हैं। यदि हम इस्लाम में लड़ाई के इतिहास पर दृष्टि करें तो यह तथ्य प्रमाणित हो कर हमारे सामने आ जाए गा। क्योंकि जब मक्का वालों का अत्याचार बढ़ गया तो उन्हों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी हत्या का षड़यंत्र करके, अपने घर से निकलने पर विवश कर दिया। इस प्रकार वही लोग मुसलमानों पर आक्रमण का आरम्भ करने वाले थे कि उन्हों ने मुसलमानों को बिना किसी अधिकार के -अकारण- उनके घरों से निकाल दिया। चुनांचे हिज्रत के पश्चात अल्लाह तआला ने मुहाजिरीन को मुशरिकीन से लड़ाई करने की अनुमति प्रदान करते हुए सूरतुल हज्ज में फरमाया :

“ जिन -मुसलमानों- से -काफिर- जंग कर रहे हैं उन्हें भी मुक़ाबला करने की अनुमति दी जाती है क्योंकि वह मज़लूम हैं। निःसन्देह अल्लाह उनकी सहायता पर शक्तिवान है। ये वो लोग हैं जिन्हें अकारण अपने घरों से निकाला गया, केवल उनके इस कथन पर कि हमारा पालनहार केवल अल्लाह है।” (सूरतुल हज्ज २२:३६-४०)

इसी कारण पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शेष अरब को छोड़ कर केवल कुरैश से छेड़-छाड़ करते थे।

जब मक्का वालों के अतिरिक्त अन्य अरब मुशरिकीन भी मुसलमानों के विरूद्ध हो गए और दुशमनों के साथ मिल कर उनके विरूद्ध संयुक्त हो गए, तो अल्लाह तआला ने समस्त मुशरिकों से लड़ाई करने का आदेश दे दिया। जैसाकि सूरतुत-तौबा में अल्लाह तआला ने फरमायाः

"और तुम समस्त काफिरों से लड़ाई करो जैसे कि वह तुम सब से लड़ते हैं।" (सूरतुत तौबा ६:३६)

इस तरह हर मूर्तिपूजक से जिस के पास कोई आसमानी ग्रन्थ नहीं है, जिहाद करना सामान्य हो गया। और यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन के अनुरूप हैः **"मुझे आदेश दिया गया है कि लोगों से जिहाद करता रहूं यहाँ तक कि वह ला-इलाहा-इल्लल्लाह कह दें, यदि उन्हों ने इसे कह दिया तो उनके जान और माल की मुझ से सुरक्षा हो गई, किन्तु उस का अधिकार शेष रहे गा और उनका हिसाब अल्लाह पर है।"**

जब मुसलमानों ने यहूदियों की ओर से प्रतिज्ञा भंग करने और विश्वासघात करने का अनुभव किया, क्योंकि उन्हों ने मुशरिकों की मुसलमानों के विरूद्ध जंग में सहायता की, तो अल्लाह तआला ने सूरतुल अन्फाल की

निम्नलिकखत आयत के द्वारा उनसे भी लड़ाई करने का आदेश दिया :

“और यदि आप को किसी क़ौम के विश्वासघात का डर हो तो बराबरी की हालत में उनकी प्रतिज्ञा भंग कर दें, अल्लाह तआला विश्वासघात करने वालों को पसन्द नहीं करता।” (सूरतुल अन्फाल ८:५८)

उन से लड़ाई करना धार्मिक कर्तव्य है यहाँ तक कि वो इस्लाम को स्वीकार कर लें या अपमानित हो कर अपने हाथ से जिज़्या दें, ताकि मुसलमान को उनकी ओर से आश्वासन प्राप्त हो जाए और कोई भय न रहे।[१]

इसी प्रकार इसाईयों से भी आप ने लड़ाई का आरम्भ नहीं किया, शैखुल-इस्लाम इब्ने तैमिया कहते हैं :

“पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी ईसाई से लड़ाई नहीं की यहाँ तक कि आप ने हुदैबिया की संधि के पश्चात समस्त राजाओं और शासकों की ओर उन्हें इस्लाम का निमन्त्रण देने के लिए अपने सन्देश वाहक भेजे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें क़ैसर,

[1] नूरुल-यक़ीन प० ८४,८५

किस्रा, मक़ौक़िस, नजाशी और पूरब तथा शाम में अरब के बादशाहों के पास भेजा।

चुनांचे ईसाई आदि में से कुछ लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया, तो शाम के ईसाईयों ने इस्लाम स्वीकारने वालों में से कुछ अपने बड़े लोगों को क़त्ल कर दिया।

इस तरह ईसाईयों ने सर्वप्रथम मुसलमानों से जंग किया और उनमें जो मुसलमान हो गए थे उन्हें अकारण उन पर अत्याचार करते हुए क़त्ल कर दिया। अन्यथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सन्देश वाहकों को इस लिए भेजा था कि वह इच्छा पूर्वक लोगों को इस्लाम की ओर बुलाएं, न कि उन पर ज़बरदस्ती करें। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी को भी इस्लाम पर विवश नहीं किया।[१]

इस प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दुश्मनों से लड़ाई करना -जिहाद- निम्नलिखति सिद्धान्तों पर आधारित था :

१. कुरैश के मुशरिकों को हर्बी दुश्मन -योद्धा- समझना, क्योंकि उन्हों ने ही आक्रमण का आरम्भ

---

[१] क़ाईदा मुख्तसा-रह फी क़ितालिल-कुफ़्फार व मुहादना-तिहिम पृ० १३५, १३६

किया था। अतः मुसलमानों के लिए उन से युद्ध करना वैद्ध हो गया।

२. जब यहूद कि ओर से विश्वासघात और मुशरिकों का पक्ष देखा गया तो उन से युद्ध किया गया।

३. जब किसी अरब क़बीले ने मुसलमानों पर आक्रमण किया, या उन्हों ने क़ुरैश की सहायता की तो उन से लड़ाई की गई यहाँ तक कि उस ने इस्लाम को स्वीकार कर लिया।

४. अहले किताब में से जिस ने भी दुश्मनी का आरम्भ किया जैसे- ईसाई, तो उस से लड़ाई की गई यहाँ तक कि उस ने इस्लाम को स्वीकार कर लिया या जिज़्या देने लगा।

५. जो भी इस्लाम ले आया उस ने अपने जान और माल को सुरक्षित कर लिया, किन्तु उस का अधिकार शेष रहा। और इस्लाम अपने से पहले की चीज़ों को समाप्त कर देता है। [1]

---

[1] देखिए : नूरुल यक़ीन प० ८५

छत्तीसवीं सभा

हुदैबिया की संधि

६ हिज्री में, अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्रा के लिए निकलने को कहा, तो लोगों ने इस के लिए शीघ्रता की और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम १४०० आदमियों के साथ मदीना से रवाना हुए इस हाल में कि आप के साथ यात्री के हथियार अर्थातः मियान बन्द तलवार के अतिरिक्त कोई अन्य हथियार नहीं था। आप के सहाबा अपने साथ कुर्बानी के ऊँट भी ले गए। जब कुरैश को इसका पता चला तो उन्हों ने आप को बैतुल-हराम से रोकने के लिए जत्थे एकत्र कर लिए।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सलातुल-खौफ पढ़ी, फिर जब मक्का के निकट पहुँचे तो आप की ऊँटनी बैठ गई। तो मुसलमानों ने कहा : क़स्वा अड़ गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"वह अड़ी नहीं है बल्कि उसे उस अस्तित्व ने रोक रखा है जिस ने हाथी को रोक दिया था। अल्लाह की क़सम आज के दिन वह मुझ से जो भी मामला करें गे जिस में अल्लाह की हुर्मतों का सम्मान हो तों मैं उसे अवश्य स्वीकार कर लूँ गा।"

फिर आप ने अपनी ऊँटनी को डांटा तो वह उठ खड़ी हुई। फिर आप ने वापस पलट कर हुदैबिया के एक कम पानी वाले चश्में पर पड़ाव डाला। आप ने अपने तरकश से एक तीर निकाला और उसे उस चश्मे में गाड़ दिया। फिर तो चश्में से इस प्रकार पानी उबलने लगा कि लोगों ने कुंए से अपने हाथों से पानी भरा।

बुदैल बिन बरक़ा खुज़ाई ने वापस जा कर कुरैश को पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने के उद्देश्य और संधि की इच्छा की सूचना दी। फिर उन्हों ने उरवा बिन मसउद को भेजा। उस से भी आप ने इसी प्रकार बात की। तथा आप के सहाबा ने उसे ऐसी बातें दिखाईं जिन से पता चलता था कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किस प्रकार टूट कर प्यार और किस प्रकार आप के आदेशों का पालन करते हैं। उसने वापस जाकर जो कुछ देखा और सुना था कुरैश को उस से अवगत कराया। फिर उन्हों ने बनू किनाना के आदमी को भेजा

जिस का नाम हुलैस बिन अलक़्मह था। और उसके बाद मिकरज़ बिन हफ़्स को भेजा। अभी वह अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात ही कर रहा था कि सुहैल बिन अम्र आगए। उन को देख कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **"तुम्हारा मामला तुम्हारे लिए सहल -आसान- कर दिया गया।"**

फिर दोनों पक्षों के बीच संधि हो गई, हालांकि यदि मुसलमान उस समय अपने दुश्मनों का मुक़ाबला करते तो उन पर उन्हें सफलता मिलती, किन्तु उन्हों ने अल्लाह के घर की हुर्मत -पवित्रता- को सुरक्षित रखना चाहा। संधि के अंश इस प्रकार थे :

१. दोनों पक्षों के बीच दस साल तक जंग बन्द रहे गी।

२. इस अवधि में लोग शान्ति से रहें गे, कोई किसी पर हाथ नहीं उठाए गा।

३. पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस साल -मक्का में प्रवेश किए बिना- वापस चले जाएं गे, किन्तु अगले साल उन्हें मक्का आने का अवसर दिया जाए गा।

४. क़ुरैश में से जो भी आदमी - चाहे वह इस्लाम धर्म ही पर क्यों न हो - आपके पास जाता है तो आप उसे वापस कर देंगे। किन्तु यदि कोई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से कोई आदमी क़ुरैश के पास जाता है तो वह उसे नहीं लौटाएं गे।

५. क़ुरैश के अतिरिक्त अन्य क़बीले का कोई आदमी यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैमान में दाखिल होना चाहता है तो वह ऐसा कर सकता है तथा जो आदमी क़ुरैश के पैमान में सम्मिलित होना चाहता वह ऐसा करने के लिए स्वतन्त्र है।[१]

हुदैबिया की संधि के परिणाम

बहुत से मुसलमानों ने इस संधि का विरोध किया और उनका विचार यह था कि इसके खण्डों -दफआत- में

---

[1] देखिए : अल-वफा प० ७१६, लुबाबुल-खियार प० ८१-८३

मुसलमानों के साथ अत्याचार और पक्षपात है। किन्तु समय बीतने के साथ-साथ उन्हों ने इस के उचित परिणामों और लाभदायक प्रभावों को महसूस किया, जिन में से कुछ निम्नलिखित हैं :

१. क़ुरैश ने इस्लामी राज्य के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया। क्योंकि मुआहदा सदा दो बराबर के लोगों में होता है। इस स्वीकृति का अन्य क़बीलों के दिलों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

२. मुशरिकों और मुनाफ़िक़ों के दिलों में दबदबा और भय का प्रवेश करना, तथा बहुत से लोगों को इस्लाम के प्रभुत्व का विश्वास हो गया। इस का कुछ प्रदर्शन इस तरह प्रकाश में आया कि क़ुरैश के बहुत से दिग्गज लोगों ने इस्लाम स्वीकारने में शीघ्रता किया, जैसे- खालिद बिन वलीद और अम्र बिन आस।

३. इस संधि ने इस्लाम को फैलाने और लोगों को उस से परिचित कराने का अवसर प्रदान किया जिस के फलस्वरूप बहुत से क़बीले इस्लाम में प्रवेश किए।

४. मुसलमान कुरैश की ओर से निश्चिन्त हो गए और उन्हों ने अपने पूरे भार को यहूदियों और अन्य उन क़बीलों पर केन्द्रित कर दिया जो उनसे झड़प और छेड़-छाड़ किया करते थे। चुनांचे ख़ैबर का युद्ध हुदैबिया की संधि के बाद ही घटित हुआ।

५. संधि की बात-चीत ने कुरैश के हलीफों को मुसलमानों के मौक़िफ को समझने पर मजबूर कर दिया और वह उस की ओर झुकने लगे। चुनांचे हुलैस बिन अलक़मह ने जब मुसलमानों को तल्बिया पुकारते हुए देखा तो अपने साथियों के पास पलटा और कहा : मैं ने हदी के ऊँट देखे हैं जिनके गलों में क़लादे हैं और उन के कोहान चीरे हुए हैं। इस लिए मैं उचित नहीं समझता कि उन्हें बैतुल्लाह -खाना काबा- से रोका जाए।

६. हुदैबिया की संधि ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मूता के युद्ध की तैयारी करने का योग्या बना दिया। इस प्रकार यह इस्लामी दावत को एक अन्य ढंग से अरब द्वीप के बाहर तक पहुँचाने का एक नया क़दम था।

७. हुदैबिया की संधि ने फारस, रूम और क़िब्त के बादशाहों के पास उन्हें इस्लाम की दावत देने के लिए पत्र भेजने में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहायता की ।

८. हुदैबिया की संधि मक्का के विजय -फत्हे मक्का- का कारण और उस का प्रारम्भिका थी।[१]

[1] अस्सीरतुन-नबवियूया, अस्सलाबकी, प० ६८३-६८४

सैंतीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की वफ़ा-शिआरी

इस्लाम वफादारी, प्रतिज्ञा पालन और अहद व पैमान, मुआहदों और दस्तावोज़ों के सम्मान करने का धर्म है। अल्लाह तआला ने फरमाया :

"ऐ ईमान वालो ! अहद व पैमान पूरे करो।" (सूरतुल माईदा ५:१)

तथा फरमाया :

"और वादे पूरे करो, क्योंकि वादों के बारे में पूछ-गछ होगी।" (सूरतुल इस्रा १७:३४)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

"जो अल्लाह के अहद व पैमान -प्रतिज्ञा- को पूरा करते हैं, और वचन को नहीं तोड़ते।" (सूरतुर-रअ्द १३:२०)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"जिस आदमी के और किसी क़ौम के बीच कोई अहद व पैगमान है, तो वो उस प्रतिज्ञा को भंग न करे और न ही उसे मज़बूत करे यहाँ तक कि उस की अवधि पूरी हो

जाए, या बराबरी के साथ उनके अहद व पैमान को समाप्त कर दें।'' अर्थात् उन्हें सूचित कर दें कि हमारे तुम्हारे बीच जो अहद व पैमान था अब वह समाप्त होता है। (अबू दाउद और त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है।)

तथा जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास झूठे मुसैलमा के दो संदेश लाने वाले दूत आए और उन को जो बात-चीत करनी थी, किए। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **''यदि यह बात न होती कि संदेश लाने वाले -हरकारे- क़त्ल नहीं किए जाते, तो मैं तुम दोनों की गर्दनें उड़ा देता।''** यहाँ से आप की यह सुन्नत चल पड़ी कि किसी पैग़ाम लाने वाले को क़त्ल न किया जाए।'' (इसे अबू दाउद ने रिवायत किया है)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुफ्फार के साथ प्रतिज्ञा पालन के उदाहरणों में से एक हुदैबिया का घटना भी है जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरैश के एलची -प्रतिनिधि- सुहैल बिन अम्र के साथ संधि के दफआत तय किए। इस संधि का एक खण्ड यह भी था कि इस संधि की अवधि में क़ुरैश का कोई आदमी जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आता है, तो आप उसे उन की ओर लौटा दें गे, चाहे वह

मुसलमान ही क्यों न हो। अभी वह संधि के शेष दफआत को लिख ही रहे थे कि सुहैल बिन अम्र के बेटे अबू-जन्दल बेड़ियों में जकड़े हुए आ गए। वह मक्का के निचले हिस्से से निकल कर आए थे। उन्हों ने अपने आप को मुसलमानों के बीच डाल दिया। यह देख कर अबू-जन्दल के बाप सुहैल ने कहाः ऐ मुहम्मद! यह पहला व्यक्ति है जिस के बारे में मैं आप से मामला करता हूँ कि आप इसे वापस कर दें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः **''हम ने अभी तक संधि को अन्तिम रूप नहीं दिया है।''** उस ने कहा : तब मैं आप से किसी चीज़ पर कदापि सुलूह नहीं करूं गा। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहाः **''इसको मेरे लिए छोड़ दो।''** उसने कहाः मैं इसे आप के लिए नहीं छोड़ सकता। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने कहाः **''नहीं, इतना तो कर ही दो''**। उसने कहाः मैं ऐसा नहीं कर सकता। अबु-जन्दल को इसका एहसास होगया, तो उन्हों ने मुसलमानों को उकसाते (जोश दिलाते) हुऐ ज़ोर-ज़ोर से कहाः ''मुसलमानो! क्या मैं मुश्रिकों की ओर वापस कर दिया जाऊँ कि वह मुझे धर्म त्यागने के लिए यातना दें, हालांकि मैं मुसलमान होकर आया हूँ?''

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू-जन्दल से फरमायाः

"अबू-जन्दल! धीरज से काम लो और इस पर अल्लाह से पुण्य (अज्र व सवाब) की आशा रखो। अल्लाह तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ जो अन्य कमज़ोर मुसलमान हैं उन सब के लिए कुशादगी (आसानी) और कोई रास्ता अवश्य पैदा करेगा। हम ने इन लोगों से संधि कर ली है और हमारे और इनके बीच अह्द व पैमान (प्रतिज्ञा) लागू हो चुका है और हम प्रतिज्ञा भंग (अहद शिकनी) नहीं कर सकते।" (मुसनद अहमद)

फिर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वापस तश्रीफ ले आए, तो क़ुरैश के हलीफ सक़ीफ का **'अबू-बसीर'** नामी एक आदमी मुसलमान हो कर आ गया, तो क़ुरैश ने उसको वापस लेने के लिए दो आदमियों को भेजा। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया की संधि का पालन करते हुए अबू-बसीर को उन दोनों आदमियों के हवाले कर दिया।

यह घटना पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परिपूर्ण वफादारी -प्रतिज्ञा पालन- और अहद व पैमान और दस्तावेज़ का सम्मान करने का प्रमाण है, यहाँ तक

कि यदि प्रत्यक्ष रूप से उस मुआहदे के अन्दर मुसलमानों के अधिकार के साथ अन्याय ही क्यों न हो।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुफ्फार के साथ प्रतिज्ञा पालन के उदाहरणों में से यह घटना भी है जिसे बरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है कि जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्रा का इरादा किया तो मक्का वालों के पास मक्का में दाखिल होने के लिए अनुमति मांगने के लिए भेजा, तो उन्हों ने यह शर्त लगाई कि आप मक्का में केवल तीन दिन ठहरें गे, अपनी तलवारों को मियान बन्द रखें गे और उन में से किसी को इस्लाम की दावत नहीं दें गे।

अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके बीच संधि के शराईत लिखना शुरू किए, तो उन्हों ने लिखा : यह वो बात है जिस पर अल्लाह के रसूल मुहम्मद ने मुसालहत की। इस पर उन लोगों ने कहा : यदि हम जानते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो आप को रोकते नहीं, बल्कि आप का अनुसरण करते। किन्तु आप इस प्रकार लिखवाएं: यह वो बात है जिस पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने मुसालहत की। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : **“मैं –अल्लाह की क़सम– मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ और मैं –अल्लाह की क़सम– अल्लाह का रसूल हूँ।”** फिर

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि ‘‘रसूलुल्लाह’’ का शब्द मिटा दें। तो अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : अल्लाह की क़सम! मैं कभी भी नहीं मिटा सकता।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा : **‘‘मुझे दिखाओ।’’** चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे स्वयं अपने हाथ से मिटा दिया।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में प्रवेश किए और तीन दिन बीत गए, तो कुरैश के लोग अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और कहा कि अपने साथी से कहो कि अब वापस जाएं। अली रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस का चर्चा किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहाः **‘‘ठीक है।’’** चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहां से प्रस्थान कर गए।

इस से ज्ञात हुआ कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो वादा किया था उसे पूरा किया और तीन रातों से अधिक नहीं ठहरे।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गद्‌दारी, प्रतिज्ञा भंग और विश्वास घात से सावधान करते हुए फरमायाः

“जिस ने किसी आदमी को अपने उपर अमान प्रदान किया, फिर उस की हत्या कर दी तो मैं हत्या करने वाले से बरी -अलग थलग- हूँ, चाहे वधित व्यक्ति काफिर ही क्यों न हो।” (इसे नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

“कोई क़ौम अहद शिकनी नहीं करती है मगर उन के बीच क़त्ल व ग़ारत जन्म लेती है।” (इसे हाकिम ने रिवायत किया है और मुस्लिम की शर्त पर सहीह कहा है, तथा अलबानी ने भी इसे सहीह कहा है)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खयानत -विश्वास घात- से अल्लाह तआला का शरण लिया है जो कि वफादारी का विपरीत है। आप ने फरमायाः “... **और मैं तेरे शरण में आता हूँ खयानत से, क्योंकि यह बुरा भेदी है।”** (इसे अबू दाउद और नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने हसन कहा है)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गदारी और खयानत -विश्वास घात - को हराम घोषित किया है। आप ने फरमाया :

“हर विश्वास घात करने वाले के लिए क़ियामत के दिन एक झण्डा हो गा जिस से वह पहचाना जाए गा।” (बुखारी एंव मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट कर दिया कि आप प्रतिज्ञा भंग नहीं करते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः **“मैं वादा नहीं तोड़ता।”** (इसे अहमद और अबू दाउद ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

अढ़तीसवीं सभा

महान विजय का युद्ध (मक्का का विजय)

हुदैबिया की संधि में यह बात गुज़र चुकी है कि बनू खुज़ाआ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहद व पैगमान में दाखिल हो गए और बनू बक्र कुरैश के अहद व पैमान में दाखिल हो गए। फिर हुआ यह कि बनू खुज़ाआ के एक आदमी ने बनू बक्र के एक आदमी को पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हज्व में गीत पढ़ते हुए सुना, तो उस की पिटाई कर के घायल कर दिया। चुनांचे उनके बीच बुराई भड़क उठी। बनू बक्र ने बनू खुज़ाआ से लड़ाई करने का मन बना लिया और कुरैश से मदद मांगा। उन्हों ने हथियारों और चौपायों से उनकी सहायता की। तथा उनके साथ कुरैश की एक जमाअत ने छुप कर लड़ाई की, जिस में सफ़्वान बिन उमैया, इकरमा बिन अबी जह्ल और सुहैल बिन अम्र सम्मिलित थे। बनू खुज़ाआ ने भाग कर हरम में पनाह ली। किन्तु बनू बक्र ने हरम का भी सम्मान नहीं किया

और हरम में भी बनू ख़ुज़ाआ से लड़ाई किया और उनके बीस से अधिक आदमियों को मार डाला।

इस तरह क़ुरैश ने संधि का वह मुआहदा जो उनके और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच था, तोड़ दिया; क्योंकि उन्हों ने बनू बक्र की ख़ुज़ाआ के खिलाफ मदद की। जब बनू ख़ुज़ाआ ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनके साथ जो कुछ किया गया था, उस से अवगत कराया तो आप ने फरमायाः ‘‘मैं अवश्य तुम्हें उस चीज़ से रोकूं गा जिस से मैं अपने आप को रोकता हूँ।

फिर क़ुरैश को अपने किए हुए पर पछतावा हुआ, जब पछताने का कोई लाभ नहीं। इस लिए उन्हों ने अबू सुफ्यान को हुदैबिया की संधि के नवीकरण और उसकी अवधि को बढ़ाने के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास भेजा। किन्तु पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस से मुंह फेर लिया औ उसे कोई जवाब नहीं दिया। फिर उस ने बड़े-बड़े सहाबा से सहायता मांगी ि कवह उसके और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच मध्यस्था निभाएं किन्तु सब ने इन्कार कर दिया। चुनांचे अबू सुफ्यान बिना किसी अहद व पैमान के असफल मक्का वापस लौट आया।

जब क़ुरैश ने मुसलमानों के साथ किए हुए अहद व पैमान को तोड़ दिया तो इस के जवाब में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का परास्त करने और उसके काफिरों को सबक़ सिखाने का संकल्प कर लिया।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का को विजय करने की तैयारी कर ली तो उसके मामले को गुप्त रखा; क्योंकि आप का इरादा यह था कि मुशरिकों के घरों में उनके सिर पर यकायक जा पहुँचें।

अललाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आस पास के अरब क़बीलों; असलम, ग़िफार, मुज़ैना, जुहैना, अशजअ् और सुलैम के लोगों को बुला भेजा, यहाँ तक कि मुसलमानों की संख्या दस हज़ार हो गई। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना पर अबू रुह्म अल-ग़िफारी को उत्तराधिकारी नियुक्त किया और १० रमज़ान, बुधवार के दिन रवाना हुए और क़दीद पहुँच कर झण्डे और फुरेरे बांधे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने के बारे में क़ुरैश को कोई सूचना नहीं हुई। उन्हों ने अबू सुफ्यान को खबरों का पता लगाने के लिए भेजा और कहाः अगर

मुहम्मद से तुम्हारी मुलाक़ात हो तो उन से हमारे लिए अमान ले लेना।

अबू सुफ़्यान, हकीम बिन हज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा -खबरों का पता लगाने के लिए निकले, जब उन्हों ने लश्कर को देखा तो भयभीत हो गए। अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबू सुफ़्यान की आवाज़ सुनी तो उसे पुकार कर कहा : ऐ अबू हन्ज़ला! उसने आप की आवाज़ पहचान ली और जवाब दिया। अब्बास रज़ियल्लाह अन्हु ने कहा : यह अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, दस हज़ार लोगों के साथ। चुनांचे अबू सुफ़्यान मुसलमान हो गया और अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु उसे अपनी पनाह में लेकर उसके दोनों साथियों समेत पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और वो दोनों भी मुसलमान हो गए।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि अबू सुफ़्यान को इस्लामी लश्कर के गुज़रने के रास्ते में ले जाकर रोक रखें; ताकि वह इस्लाम और मुसलमानों की शक्ति को अपनी आंखो से देख सके। अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मश्वरा दिया कि अबू सुफ़्यान को कोई एज़ाज़ -सम्मान- प्रदान करे दें;

क्योंकि वह एज़ाज़ पसन्द -सम्मान प्रिय- आदमी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **“जो अबू सुफ्यान के घर में दाखिल हो जाए उसे अमान है, जो मस्जिद -हराम- में दाखिल हो जाए उसे भी अमान है और जो अपना दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर ले उसे भी अमान है।”**

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़ाई करने से रोक दिया और अपने कमाण्डरों को आदेश दिया कि केवल उसी से लड़ाई करें जो उन से लड़ाई करे। खालिद बिन वलीद के अतिरिक्त कहीं भी मुसलमानों को मुक़ाबले -विरोध- का सामना नहीं हुआ। सफ्वान बिन उमैया, सुहैल बिन अम्र और इक्रमा बिन अबू जह्ल ने कुरैश की एक जमाअत के साथ खन्दमह में खालिद बिन वलीद से मुठभेड़ किया और उन को मक्का में दाखिल होने से रोकने का प्रयास किया, जिन्हों ने हथियार उठा लिया और तीर फेंके। चुनांचे खालिद बिन वलीद अपने साथियों में चींखे और उनसे लड़ाई की और मुशरिकों के तेरह आदमियों को मौत के घाट उतार दिया। फिर वह परास्त हो गए। मुसलमानों में से कर्ज़ बिन जाबिर और हुबैश बिन खालिद बिन रबीआ शहीद हुए।

हजून नामी स्थान पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए कुब्बा बनाया गया, आप मक्का में एक विजयी के रूप में प्रवेश किए। वह लोग चाहते और न चाहते हुए इस्लाम ले आए। आप ने अपनी ऊंटनी पर खाना काबा का तवाफ किया। उस समय काबा के पास ३६० मूर्तियाँ रखी हुई थीं। आप जब किसी मूर्ति से गुज़रते तो अपने हाथ में मौजूद एक छड़ी से उसकी ओर संकेत करते और फरमाते :

“हक़ -सत्य- आ गया और बातिल चला गया, बातिल जाने ही वाली चीज़ है।”

और मूर्ति मुंह के बल गिर जाती। सब से बड़ी मूर्ति हुबल की थी जो काबा की दिशा में थी।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक़ामे-इब्राहीम के पास आए और उसके पीछे दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। फिर लोगों की ओर निकले और फरमायाः

“ऐ क़ुरैश के लोगो! तुम्हारा क्या विचार है? मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूं?”

उन्हों ने जवाब दिया : अच्छा, आप करीम बाई हैं, और करीम भाई के बेटे हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा :

“जाओ तुम सब आज़ाद हो।”

चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें क्षमा कर दिया, जबकि अल्लाह तआला ने उन्हें आप के बस में कर दिया था। इस प्रकार आप ने अपराधियों को अपने बस में करने के बाद भी उन्हें क्षमा कर देने में एक अनुपम उदाहरण स्थापित कर दिया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफा पहाड़ी पर बैठ गए और लोगों से इस्लाम लाने और यथाशक्ति सुनने और आज्ञा पालन करने पर बैअत लिया, इस के बाद लोगों का तांता बन्ध गया।

यह विजय जुमा के दिन जब रमज़ान का महीना समाप्त होने में दस दिन रह गए थे, प्राप्त हुआ। इस के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का में पन्द्रह रात ठहरे रहे फिर हुनैन की ओर निकले और मक्का पर उत्ताब बिन उसैद को लोगों को नमाज़ पढ़ाने के लिए

नियुक्त किया और मुआज़ बिन जबल उन्हें सुन्नत और फ़िक़्ह -धर्म शास्त्र- की शिक्षा देते थे।[1]

[1] देखिए : अल-वफा प० ७१८-७२०, हाज़ल हबीब या मुहिब्ब प० २५४, सहीहुस-सीरह प० ४०७.

उन्तालीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की क्षमा

अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लोगों को क्षमा कर देने का आदेश दिया है। अल्लाह तआला ने फरमाया :

“अल्लाह की कृपा के कारण आप उन पर नरम दिल हैं और आप अगर कहीं बद-ज़ुबान और कठोर हृदय होते, तो ये सब आप के पास से छट जाते। अतः आप उन्हें क्षमा करें, उनके लिए क्षमा याचना करें और काम में उन से मश्वरा किया करें।” (सूरत आल इम्रान ३:१५९)

तथा दूसरे स्थान पर अल्लाह तआला ने फरमाया :

“अतः आप उन्हें माफ करते रहें और क्षमा देते रहें , अल्लाह तआला उपकार -एहसान करने वालों- को पसन्द करता है।” (सूरतुल माइदा ५:१३)

चुनांचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम माफी को पसन्द करते थे और क्षमा की ओर झुकाव रखते थे, और सज़ा देने का क़दम उसी समय उठाते थे जब वह ना गुज़ीर होजाता था। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

की जीवनी में माफी और क्षमा की घटनाएं अधिक हैं और लोग जानते हैं। उन्हीं में से वह घटना भी है जो अभी गुज़रा कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का पर महान विजय के बाद मक्का वालों को क्षमा कर दिया।

उन्हीं में से एक घटना यह भी है कि जिसे अबू हुरैरह रज़ियललाहु अन्हु ने वर्णन किया है, वह कहते हैं : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नज्द की और कुछ घुड़सवार भेजे। वो लोग बनू हनीफा के एक आदमी को पकड़ कर लाए जिसे 'सुमामह बिन उसाल' कहा जाता था। वह यमामा वालों का सरदार था। उसे मस्जिद नबवी के एक खम्बे से बांध दिया गया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके पास आए और उस से कहाः **"सुमामा तुम्हारे पास क्या है?"** उस ने उत्तर दियाः ऐ मुहम्मद! मेरे पास भलाई है; अगर आप मुझे क़त्ल कर देते हैं तो एक खून वाले को क़तल करें गे (अर्थात् वह खून नष्ट नहीं होगा, उस खून का बदला लिया जाए गा) और यदि मुझ पर एहसान करते हैं तो एक आभारी पर एहसान करें गे। और अगर आप माल चाहते हैं, तो मांगिए जितना चाहें मिले गा। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे छोड़ दिया। फिर दूसरे दिन

आप ने उस से कहा : **“सुमामा तुम्हारे पास क्या है?”** उस ने उत्तर दियाः वही जो मैं आप से कह चुका। अगर आप मुझे क़त्ल कर देते हैं तो एक खून वाले को क़त्ल करें गे। और यदि मुझ पर एहसान करते हैं तो एक आभारी पर एहसान करें गे। और अगर आप माल चाहते हैं, तो मांगिए जितना चाहें मिले गा। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे छोड़ दिया। यहाँ तक कि दूसरे दिन आप ने उस से कहा :**“सुमामा तुम्हारे पास क्या है?”** उस ने उत्तर दियाः वही जो मैं पहले आप से कह चुका; यदि आप मुझ पर एहसान करते हैं तो एक आभारी पर एहसान करें गे, और अगर आप मुझे क़त्ल कर देते हैं तो एक खून वाले को क़त्ल करें गे। और अगर आप माल चाहते हैं, तो मांगिए जितना चाहें मिले गा। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **“सुमामा को छोड़ दो।”** फिर मस्जिद के निकट एक खजूर के बाग में गए और स्नान किया। फिर मस्जिद में दाखिल हुए और कहा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्च पूज्य नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके ईश्दूत -पैग़म्बर- हैं; ऐ मुहम्मद ! अल्लाह की क़सम धरती पर मेरे निकट आप से अधिक नापसंदीदा चेहरा

किसी का नहीं था, अब आप का चेहरा मेरे निकट सब से अधिक पसंदीदा हो गया है, अल्लाह की क़सम मेरे निकट आप के दीन से अधिक नापसंदीदा दीन कोई और नहीं था, लेकिन अब आप का दीन मेरे निकट सब से पसंदीदा दीन बन गया है। अल्लाह की क़सम मेरे निकट आप के नगर से अधिक नापसंदीदा नगर कोई और नही था, लेकिन अब आप की नगरी मेरे निकट सब से अधिक पसंदीदा हो गई है। मैं उम्रा करने के लिए जा रहा था कि आप के घुड़सवारों ने मुझे पकड़ लिया अब आप का क्या विचार है?

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे खुशखबरी दी और उसे उम्रा करने का हुक्म दिया।

ज बवह मक्का पहुँचे तो किसी ने कहा : क्या तुम बेदीन हो गए? उन्हों ने कहाः नहीं, बल्कि मैं ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इस्लाम ले आया हूँ। अल्लाह की क़सम अब तुम्हारे पास यमामा से गेंहूं का एक दाना भी नहीं आए गा यहाँ तक कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस की अनुमति न दे दें। (बुखारी एंव मुस्लिम)

गौर कीजिए कि छमा किस प्रकार दिलों को बदल देता है, हालात को परिवर्तित कर देता है, सीनों को खोल देता है तथा कुफ्र के अंधेरे और शिर्क की गुमराहियों को मिटा देता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की छमा और माफी के उदाहरणों में से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस यहूदन औरत को छमा कर देना भी है जिस ने आप के लिए बकरी के गोश्त में ज़हर रखा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस में से खाया लेकिन आप को वह खुशगवार नहीं लगा और उसे थूक दिया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस औरत को बिश्र बिन बरा बिन मअ्रूर के बदले जिन्हों ने उस गोश्त से खा लिया था और ज़हर के प्रभाव से मर गए थे, क़िसासन क़त्ल कर दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के छमा और माफी का एक उदाहरण यह घटना भी है जिसे जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है कि वह अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नज्द की और एक युद्ध में निकले, जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस हुए तो वह भी आप के साथ वापस हुए। दूपहर -के आराम करने- के समय वह एक

बहुल्य कांटेदार वृक्षों वाली वादी में पहुँचे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वहीं पड़ाव किया और लोग वृक्षों के नीचे साया प्राप्त करने के लिए इधर-उधर फैल गए। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी एक वृक्ष के नीचे पड़ाव किया और उस पर अपनी तलवार लटका दी।

जाबिर कहते हैं : हम कुछ देर सोए थे कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुना कि आप हमें बुला रहे हैं। हम आप के पास आए तो देखा कि एक दीहाती आप के पास बैठा हुआ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ‘‘मैं सो रहा था कि इस ने मेरी तलवार खींच ली। मैं बेदार हुआ तो यह अपने हाथ में उसे सौंते हुए था। इस ने मुझ से कहा : आप को मुझ से कौन बचा सकता है? मैं ने कहा : ‘‘अल्लाह’’, अब वह यहाँ बैठा है।’’

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे कोई सज़ा नहीं दी। (बुखारी)

चालीसवीं सभा

दया के पैग़म्बर–3

बच्चों के साथ आप ﷺ की दया :

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से अधिक बच्चों पर दया करने वाले थे। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा को चुंबन किया। उस समय आप के पास अक्रा बिन हाबिस अत-तमीमी बैठे हुए थे। इस पर अक़रा ने कहा कि मेरे दस बच्चे हैं, परन्तु मैं ने उन में से किसी को चुंबन नहीं किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन की ओर देखा फिर फरमाया :

> **''जो दया नहीं करता उस पर दया नहीं की जाती।''** (बुखारी एंव मुस्लिम)

तथा आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है, वह कहती हैं : कुछ दीहाती लोग अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए तो उन्हों ने पूछाः क्या आप लोग अपने बच्चों को चुंबन करते हैं? लोगों ने उत्तर दियाः

हाँ। उन्हों ने कहा : लेकिन -अल्लाह की क़सम- हम चुंबन नहीं करते हैं। इस पर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों से दया को खींच लिया हो तो मैं क्या कर सकता।'' (बुखारी एंव मुस्लिम)

इन दोनों हदीसों में बच्चों के साथ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महान शफक़्त और दया का उल्लेख है, तथा इस बात पर भी तर्क है कि बच्चों को चुंबन करना दया और शफक़्त का प्रतीक है। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फर्मानः **''जो दया नहीं करता, उस पर दया नहीं की जाती''** में इस बात का प्रमाण है कि जैसे कार्य होता है वैसे ही बदला भी मिलता है (जैसी करनी वैसी भरनी)। अतः जिस ने बच्चों को रहमत व शफक़्त और दया से वंचित कर दिया अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन इन चीज़ों से वंचित कर देगा।

बच्चों पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दया का एक दर्शन यह भी है कि आप अपने बेटे इब्राहीम के पास आए, उस समय इब्राहीम की जान निकल रही थी

-वह जांकनी के आलम में थे। इस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आँखों से आँसू छलकने लगे और आप ने फरमायाः **“आँख आँसू बहाती है, दिल दुखी है और हम केवल वही बात कहते हैं जो अल्लाह को पसन्द है। ऐ इब्राहीम, हम तेरी जुदाई पर दुखी हैं।”** (सहीह बुख़ारी)

चुनांचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक ओर धैर्य -सब्र- करने, प्रसन्नता और अल्लाह के हुक्म के सामने सिर झुका देने में अपने पालनहार की उपासन का हक़ अदा किया। दूसरी ओर जुदाई पर शोक ग्रस्त होने, आंसू बहाने और शफक़त व रहमत और दया का प्रदर्शन करने में बेटे का हक़ अदा किया। यह अल्लाह तआला की बंदगी का सब से संपूर्ण रूप है।

इसी प्रकार जब आप के नवासे का देहान्त हो गया तो आप की आँखों से आँसू छलकने लगे। इस पर सअद बिन उबादा ने कहाः ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! यह क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **“यह वह दया और रहमत है जिसे अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में डाल दिया है, और अल्लाह तआला अपने बन्दों में से दया व मेहरबानी करने वालों पर ही दया करता है।”** (सहीह बुख़ारी एंव सहीह मुस्लिम)

बच्चों पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दया का एक रूप यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक यहूदी बीमार बच्चे को देखने के लिए गए जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा किया करता था। आप ने उस से कहाः **''तू ला-इलाहा-इल्लल्लाह पढ़ ले।''** बच्चे ने अपने बाप की ओर देखा। उसके बाप ने उस से कहाः अबुल-क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात मान ले। चुनांचे उस बच्चे ने **'ला-इलाहा-इल्लल्लाह'** पढ़ लिया -मुसलमान हो गया-। इस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **''सभी तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने उसे आग से बचा लिया।''** (सहीह बुखारी)

इसी में से यह भी है कि अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु का एक बच्चा, जिस का नाम उमैर था, उनके पास एक छोटी चिड़िया थी जिस से वह खेला करते थे। वह चिड़िया मर गई, तो बच्चा उस पर शोक ग्रस्त हो गया। चुनांचे दया के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस बच्चे की ग़मखारी करने और उस का दिल बहलाने के लिए उस के पास गए। आप ने उस से कहा : **''ऐ अबू उमैर! चिड़िया का क्या हुआ है।''** (बुखारी एंव मुस्लिम)

अब्दुल्लाह बिन शद्दाद अपने बाप से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने कहा : एक दिन इशा की नमाज़ में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास आए, आप हसन या हुसैन को उठाए हुए थे। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़े और उन को उतार कर नमाज़ के लिए तकबीर कही। आप ने अपनी नमाज़ के बीच एक लम्बा सज्दा किया। तो शद्दाद ने अपना सिर उठाया तो देखा कि वह बच्चा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पीठ पर था। जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी नमाज़ पूरी कर ली, तो लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! आप ने अपनी नमाज़ के बीच एक लम्बी सज्दह किया यहाँ तक कि हम ने यह गुमान किया कि कोई मामला पेश आ गया है, या आप पर वह्य उतर रही है। आप ने फरमायाः **''इन में सी कोई कारण नहीं था, बल्कि मेरा बेटा -नवासा- मेरे ऊपर सवार हो गया। इस लिए मैं ने नापसन्द किया कि उसे जल्दी से उतार दूं यहाँ तक कि वह अपनी आवश्यकता पूरी कर ले।''** (इसे नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

बच्चों पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दया के उदाहरणों में से यह भी है कि ''आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्सार की ज़ियारत के लिए जाते थे और उनके बच्चों को सलाम करते और उनके सिर पर हाथ फेरते थे।'' (इसे नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

छोटे बच्चो के साथा आप की शफक़त व मेहरबानी और दया में से यह बात भी है कि आप के पास छोटे बच्चों को लाया जाता था तो आप उन्हें आशीर्वाद देते और अपने मुंह से खजूर चबा कर उन्हें देते थे। (मुस्लिम)

आशीर्वाद का अर्थ यह है कि आप उन पर अपने पवित्र हाथ फेरते और उनके लिए दुआ करते।

इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमामा बिन्त ज़ैनब को गोद में ले कर नमाज़ पढ़ते थे। सज्दा करते समय उन्हें उतार देते और जब खड़े होते तो फिर उन्हें उठा लेते।

मेरे पालनहार की रहमतें और शान्ति अवतरति हो इस दानशील और दयालु पैग़म्बर पर।

इक्तालीसवीं सभा

दया के पैग़म्बर–4

गुलाम और नौकर पर पैग़म्बर ﷺ की दयाः

इस्लाम से पूर्व नौकरों और गुलामों का कोई अधिकार और सम्मान नहीं था। जब अल्लाह तआला ने संसार को इस्लाम के संदेश से सम्मानित किया, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन लोगों से जुल्म, अत्याचार और अन्याय को समाप्त किया, इन के लिए अधिकार स्थापित किए और इन पर अत्याचार करने वालों, या इन को छोटा और घटिया समझने वालो या इन को बुरा भला कहने और धिक्कारने वालों को कष्टप्रद अज़ाब की धमकी दी।

मअ्रूर बिन सुवैद कहते हैं : मैं ने अबू ज़र को देखा कि वह एक जोड़ा पहने हुए थे और उनका गुलाम भी उसी के समान जोड़ा पहने हुए था –अर्थात वह अपने नौकर और गुलाम को वैसा ही कपड़ा पहनाते थे जैसा स्वयं पहनते थे– तो मैं ने उन से इस के बारे में पूछा, उन्हों ने उत्तर दिया कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम के समय काल में एक आदमी से गाली गलोज की तो उसे उसकी मां का ताना दिया। वह आदमी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और आप से इस का वर्णन किया। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"तुम ऐसे आदमी हो जिसके अन्दर जाहिलियत के समय काल की आदत मौजूद है; तुम्हारे ये भाई तुम्हारे नौकर हैं, अल्लाह ने इन्हें तुम्हारे अधीन कर दिया है। अतः जिस का भाई उसके अधीन हो, तो वह जो खाना स्वयं खाता है उसी से उस को भी खिलाए, और जो कपड़ा वह स्वयं पहनता है उसी से उस को भी पहनाए, और तुम उन के उपर ऐसे काम का भार न डालो जो उनकी शक्ति से बाहर हो, अगर तुम ऐसा करते हो तो उस में उनकी सहायता करो।"** (बुखारी एंव मुस्लिम)

गौर कीजिए किस प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नौकर को भाई के समान घोषित किया है; ताकि मुसलमान के दिल में यह बात बस जाए कि अगर वह इस नौकर पर अत्याचार करता है, या उस के साथ दुर्व्यवहार करता है, या उसके माल खा जाता है, तो वह उस आदमी के समान है जो ऐसा व्यवहार अपने भाई के साथ करते है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

ने उनके साथ भलाई करने, उन से नम्रता से पेश आने, उनका सम्मान करने और जिस प्रकार आदमी स्वयं खाता और पहनता है उसी तरह उसे भी खिलाने और पहनाने में मुबालग़ा करने का आदेश दिया है। इसी लिए अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु अपने नौकर को वैसा ही जोड़ा पहनाते थे जैसा वह स्वयं पहनते थे।

इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हदीस में नौकर से ऐसे भारी काम कराने से रोका है जिस का वह सामर्थी न हो। इस का अर्थ यह हुआ कि उनके साथ आसानी की जाए और उन्हें विश्राम करने का पर्याप्त समय दिया जाए।

अबू मसूऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि मैं अपने नौकर को कोड़े से मार रहा था कि मैं ने अपने पीछे से एक आवाज़ सुनीः **“ऐ अबू मसऊद! याद रखो”**, किन्तु मैं क्रोध के कारण आवाज़ को समझ न सका। जब वह मेरे निकट आए तो वह अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे, चुनांचे आप फरमाते हैं:**“ऐ अबू मसऊद! याद रखो”**, वह कहते हैं कि मैं ने अपने हाथ से कोड़ा रख दिया। आप ने फरमायाः

"ऐ अबू मसऊद! याद रखो कि तुम जितनी शक्ति इस नौकर के ऊपर रखते हो, अल्लाह तआला तुम्हारे ऊपर इस से कहीं अधिक शक्ति रखता है।"

मैं ने कहाः इस के बाद मैं कभी भी किसी नौकर को नहीं मारूँ गा।

एक दूसरी रिवायत के शब्द यह हैं कि मैं ने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल ! यह अल्लाह के लिए आज़ाद है। इस पर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"सुनो, यदि तुम ऐसा न करते तो नरक की आग तुम को अवश्य पकड़ लेती।" (मुस्लिम)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

"जिस ने अपने किसी गुलाम को थप्पड़ मारा, या उसकी पिटाई की, तो उसका कफ्फारा यह है कि उसे आज़ाद कर दे।" (इसे अबू दाउद ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

चुनांचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही वह महा पुरूष हैं जिन्हों ने कमज़ोरो को मुक्ति दिलाई, गुलामों को

आज़ाद कराया, नौकरों के साथ न्याय किया और उन लोगों के समर्थन किए और उनके साथ खड़े हो गए जिन के दिल टूटे हुए थे, चुनांचे उनके घाव को भर दिया और उन के दिलों को चंगा कर दिया।

मुआविया बिन सुवैद बिन मुक़रिन से वर्णित है, वह कहते हैं : मैं ने अपने एक गुलाम को थप्पड़ मार दिया, तो मेरे पिता ने उसे और मुझे बुलाया और कहाः इस से बदला लो, क्योंकि हम बनी मुक़रिन के लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय काल में सात थे, और हमारे पास केवल एक नौकर था, तो उसे हम में से किसी आदमी ने मार दिया। तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"इसे आज़ाद कर दो।"** उन्हों ने कहाः हमारे पास इस के अतिरिक्त कोई अन्य नौकर नहीं है। आप ने फरमायाः **"तो यह उनकी सेवा करे यहाँ तक कि वह मालदार हो जांए, जब मालदार हो जाएं तो इसे आज़ाद कर दें।"** (मुस्लिम)

यह हैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, और यह है नौकरों और गुलामों के साथ आप का व्यवहार। कहां हैं वह लोग जो मनुष्य को इन परिस्थितियों से आज़ाद कराने का दावा करते हैं?

नौकर के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यवहार का अमली नमूना देखिए। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं :

> **“मैं न दस साल अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा की। अल्लाह की क़सम! आप ने कभी मुझे उफ तक नहीं कहा, और न ही किसी चीज़ के बारे में जिसे मैं ने किया हो यह कहा कि तू ने इसे क्यों किया, और न ही किसी चीज़ के बारे में जिसे मैं ने न किया हो आप ने यह कहाः तू ने ऐसा क्यों नहीं किया?”** (बुखारी एंव मुस्लिम)

एक रिवायत के शब्द यह हैं:

> **“आप ने कभी भी मेरे ऊपर किसी चीज़ में ऐब नहीं निकाला।”**

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नौकर से कहते थेः **“क्या तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है?”** (इसे अहमद ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: मदीना की लौंडी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ को पकड़ लेती थी और आप के हाथ को अपने हाथ से

अलग नहीं करती थी यहाँ तक कि मदीना में जहाँ भी चाहती अपनी ज़रूरत की पूर्ति के लिए आप को ले कर जाती।'' **(**इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।**)**

ब्यालीसवीं सभा

पैग़म्बर ﷺ की दानशीलता

जहाँ तक सखावत, दानशीलता, उदारता और नर्मी का संबंध है तो इन व्यवहारों में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई समकक्ष और बराबर का नहीं है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दानशीलता और सखावत उस के समस्त भेदों को सम्मिलित थी, जिन में से सब से महान अल्लाह के मार्ग में अपने प्राण की सखावत है, जैसा कि कहा गया है :

वह अपने जान को निछावर कर देता है अगर कंजूस उस में बखीली से काम लेता है। जान की सखावत, उदारता का पराकाष्ठ और उसकी चरम सीमा है।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के दुश्मनों से संघर्ष करने में अपनी जान को लगा देते थे। युद्ध के मैदान में आप दुश्मन से सब से निकट होते थे। केवल वीर आदमी ही आप के बराबर में होता था या आप के बगल में खड़ा होता था।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने ज्ञान की भी सखावत करते थे। अल्लाह तआला ने आप को जो ज्ञान प्रदान किया था आप अपने साथियों को उनकी शिक्षा देते थे, और उन को भलाई की शिक्षा देने के बड़े इच्छुक थे और शिक्षा देने में उन के साथ नर्मी और आसानी से काम लेते थे। और आप फरमाते थे :

''अल्लाह तआला ने मुझे सख्ती करने वाला और कष्ट में डालने वाला बनाकर नहीं भेजा है, बल्कि मुझे आसानी करने वाला शिक्षक बना कर भेजा है।'' (मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

''मैं तुम्हारे लिए बाप के समान हूं मैं तुम्हें शिक्षा देता हूं।'' (इसे अहमद और अबू दाउद ने रिवायत किया है और अलबानी ने हसन कहा है।)

जब कोई प्रशन करने वाला आप से कुछ पूछता था तो आप कभी कभार अधिक उत्तर देते थे। यह भी आप के ज्ञान की सखावत है। चुनांचे कुछ लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से समुद्र के पानी की पवित्रता के बारे में प्रश्न किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर दियाः **''उसका पानी पवित्र है,**

और उसका मुरदार हलाह है।'' (इसे अहमद और असहाबुस-सुनन ने रिवायत किया है)

जहाँ तक लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति और उनके हितों के लिए प्रयास के मैदान में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपने समय और विश्राम की सखावत का संबंध है तो इस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से अधिक दानशील थे। इस के बारे में केवल इतनी ही जान लेना पर्याप्त है कि मदीना की एक लौंडी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लेती और मदीना में अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आप को जहां चाहती ले जाती। (इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महान उदारता और दानशीलता का प्रमाण जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की वर्णित यह हदीस है, वह कहते हैं :

> **''ऐसा कभी नहीं हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी चीज़ के बारे में सवाल किया गया हो और आप ने नहीं कह दिया हो।''** (बुखारी एंव मुस्लिम)

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं किः इस्लाम लाने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो भी मांगा आप ने उसे प्रदान कर दिया। वह कहते हैं : आप के पास एक आदमी आया, तो आप ने उसे दो पहाड़ों के बीच चरने वाली बकरियाँ प्रदान कर दीं। वह आदमी अपनी क़ौम के पास वापस गया और कहाः ऐ क़ौम के लोगो, मुसलमान हो जाओ; क्योंकि मुहम्मद ऐसा दान देते हैं कि फिर फाक़ा का भय नहीं रह जाता।" (मुस्लिम)

अनस रज़ियल्लाहु कहते हैंः ऐसा होता था कि आदमी केवल दुनिया की लालच में मुसलमान हो जाता था, फिर शाम भी नहीं होती थी कि उस के निकट इस्लाम दुनिया और उसकी चीज़ों से अधिक महबूब और प्यारा हो जाता था।

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुनैन के युद्ध के पश्चात सफ़्वान बिन उमैया को तीन सौ उंट प्रदान किए। इस पर उस ने कहा : "अल्लाह की क़सम! पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे जो कुछ दिया, दिया जबकि आप मेरे निकट सब से नापसंदीदा आदमी थे। चुनांचे आप मुझे बराबर देते रहे यहाँ तक

कि आप मेरे निकट सब से महबूब और प्यारे हो गए।" मुस्लिम

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह कहते हैं: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सब से बढ़ कर सखावत का दरिया -अति दानी- थे, और आपकी सखावत का दरिया रमज़ान में उस समय सब से अधिक उफान पर होता था जब जिब्रील आप से मुलाक़ात करते थे, और जिब्रील आप से रमज़ान की हर रात में मुलाक़ात करते थे और क़ुरआन का दौर कराते थे, उस समय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खैर की सखावत में तेज़ हवा से भी आगे होत थे। (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

जुबैर बिन मुत्इम रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं: पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों के साथ हुनैन के युद्ध से लौट रहे थे कि कुछ दीहाती -बद्दू- आप से चिमट गए और मांगने लगे यहाँ तक कि उन्हों ने आप को पिछाड़ कर एक बबूल के पेड़ तक पहुँचा दिया और उन्हों ने आप की चादर को छीन लिया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए और कहने लगे: **"मेरी चादर लौटा दो, अल्लाह की क़सम! अगर मेरे पास इन झाड़ियों के बराबर ऊँट होते तो मैं उन्हें**

तुम्हारे बीच बांट देता, फिर तुम मुझे कंजूस, झूठा और कायर न पाते।'' (बुखारी)

सखावत और दानशीलता, पैग़म्बर बनाए जाने से पूर्व भी हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वभाव था। चुनांचे जब 'हिरा' नामी गुफा में फरिश्ता आप के उपर अवतरित हुआ और आप डरते-कांपते खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए, तो उन्हों ने -ढारस बंधाते हुए- कहाः कदापि नहीं, अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआला आप को कभी भी रूसवा नहीं करे गा; क्योंकि आप सिला रहमी करते हैं -रिश्तेदारी निभाते हैं-, कमज़ोरों का भार उठाते हैं, जिस के पास कुछ नहीं है उसे देते हैं, और सत्य के मार्ग में आने वाली कठिनाईयों पर लोगों की सहायता करते हैं।

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैः ''आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भविष्य कल के लिए कोई चीज़ बचाकर नहीं रखते थे।'' (इसे त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है।)

अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहाः अन्सार के कुछ लोगों ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ मांगा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें, जो कुछ उन्हों ने

मांगा था, दे दिया। फिर उन्हों ने मांगा, तो आप ने उन्हें, जो कुछ उन्हों ने मांगा था, दे दिया। फिर उन्हों ने आप से मांगा, तो आप ने उन्हें, जो कुछ उन्हों ने मांगा, दे दिया। यहाँ तक कि आप के पास जो कुछ था समाप्त हो गया तो आप ने फरमायाः **“जो कुछ मेरे पास है मैं उसे तुम से बचाकर कभी नहीं रखूं गा। और जो आत्म निर्भर होना चाहता है तो अल्लाह उसे आत्म निर्भर बना देता है। और जो बेनियाज़ होना चाहता है तो अल्लाह तआला उसे बेनियाज़ी प्रदान कर देता है। और जो धैर्य करना चाहता है अल्लाह तआला उसे धैर्य प्रदान कर देता है। और किसी आदमी को कोई ऐसी चीज़ नहीं प्रदान की गई जो उसके लिए सब्र -धैर्य- से अधिक श्रेष्ठ और विस्तृत हो।”** (इसे असहाबुस-सुनन ने रिवायत किया है)

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

* atazia75@gmail.com

विषय सूची

विषय		पृष्ठ
प्राक्कथन		३
१	मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुकूक़-१	८
२	मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुकूक़-२	१६
३	रमज़ान में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यवहार-१	२४
४	रमज़ान में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यवहार-२	३०
५	रमज़ान में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यवहार-३	३७
६	पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नसब नामा	४३

७	पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई और अमानत	४८
८	मुहम्मद ﷺ के बारे में ईश्दूतों की शुभसूचना	५४
९	दया के पैग़म्बर-१	६०
१०	दया के पैग़म्बर-२	६६
११	पैग़म्बर ﷺ की विशेषताएं	७३
१२	पैग़म्बर ﷺ का जन्म, दूध पिलाई, अल्लाह की ओर से आप की रक्षा	८१
१३	पैग़म्बर ﷺ का विवाह	८८
१४	पैग़म्बर ﷺ और महिला-१	९४
१५	पैग़म्बर ﷺ और महिला-२	१०१
१६	आप ﷺ का ईश्दूतत्व और अपनी क़ौम को दावत देना	१०८
१७	पैग़म्बर ﷺ का यातनाओं पर सब्र	११५

१८	पैग़म्बर ﷺ की अल्लाह की ओर से रक्षा	१२१
१९	पैग़म्बर ﷺ की महब्बत	१२८
२०	नबुव्वत का सब से महान प्रमाण	१३५
२१	पैग़म्बर ﷺ की उपासना	१४३
२२	इस्लाम के फैलाव का आरम्भ	१५१
२३	मदीना की ओर हिज्रत	१५७
२४	पैग़म्बर ﷺ का रहन सहन	१६३
२५	इस्लामी राज्य निर्माण के सिद्धान्त	१६९
२६	पैग़म्बर ﷺ की वीरता	१७६
२७	बद्र का महान युद्ध	१८२
२८	उहुद की जंग	१८९
२९	उहुद के युद्ध से निष्कर्षित फायदे	१९६
३०	पैग़म्बर ﷺ का अपनी उम्मत के साथ नम्रता-१	२०१

३१	पैग़म्बर ﷺ का अपनी उम्मत के साथ नम्रता-२	२०८
३२	अहज़ाब का युद्ध	२१४
३३	पैग़म्बर ﷺ का न्याय	२२१
३४	यहूद के षड़यंत्र और पैग़म्बर का रवैया	२२८
३५	जिहाद की वैद्धता	२३३
३६	हुदैबिया की संधि	२४०
३७	पैग़म्बर की वफादारी और प्रतिज्ञा पालन	२४७
३८	महान विजय का युद्ध	२५५
३९	पैग़म्बर ﷺ की क्षमा	२६३
४०	दया के पैग़म्बर-३	२६९
४१	दया के पैग़म्बर-४	२७५
४२	पैग़म्बर ﷺ की दानशीलता	२८२